



Himari Ganga



GOVERNMENT DEGREE COLLEGE DRANG AT NARLA

TEHSIL PADHAR, DISTRICT MANDI HP
www.gcdrang.in Phone No.: 01908-260645
Email: gcdrangnarla@gmail.com

FACULTY MEMBERS



ADMINISTRATIVE STAFF



HIMARI GANGA



Himari Ganga



College Magazine

2016-17 & 2017-18



**Govt. College Drang at Narla
Dist. Mandi (H.P.)**



जवाहर लाल ठाकुर



विधायक
द्रंग विधानसभा क्षेत्र

सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय महाविद्यालय द्रंग स्थित नारला अपने महाविद्यालय की पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है।

शिक्षण संस्थानों से प्रकाशित होने वाली पत्रिका युवाओं की सृजनात्मक शक्ति को उभारने का प्रथम मंच है जिसके माध्यम से वे अपने मन में उठने वाले भावों व विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान कर सकते हैं। इस तरह उनके विचार परिपक्व होंगे तथा वे भविष्य में जिम्मेवार व जागरूक नागरिक बनेंगे।

मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, स्टॉफ एवं सम्पादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

जवाहर लाल ठाकुर



Dr. Amarjeet K. Sharma
Director (Higher Education)



Directorate of Higher Education
Himachal Pradesh, Shimla

Message

It is matter of immense delight for me to know that your college is going to publish the college magazine.

College magazine is a very useful medium for young minds to express their bristling ideas and thoughts. It gives a chance to students, the budding writers, to get the attention of others through their creative and contemporary writings. It is an essential ingredient of college regular activities and documentation of such events. The true purpose of higher education is to open the horizons for the curious young minds and to reline and polish them in such a way that they become responsible citizens of our country.

I wish your college a great future and grand success to the college magazine. I also congratulate the Editor (s) of the magazine and wish everyone all the best in their ventures.

Jai Hind.

(Dr. Amarjeet K. Sharma)



From the Principal's Desk

It gives me an immense pleasure that the College Magazine "Himari Ganga" is being published. The credit of publishing the Magazine goes to the young & budding writers, poets, students & staff editors, who worked diligently and sincerely with dedication. I believe that the College Magazine not only provides an outlet to the latent creative potential of the students but also proudly showcases the milestones that College has achieved during the years. Almost a decade back Government Degree College Drang at Narla was established with a vision to build holistic & vibrant learning environment founded in value based academic principles.

The last academic session has been quite eventful. The institution made great strides in academics and other activities. This College has been included under section 2 (f) & 12 (b) of the UGC act 1956 as per the Notification No. F.NO.8-551/2017 (CPP-I/C) dated 15th December, 2017. The College Campus is now fully Wi-Fi enabled and under CCTV surveillance with well-equipped Conference hall, fully furnished Staff Room and office with proper networking facilities. Some of the civil work projects have either been completed or undergoing some progress during the year. The College is also now a constituent of the upcoming Vallabh Cluster University. The School of Humanities and School of Languages will be functional in the College in the coming years under Cluster University to cater the ever-changing needs of the students and achieve new milestones in the field of quality education.

For me the life has turned its wheel here in this institution. A decade back, I joined this institution as one of the teaching faculty member and now privileged to be the head of this institution at closing years of my academic career. I couldn't have imagined a better closing. The time is passing very fast & it reminds me of famous article on The Eternal Cycle, which I would like to share with you. "As you put on years, you see the generations disintegrated. First, you see your grandparents doing a disappearing act. You are then often too young to understand the true significance of this phenomenon of earthly existence. When you grow older, your parental generation starts vanishing, leaving you sad and disillusioned. This procession of life, thus, keeps moving relentlessly, forward into the shadowy unknown". Live the life like today is the last day of life. Live with joy, happiness & bring cheers to less fortunate people by your small selfless acts.

I bestow my blessings & best wishes on the occasion of publication of the College Magazine. Let this Magazine give a message to each student that we expect each one of them to be the role models of the society and custodian of those values which are enshrined in our ancient culture and heritage.

With best wishes

*Dr. Arvind Sehgal
Principal
Govt. Degree College Drang at Narla
District Mandi (H.P.)*



राज कुमार जमवाल
प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)



रा.महाविद्यालय द्रंग स्थित नारला
जिला मण्डी (हि.प्र.)

मुख्य सम्पादक की कलम से

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि सत्र 2016-17 & 2017-18 की महाविद्यालय पत्रिका 'हिमरी गंगा' का अंक आपके हाथों में पहुँच चुका है। मुझे स्वयं में 'हिमरी गंगा' के प्रकाशन से अत्याधिक प्रसन्नता व सन्तुष्टि प्राप्त हो रही है। जैसे देवताओं ने सागर मन्थन कर बहुमूल्य रत्न प्राप्त किये थे उसी प्रकार सम्पादक-मण्डल ने भी विद्यार्थियों की रचना-शक्ति को मथ कर रत्न रूपी बहुमूल्य रचनाएं आपके पठन हेतु प्रेषित की हैं।

आज जन सामान्य में साहित्य के प्रति रुचि कम हुई है क्योंकि वर्तमान युग में दृश्य-संसाधन आनन्द के साधनों के रूप में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। फिर भी एक वर्ग ऐसा है जो आज भी पूर्ण तन्मयता के साथ समाज को अपने अमूल्य विचारों से राह दिखाने के कार्य में जुटा हुआ है। इसलिए आज भी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से साहित्य सृजन हो रहा है। अतः महाविद्यालय से प्रकाशित होने वाली पत्रिका विद्यार्थियों की विचार-शक्ति एवं प्रतिभा को प्रकट करने का प्रथम मंच है। यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि विचारों की अभिव्यक्ति एक कला है जिससे जीवन मूल्यों के प्रति सजगता बनी रहती है।

साहित्य सृजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है किन्तु सृजन के लिए जीवन के विविध अनुभव, चुनौतियों, संघर्ष एवं पीड़ाओं का भुक्त भोगी होना आवश्यक है। इन सब के साथ रचनाकार की आन्तरिक अनुभूतियाँ, छोटी-छोटी संवेदनाएँ एवं मन की भिन्न-भिन्न स्थितियाँ जब कल्पना तत्व के साथ मूर्त रूप में साकार होंगी तभी रचना का निर्माण होगा। मधुमक्खियों की तरह अनुभव रूपी शहद को बूंद-बूंद एकत्र कर रचना रूपी शहद के छत्ते का निर्माण होता है। परन्तु खेद इस बात का है कि अनेक रचनाओं को तरोड़-मरोड़ कर अपने नाम करके अपना बनाने का घृणित कार्य आज भी निरन्तर जारी है, ठीक वैसे ही जैसे शहद के छत्ते को काट कर अपनी बोतल में भरने का कार्य होता है। सम्भवतः साहित्य जगत में इससे बड़ी डकैती कोई और नहीं हो सकती। इसकी न केवल भर्त्सना करनी चाहिए, अपितु स्वयं भी साहित्य के प्रति ईमानदार होना अनिवार्य है, तभी अच्छे साहित्य की रचना हो पाएगी।

अच्छी रचना के लिए साधुवाद देना मेरा साहित्यिक धर्म है तो अच्छे रचनाकार को उजागर करना साहित्यिक कर्तव्य। उत्कृष्ट रचनाओं के सृजन के लिए उत्कृष्ट रचनाओं को पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। अनेक लेखक इसी तरह उच्च-कोटि के साहित्यकार बने हैं।

पत्रिका के प्रकाशन में सम्पूर्ण सम्पादक-मण्डल का योगदान अत्यन्त श्लाघ्य है। रूसा के अन्तर्गत सत्र प्रणाली के शुरू होने से वर्ष में दो बार सत्रान्त परीक्षा, दो बार सत्र मध्यान्त परीक्षा, प्रदत्त कार्य व सतत् व्यापक मूल्यांकन का अतिरिक्त कार्यभार शिक्षक व विद्यार्थी दोनों वर्गों पर आ पड़ा है। जिसके कारण पाठ्येत्तर गतिविधियों के लिए समय निकाल पाना मुश्किल कार्य है। तमाम व्यस्तताओं के बावजूद सम्पादक-मण्डल के द्वारा विद्यार्थियों को रचना कार्य हेतु प्रेरित करना व प्राप्त रचनाओं का चुनाव करना चुनौती से कम नहीं था। एतद्दर्थ मैं उनका धन्यवादी हूँ। मुझे समय-समय पर प्राचार्य महोदय का मार्गदर्शन भी प्राप्त होता रहा है जिसके लिये मैं उनका आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त प्रकाशक, कम्प्यूटर डिजाईनर- श्री हरि सिंह एवं कार्यालय का भी मैं धन्यवाद करता हूँ, जिनके सहयोग से पत्रिका का प्रकाशन हो सका।

धन्यवाद ।

राज कुमार जमवाल
मुख्य-सम्पादक

Glimpses of Various Activities during Sessions 2016-17 & 2017-18

MUSICAL CONCERT-2017



ANDI (HIMACHAL PRADESH)



MUSICAL CONCERT-2017



STUDENT EDITORS



Babli
R.N. 15012
B.A. Sem-6th
Editor Hindi Section



Aashish
R.N. 15404
B.A. Sem-6th
Editor English Section



Kritika Thakur
R.N. 17310
B.Com. Sem-2nd
Editor Commerce Section



Banita Devi
R.N. 15006
B.A. Sem-6th
Editor Pahari Section



Neha Thakur
R.N. 15610
B.Sc. Sem-6th
Editor Science Section



Ankit
R.N. 15351
B.A. Sem-6th
Editor Planning Section



Reena Kumari
R.N. 15255
B.A. Sem-6th
Editor Planning Section

ANNUAL FUNCTION-2017



ANNUAL FUNCTION-2017



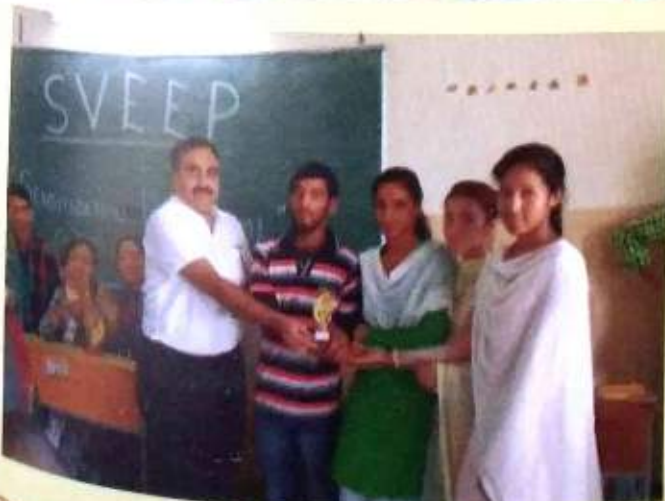
NSS CAMP 2017-18



NSS CAMP 2017-18



MEMORABLE MOMENTS OF DIFFERENT CELEBRATIONS



MEMORABLE MOMENTS OF DIFFERENT CELEBRATIONS





युवाओं को यह सदा स्मरण रखना चाहिए

जो मनुष्य अपना लक्ष्य जितना ऊपर रखता है, उतना ही उसका तीर ऊपर जाता है। मनुष्य का बड़ा अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर लगाए। सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में प्रत्येक स्थिति में अपनी राह आप निकालती है। वह वितवृत्ति है जो मनुष्य को सामान्यजनों से उच्च बनाती है। उसके जीवन को सार्थक और उद्देश्यपूर्ण करती है तथा उसे उत्तम संस्कारों के गुण ग्रहण करने के योग्य बनाती है। जिस मनुष्य की बुद्धि और चतुराई उसके दृढ़ हृदय के आश्रय पर स्थित रहती है वह जीवन और कर्म क्षेत्र में स्वयं और उत्तम रहता है और दूसरों को भी श्रेष्ठ और उत्तम बनाता है। युवाओं को सदा यह स्मरण रखना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है स्वयं के आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएं उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने से बड़ों का सम्मान करे तथा छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे ये बातें आत्ममर्यादा के लिए आवश्यक हैं।

राजकुमारी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15228

हम खुश कब होंगे?

किसी से भी पूछ लो कि वह खुश कब होगा तो वह प्रश्न को आगे टालता दिखता है। अगर बच्चों से पूछें कि क्या वे खुश हो वे कहेंगे नहीं, जब हम कॉलेज जाएंगे तब हम खुश होंगे। कॉलेज में पढ़ने वालों से पूछें कि क्या वे खुश हैं? तो वे कहेंगे—जब आत्मनिर्भर हो जाएंगे, तब हम खुश होंगे। आत्मनिर्भर होने पर जब पूछा जाता है कि क्या वे खुश हैं? उत्तर मिलता है—जब शादी हो जाएगी, तब हम खुश होंगे। शादी होने पर उनसे पूछा जाता है कि क्या वे खुश हैं? उत्तर मिलता है—शादी के ताल हो गए अभी तक कोई बच्चा नहीं है, संतान होने पर पूछा जाता है कि क्या वे खुश हैं? उत्तर मिलता है जैसे—जैसे बच्चे रहे हैं चिन्ता बढ़ रही है। दिन व्यतीत हो जाते हैं लेकिन वह दिन कभी भी नहीं आता जिस दिन हम खुश होंगे। अगर हम ई जीवित रहते हैं तो उसमें से 40 वर्ष सोने में खो देते हैं लेकिन हमारे पास खुश होने के लिए समय ही नहीं है। इसी प्रकार जीवन किसी न किसी दुःख या तैयारी में व्यतीत हो जाता है। अपनी अंतरात्मा को आनंदित करने की कोशिश करें। समाधान कि ईश्वर की हर रचना में प्रसन्नता को अनुभव करें। दूसरों के दुःखों को बांटने की कोशिश करें, खुशी अवश्य मिलेगी। हँसो हँसो, यही जीवन का सार है। जीवन को आनन्दमय बनाओ, खुशी बांटो—खुशी मिलेगी।

बबली
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15012

एक कविता हर माँ के नाम

घुटनों से रेंगते—रेंगते
कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छांव में,
जाने कब बड़ा हुआ।
काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूँ हर जगह

प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधा—साधा भोला—भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा
“माँ” ! मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

मोनिका कुमारी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 1115YYYT210011



HIMARI GANGA

राष्ट्र भाषा हिन्दी

जनगण में जो है प्यारी,
वह देवनागरी हिन्दी है हमारी,
भारत की जो है न्यारी
वह राष्ट्र भाषा है हमारी ।

सूर कबीर की यह है वाणी,
तुलसी की है कीर्ति निशानी,
मीरा जी की है तन्मयता
भूषण आदि की है कुर्बानी ।

यह तो है गागर में सागर
शृंगार है कहीं तो कहीं है वीर
करुणा से भर आती है आँखें,
मन हो जाता पढ़कर अधीर

आदर हमको इसका है करना,
निरादर नहीं यह सहन कर पाती,
निरक्षरता को दूर भगाकर
साक्षरता का है विश्वास दिलाती ।

लगता है समय आ गया फिर,
सीता जी की अग्नि -परीक्षा है
हर कवि लेखक को लगता है
देनी सबको रण-दीक्षा है ।

रुक गई कलम वो कलम नहीं,
है मन से गुलाम वो स्वतन्त्र नहीं,
अगर न हुआ राष्ट्र भाषा का आदर
तो समझो हम राष्ट्र के है ही नहीं ।।

अनुपमा ठाकुर
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15003

'बेटी'

मैं पढ़ लिखकर नाम कमाऊँगी,
'टीचर' बनकर दिखलाऊँगी,
'अफसर' बनकर दिखलाऊँगी,
'डॉक्टर' बनकर दिखलाऊँगी,
ये ज्ञान की ज्योति बढ़ने दें,
माँ मुझको भी अब पढ़ने दें ।

जब भेदभाव की बात बड़ी ।
तब माँ ने उसको चपत जड़ी ।
भैया जो पढ़ लिख जाएगा
दो-पैसे कमा कर लाएगा ।
तू भी जो पढ़ने जाएगी
ये चूल्हा कौन जलाएगा?
ये झाड़ू कौन लगाएगा?

बेटी की आँखें बहने लगी
अपनी माँ से वो कहने लगी
मैं गाय-भैंस चरा दूँगी ।
खेतों में काम सम्भाल लूँगी ।
मैं सारा काम कर लूँगी ।
मैं कभी ना कुछ भी टालूँगी ।

माँ एक बार
माँ बस एक बार
माँ एक बार
ये ज्ञान की ज्योति बढ़ने दे
माँ मुझको भी तू पढ़ने दे ।
माँ मुझको भी मेरे मन की करने दे ।

सरिता देवी
बी.ए. छठा सत्र, रोल नं. 15029



शिक्षा पाओ : जागो और जगाओ

जनता और सरकार के अथक प्रयासों से शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से हुआ है। गांव-गांव व कस्बों में विद्यालय खोले गए हैं। इनके महत्त्व को वही जान पाएगा जो दूर जाकर शिक्षा प्राप्त करता है। शिक्षा व्यक्ति की सोच ही बदल देती है।

रोजगार का माध्यम तो यह है ही लेकिन यह उदार मानसिकता के सभ्य समाज की एक आधारशिला भी है। जब तक शिक्षा का प्रभाव नहीं होगा, तब तक मनुष्य कूप मण्डूक बना रहता है। आइए शिक्षा के द्वारा अपने भीतर के अंधेरे को दूर करके मन की छिड़कियां और दरवाजे खोलें ताकि प्रकाश भीतर तक फैले और उस उजाले में हम अपने गुणों व अवगुणों को पहचानें।

पुस्तकें सच्ची सखियाँ हैं, शिक्षा जीवन के रास्तों को प्रशस्त करती है। उन्नति के मार्ग खोलने वाली शिक्षा ही तो है। विद्यालय ऐसे मानसिक व शारीरिक विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अतः शिक्षा के महत्त्व को हृदय से स्वीकारते हुए हमें प्रयत्नशील रहना है और इसे प्रयोग में उतारना है। कथनी और करनी को एक बनाना है। सर्व शिक्षा माध्यम से भी इस भाग को जीवन्त बनाया जा रहा है।

सत्या देवी
बी.ए. षष्ठ सत्र
रोल नं. 15027

झूठे दिलावे से व्यष्ट इंकार बेहतबर है

चलना ही जिठढ़गी है

अच्छा दिखाने के लिए मत जियो,
बल्कि अच्छा बनने के लिये जियो ।
जो झुक सकता है
वह सारी दुनिया को झुका सकता है ।
गंगा में डुबकी, लगातार तीर्थ किए हजार,
इनसे क्या होगा अगर बदलें नहीं विचार ।
क्रोध हवा का वह झोंका है,
जो बुद्धि के दीपक को बुझा देता है ।
अगर बुरी आदत समय पर न बदली जाए,
तो बुरी आदत समय बदल देती है ।
हमेशा प्रेम की भाषा बोलिए,
इसे बहरे भी सुन सकते है,
और गूंगे भी समझ सकते हैं ।
चलते रहने पर ही सफलता है,
रुका हुआ तो पानी भी बेकार हो जाता है ।
हम बदलेंगे
युग बदलेगा ।

नगिना देवी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15008

हिम्मत मत हारना,
ध्येय मत भूलना ।
मन के जीते जीत है,
लक्ष्य मत छोड़ना ।
जो खुद को पहचान गया,
वह वक्त की कीमत जान गया ।
बाधाएं कुछ ना बिगाड़ पायेंगी,
संकल्प ये मन में ठान लिया ।
नाकामी से न कभी डरना,
हर कार्य को मन से करना ।
तुम से बेहतर न है कोई
विचार से बदले, किस्मत सोई ।।
मंजिल जब तक न मिले,
थकना शब्द रहे कोसों दूर
कुछ करने की ठान मन में,
कौन-सी मंजिल रही है दूर,
चलते-चलते चाहे हो जाए रैना,
चाहत की राह बनाती है ।
टिक-टिक करती पर घड़ी न रुकती
चलना ही सभी को सिखाती है ।

सत्या देवी
बी.ए. षष्ठ सत्र
रोल नं. 15027



HIMARI GANGA

अनमोल वचन

पिता की आँखों में फर्ज ।
माता की आँखों में ममता ।
भाई की आँखों में स्नेह ।
बहन की आँखों में प्यार ।
अमीर की आँखों में घमण्ड ।
गरीब की आँखों में आशा ।
सज्जन की आँखों में दया ।
दुर्जन की आँखों में बदला ।
सदा बना रहता है ॥

बबली
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15012

प्रकृति

हँसती खेलती गुनगुनाती प्रकृति,
झूमती नाचती गाती प्रकृति ।
मनोरम झरोखे समेटे हुए सबका मन मोहती प्रकृति
कभी बूंदों का रूप लेकर कभी शीत का झोंका बनकर ।
सबको आनंदित करती प्रकृति ।
अपने अनेक रूप दिखाकर अरण्य में कितने गुण छुपाकर
सबके लिए उपचार बनती प्रकृति ।
फूलों की सुगन्ध बनकर चारों तरफ हरियाली बनकर
हृदयों में प्रकृति मेघों की गरज बनकर
सबके मन को हर्षाती प्रकृति ॥

लता देवी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15236

माँ

माँ है एक ऐसा उजाला,
जो अंधेरे में भी है फैला ।
माँ है एक ऐसा दीपक,
जो संसार को जगमगाता है ।
माँ है एक ऐसी आशा,
जो दूर करती बच्चों की निराशा
माँ एक ऐसी ममता है,
जो बच्चों को भाती है ।



माँ बच्चों की साथी है,
जो साथ सदा निभाती है ।
कभी न छोड़ना माँ का साथ,
माँ जीवन का है आधार ।
बच्चों से करती है वो प्यार
करो माँ की जय-जयकार

पूजा
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15034

चुटकुले

1. दो मन्त्री हेलीकॉप्टर में बैठे बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का दौरा कर रहे थे ।
पहला मन्त्री :- अगर मैं यहाँ से 50 रुपये का नोट फेंक दूँ तो लोग खुश होंगे ।
दूसरा मन्त्री :- अगर मैं 100 रुपये का नोट फेंक दूँ तो लोग और भी अधिक खुश होंगे ।
दोनों की बेटुकी बातें सुनकर पायलट चुप न रह सका, वह खीझकर बोला अगर मैं तुम दोनों को यहाँ से उठाकर नीचे फेंक दूँ तो लोग कितने खुश होंगे ।
2. कंजूस सेठ अपने बच्चों को बोला, जो आज शाम खाना नहीं खाएगा । उसे मैं 10 रुपये दूँगा । तीनों बेटे 10-10 रुपये लेकर, बिना खाना खाए सो गए ।
कंजूस सुबह बोला अब जो 10 रुपये देगा उसे नाश्ता मिलेगा । बच्चे परेशान होकर बोले बाप है या कम्पनी का कॉरपोरेट ।
3. ये अच्छा हुआ कि 1947 में Whatsapp नहीं था वरना आज़ादी के लिए कोई जंग में उतरता ही नहीं, लोग घर बैठते ही कहते कि इस मेसेज को इतना फैलाओ कि अंग्रेज खुद भारत छोड़कर भाग जाये ।

पूजा
बी.ए. चतुर्थ सत्र
रोल नं. 160098



किसान

भारत में है मेहनती किसान
किसान का काम नहीं आसान ।
खून—पसीने से किसान कमाता है
खुद तो खाता, पूरे देश को भी खिलाता ।
अगर न करे खेती का काम किसान
तो भूखा रहेगा हर इंसान
किसान का काम नहीं है आसान ।

खून पसीने से किसान कमाए
हरी—भरी फसल किसान उगाए ।
जो खेतों में सुन्दर लहराए ।

आज जनसंख्या बढ़ रही है,
कृषि योग्य भूमि घट रही है ।

लोगों ने बनाए मकान ही मकान,
खेती का न किसी को ध्यान ।

क्या करे बेचारा किसान जब भूखा रहेगा इन्सान
तभी करेगा वह जनसंख्या का ध्यान ।

रोहित ठाकुर

बी.ए. छठा सत्र, रोल नं. 15022

तितली

दूर—दूर क्यों रहती हम से,
मुँह खोलो, कुछ बोलो तितली ।
इन्द्रधनुष से पंख सजाए,
या फूलों से रंग चुराए?
छुई—मुई सी नाजुक हो तुम,
किसने नखरे तुम्हें सिखाए?
परियों जैसे पंख तुम्हारे,
कैसे है? नकली या असली?
फूल—फूल का रस पीती हो,
रस पर ही मानो जीती हो ।
यह व्रत किसके लिए साधती,
किस प्रिय की तुम मन चहेती हो?
चुपके—चुपके, क्यारी—क्यारी
किसको दूँडा करती हो?
पलती सदा बहारों में तुम,
जहाँ न कोई दिखता है गम ।
फिर भी पनप न पाती हो क्यों?
चिन्तित—सी लगती हो हरदम



प्रवीना कुमारी

बी.ए. चतुर्थ सत्र
रोल नं. 160031

हम बच्चे आजाद देश के

हम बच्चे आजाद देश के,
ऐसा कुछ कर जाएंगे,
हमें भी युगों—युगों तक लोग याद रख पाएंगे,
जन्म लिया इस पावन धरती पर,
इस धरती का ऋण चुकाएंगे,
नया प्रकाश, नई रोशनी चारों ओर फैलाएंगे,
हम बच्चे आजाद देश के,
स्वतन्त्र भारत में हमने जन्म लिया,
नहीं भूले, हम उनकी कुर्बानी जिन्होंने हमें आजाद किया,
उनकी कुर्बानी व्यर्थ जाने न देंगे,
हर सपना साकार कर दिखाएंगे,
भ्रष्टाचार, गरीबी को मिटाकर,
देश को तरक्की की राह पर ले जाएंगे,
जाति—पाति का बंधन तोड़कर,
भेदभाव का फर्क मिटाएंगे ।

मनीषा देवी

बी.ए. चतुर्थ सत्र, रोल नं. 160088

मेहमान की चप्पल

एक दिन एक बहुत बड़े कजूंस सेठ के घर में कोई मेहमान आया । कजूंस ने अपने बेटे से कहा, आधा किलो बेहतरीन रसगुल्ले ले आओ । बेटा बाहर गया और कई घंटों बाद वापिस आया । कजूंस ने पूछा, 'रसगुल्ले' कहाँ हैं? बेटे ने कहना शुरू किया, 'अरे पिताजी, मैं रसगुल्ले की दुकान पर गया और दुकानदार से बोला कि सबसे अच्छे रसगुल्ले दे दो । दुकानदार ने कहा कि ऐसे रसगुल्ले दूंगा, बिल्कुल माखन जैसा । फिर मैंने सोचा कि क्यों न माखन ही ले लूँ । मैं माखन लेने दुकान गया और बोला कि सबसे बढ़िया मक्खन दो । दुकानवाला बोला कि ऐसा मक्खन दूंगा बिल्कुल शहद जैसा । मैंने सोचा क्यों न शहद ही ले लूँ । मैं फिर गया शहद वाले के पास और उससे कहा कि सबसे मस्त वाला शहद चाहिए । वो बोला ऐसा शहद दूंगा पानी जैसा साफ । तो पिता जी फिर मैंने सोचा कि पानी तो अपने घर पर ही है और मैं चला आया खाली हाथ । कजूंस बहुत खुश हुआ और अपने बेटे को शाबासी दी लेकिन तभी उसके मन में कुछ शंका उत्पन्न हुई । लेकिन बेटे तू इतनी देर तक घूम आया । चप्पल तो घिस गई होगी । बेटा बोला पिता जी ये तो मेहमान की चप्पल है जो घर पर आया है ।

अंजना कुमारी

बी.ए. छठा सत्र, रोल नं. 15401



मंजिल मिले ना मिले

मंजिल मिले ना मिले ये तो मुकद्दर की बात है, हम कोशिश भी न करे ये तो गलत बात है। एक बार चन्द्रगुप्त ने चाणक्य से प्रश्न किया अगर किस्मत पहले ही लिखी जा चुकी है तो, कोशिश करके क्या मिलेगा? चाणक्य ने कहा :- क्या पता किस्मत में लिखा हो कि कोशिश करने से ही मिलेगा। इसीलिए हमें जीवन में संघर्ष करते रहना चाहिए। तभी हम जीवन में सफल हो सकते हैं।

राकेश कुमार

बी.ए. चतुर्थ सत्र, रोल नं. 160003

माँ

बहुत रोते हैं कि दामन हमारा नम नहीं होता
इन आँखों के बरसने का कोई मौसम नहीं होता,
मैं महफूज रहती हूँ कि मेरी माँ की दुआओं का
खजाना कभी कम नहीं होगा।
माँ संवेदना है, भावना है, एहसास है,
माँ जीवन के फूलों पर खुशबू का वास है।
माँ रोते हुए बच्चे का खुशबूनुमा पलना है।
माँ लोरी है गीत है प्यारी-सी छाया है।
माँ पूजा की थाली है, मन्त्रों का जाप है।
माँ आँखों का सिसकता हुआ किनारा है।
माँ गालों पर पप्पी, ममता की धारा है।
माँ कलम है, दवात है, स्याही है।
माँ परमात्मा की स्वयं एक छवि है।
माँ चिंता है, याद है, हिचकी है।
माँ बच्चे की चोट पर सिसकी है।
माँ पृथ्वी है, जगत है, धरी है।
बिन माँ सृष्टि की कल्पना अधूरी है।
माँ का महत्त्व दुनिया से कम नहीं हो सकता।
माँ जैसा दुनिया से अपनी ममता लुटाने के लिए
कभी कोई आ नहीं सकता
माँ तुम महान हो।।



मधु बाला।
बी.ए. पंचम सत्र
रोल नं. 15002

दादा जी की सीख

अकल खाती है गम
दादा जी कभी सिखाते थे।
पर उस समय बात उनकी
हम समझ नहीं पाते थे।
जब जिन्दगी के हम
उतार-चढ़ाव देखते हैं।
हम मोड़ पर समय रखने की
कोशिश में लगे रहते हैं।
तब दादा जी याद हमें बहुत आते हैं
दादा जी के अनुसार जिसकी
जेब में पैसा है मुँह में जुवान
पहुँच सकता है किसी भी
मंजिल पर वह इंसान ।।

पूजा देवी
बी.ए. पंचम सत्र
रोल नं. 15013

हिन्दी की स्थिति

आज भारत की स्थिति क्या हो गई
हिन्दी अढ़ाई शब्दों में खो गई है।
अंग्रेजी बोले मिले आज सम्मान
हिन्दी में बतियाए साधारण इन्सान।
नमस्ते को छोड़ हैलो, हाय
जैसे उन्हें कोई दुःख सताए।
नई पीढ़ी हिन्दी से नज़रे चुराएगी
बढ़ेगी हिन्दी कह हँसी उड़ाएगी।
हमारी मातृभाषा का जीवित रहे स्वरूप
हमारी हो पहचान हिन्दी के अनुरूप ।

बबली
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15012



कल किसने देखा

जी लो जी लो आज के पल,
देखा किसने क्या होगा कल ।
जी लो जी ले आज के पल,
जाने मिले न शायद कल ।
जीवन इक सागर थोड़ा गहरा थोड़ा खारा,
थोड़ी दल-दल थोड़ा प्यारा ।
जीना हमने जिन्दगी हमारी
फिर क्यों चले राय दूजों की सारी ।
खूब-खूब जी लें इस जन्म को यारा ।
अगले जन्म मिले या न मिले दुबारा ।
गुजरे हुए लम्हें बरसी बदली जैसे,
भला फिर इन्हें पकड़ेंगे कैसे ।
पी लें घूंट मीठे आज के,
बड़ा कीमती है आज यारा ।
कभी आंखें भी नम होगी,
कभी खुशियां हर कम होगी ।
खूब जी लें इस जन्म को यारा,
अगले जन्म मिले या न मिले दुबारा ।

टलकी

बी.ए. पंचम सत्र,
रोल नं. 15026

चुटकुले व शेर

1. एक हरियाणवी जोड़ी ।
बीवी : अजी सुणो हो के, आदमी की डेथ होए पाछे
स्वर्ग में उन्हें अप्सरा मिले ...
बीवी : फेर लुगाईयां ने स्वर्ग में के मिले है?
पति : बांदर मिले है बांदर
बीवी : (ठण्डी सांस लेती हुई) यो तो घणी गलत बात है .
आड़े भी बांदर उड़े भी बांदर ।
2. जीवन में एक बार जो फैसला कर लिया हो तो फिर
पीछे मुड़कर मत देखो । क्योंकि
पलट-पलट कर देखने वाले इतिहास नहीं बनाते ।
3. अभी कुछ दूरियाँ तो कुछ फासले बाकी है,
पल-पल सिमटती शाम से कुछ रोशनी बाकी है,
हमें यकीन है कि कुछ दूंदता हुआ वो आयेगा जरूर,
अभी तो हौंसले और वो उम्मीदें बाकी हैं ।

पूजा देवी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15013

भारत की शान

हरा सफेद केसरिया
मध्य में धर्म चक्र संस्थान
वाह ! रे तिरंगे, तेरी अद्भुत शान
जिस पर बलिहारी हिन्दुस्तान ।
सत्य, त्याग और बलिदान
सुख-समृद्धि का तू गान
वाह ! रे तिरंगे तेरी फर-फर महान
जिस पर बलिहारी हिन्दुस्तान ।
तू जिस भूमि आकाश में जन्मा
वह माटी तिलक समान
वाह ! रे तिरंगे तू जैसे भगवान
जिस पर बलिहारी हिन्दुस्तान ।
जय हिन्द से प्रवाहित तेरा प्राण
राष्ट्र गीत से जगता तेरा मान
राष्ट्र शक्ति का तू आधार
वाह ! रे तिरंगे, तू भारत का स्वाभिमान
जिस पर बलिहारी हिन्दुस्तान ।

भावना देवी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15018

सपनों का सागर

जिन्दगी एक खेल है
जैसे उलझन भरी जेल है
कुछ बनने की चाह हो, अगर
तो बनो निडर ।
हकीकत से दूर हूँ, मगर
कोशिश से पार होगी हर डगर
मंजिल को पाना हो, अगर
तो बनो निडर ।
हौंसलों से उड़ान है
हिम्मत से पहचान है
जीत की इच्छा हो, अगर ।
उम्मीद से भरपूर है, जिगर
यह सपनों का सागर
मन जादूगर ।।

संगीता
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15014



अजीब जिन्दगी

ना जाने क्यूँ अजीब—सी ये जिन्दगी
 एक पल में है कोई, दूसरे पल में कोई नहीं
 मैं तो हूँ यहाँ पर मेरा मन है ओर कहीं
 ना जाने क्यूँ अजीब—सी है ये जिन्दगी
 हर एक पल कुछ गंवाया तो दूसरे ही कुछ नया पाया ।
 कभी कोई रूठा हमसे, तो कभी किसी ने हमें मनाया
 कभी जिन्दगी ने रूलाया, तो कभी इसने हमें हँसाया
 न जाने क्यूँ अजीब—सी ये जिन्दगी ।
 बहुत से रिश्ते दिए इसने माँ की ममता, पिता का प्यार
 दादी की कहानी तो दादा का दुलार ।
 कभी किसी ने अपनाया तो कभी
 किसी ने झटके से हाथ छोड़ाया ।
 ना जाने क्यूँ अजीब—सी ये जिन्दगी ।
 कभी जोर से गिराया तो कभी हँसले से ऊपर उठाया
 कभी थोड़ा फीका—सा तो कभी थोड़ा मीठा—सा बनाया
 कभी किसी परीक्षा में फेल तो कभी परीक्षा में पास करवाया ।
 पर हर एक परीक्षा से इसने हमें बहुत कुछ सिखाया ।

रीना देवी
 बी.ए. चौथा सत्र
 रोल नं. 160096

माँ अगर तुम न होती तो

माँ ! अगर तुम न होती हो मुझे समझाता कौन?
 काँटो भरी इस मुश्किल राह पर चलना सिखाता कौन ?
 माँ ! अगर तुम न होती मुझे लोरी सुनाता कौन ?
 खुद जागकर सारी रात चैन की नींद सुलाता कौन?
 ठोकर लगने पर रास्ते पर हाथ पकड़ कर संभालता कौन?
 माँ ! अगर तुम न होती तो मुझे परिवार का प्यार दिलाता कौन?
 सब रिश्ते—नातों से मेरी मुलाकात कराता कौन?
 माँ ! अगर तुम न होती तो मुझे गलती करने से रोकता कौन?
 सही क्या है, गलत क्या है इसका फर्क बताता कौन?
 माँ ! अगर तुम न होती तो मुझे प्यारी लाडो कहता कौन?
 मेरी राज दुलारी प्यारी 'बिटिया' कहकर गले लगाता कौन?
 माँ ! अगर तुम न होती तो मुझे समाज में रहना सिखाता कौन?
 तुम्हारे बिना ओ मेरी माँ मेरा अस्तित्व स्वीकारता कौन?
 नारी की तीनों शक्ति से मुझे परिचित कराता कौन?
 माँ ! अगर तुम न होती तो मुझे समझाता कौन?

सपना देवी
 बी.ए. छठा सत्र
 रोल नं. 15033

जिन्दगी के मैदानों में

अजीब—सी धुन बजा रखी है
 जिन्दगी ने मेरे कानों में,
 कहाँ मिलती है चैन
 पत्थर के इन मकानों में ।
 बहुत कोशिश करते हैं,
 जो खुद का वजूद बनाने की,
 हो जाते हैं दूर अपनों से
 नज़र आते हैं बेगानों में ।
 हस्ती नहीं रहती दुनिया में,
 इक लंबे दौर तक,
 आखिर में जगह मिलती है
 उन्हें कहीं दूर श्मशानों में ।
 न कर गम कि
 कोई तेरा नहीं,
 खुश रहने की राह है
 मस्ती के तरानों में ।
 जान ले कि दुनिया साथ नहीं देती
 कोई दम नहीं होता लोगों के अफसानों में ।

मोनिका
 बी.ए. छठा सत्र
 रोल नं. 15028

बेटी का हर रूप सुहाना

बेटी का हर रूप सुहाना, प्यार भरे हृदय का,
 ना कोई ठिकाना, ना कोई ठिकाना ॥
 ममता का आँचल ओढ़े, हर रूप में पाया,
 नया तराना, नया तराना ॥
 जीवन की हर कठिनाई को, हँसते—हँसते सह जाना,
 सीखा है ना जाने कहाँ से उसने अपमान के हर घूँट को,
 मुस्कुराकर पीते जाना, मुस्कुराकर पीते जाना ॥
 क्यों न हो फिर तकलीफ भंयकर,
 सीखा नहीं टूटकर हारना,
 जमाने की जंजीरे में जकड़े हुये सीखा है सिर्फ उसने,
 आगे—आगे बढ़ते जाना, आगे—आगे बढ़ते जाना ॥
 बेटी का हर रूप सुहाना, प्यार भरे हृदय का,
 ना कोई ठिकाना, ना कोई ठिकाना ॥

मंजु
 बी.ए. छठा सत्र
 रोल नं. 15032



युवाओं को यह सदा स्मरण रखना चाहिए

1. जो मनुष्य अपना लक्ष्य जितना ऊपर रखता है, उतना ही उसका तीर ऊपर जाता है।
2. मनुष्य का बेड़ा अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर लगाए। सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में प्रत्येक स्थिति में अपनी राह आप निकालती है।
3. यह चितवृत्ति है जो मनुष्य को सामान्यजनों से उच्च बनाती है। उसके जीवन को सार्थक और उद्देश्यपूर्ण करती है तथा उसे उत्तम संस्कारों के गुण ग्रहण करने के योग्य बनाती है। जिस मनुष्य की बुद्धि और चतुराई उसके दृढ़ हृदय के आश्रय पर स्थित रहती है वह जीवन और कर्म क्षेत्र में स्वयं और उत्तम रहता है और दूसरों को भी श्रेष्ठ और उत्तम बनाता है।
4. युवाओं को सदा यह स्मरण रखना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है स्वयं के आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएं उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने से बड़ों का सम्मान करे तथा छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे ये बातें आत्ममर्यादा के लिए आवश्यक है।

राजकुमारी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15228

हम खुश कब होंगे?

किसी से भी पूछ लो कि वह खुश कब होगा तो वह प्रश्न को आगे टालता दिखता है। अगर बच्चों से पूछें कि क्या वे खुश हैं? तो वे कहेंगे नहीं, जब हम कॉलेज जाएंगे तब हम खुश होंगे। कॉलेज में पढ़ने वालों से पूछें कि क्या वे खुश हैं? तो वे कहेंगे— नहीं, जब आत्मनिर्भर हो जाएंगे, तब हम खुश होंगे। आत्मनिर्भर होने पर जब पूछा जाता है कि क्या वे खुश हैं? उत्तर मिलता है— नहीं, जब शादी हो जाएगी, तब हम खुश होंगे। शादी होने पर उनसे पूछा जाता है कि क्या वे खुश हैं? उत्तर मिलता है— शादी के चार साल हो गए अभी तक कोई बच्चा नहीं है, संतान होने पर पूछा जाता है कि क्या वे खुश हैं? उत्तर मिलता है जैसे—जैसे बच्चे बड़े हो रहे हैं चिन्ता बढ़ रही है। दिन व्यतीत हो जाते हैं लेकिन वह दिन कभी भी नहीं आता जिस दिन हम खुश होंगे। अगर हम 80 वर्ष जीवित रहते हैं तो उसमें से 40 वर्ष सोने में खो देते हैं लेकिन हमारे पास खुश होने के लिए समय ही नहीं है। इसी प्रकार सारा जीवन किसी न किसी दुःख या तैयारी में व्यतीत हो जाता है। अपनी अंतरात्मा को आनंदित करने की कोशिश करें। समाधान यह है कि ईश्वर की हर रचना में प्रसन्नता को अनुभव करें। दूसरों के दुःखों को बांटने की कोशिश करें, खुशी अवश्य मिलेगी। हँसो और हँसाओं, यही जीवन का सार है। जीवन को आनन्दमय बनाओ, खुशी बांटो—खुशी मिलेगी।

बबली
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15012

एक कविता हर माँ के नाम

घुटनों से रेंगते—रेंगते
कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छांव में,
जाने कब बड़ा हुआ।
काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूँ हर जगह

प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधा—साधा भोला—भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा
“माँ” ! मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

मोनिका कुमारी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 1115YYT210011



HIMARI GANGA

राष्ट्र भाषा हिन्दी

जनगण में जो है प्यारी,
वह देवनागरी हिन्दी है हमारी,
भारत की जो है न्यायी
वह राष्ट्र भाषा है हमारी।

सूर कबीर की यह है वाणी,
तुलसी की है कीर्ति निशानी,
मीरा जी की है तन्मयता
भूषण आदि की है कुर्बानी।

यह तो है गागर में सागर
भृंगार है कहीं तो कहीं है वीर
करुणा से भर आती है आँखें,
मन हो जाता पढ़कर अधीर

आदर हमको इसका है करना,
निरादर नहीं यह सहन कर पाती,
निरक्षरता को दूर भगाकर
साक्षरता का है विश्वास दिलाती।

लगता है समय आ गया फिर,
सीता जी की अग्नि—परीक्षा है
हर कवि लेखक को लगता है
देनी सबको रण—दीक्षा है।

रुक गई कलम वो कलम नहीं,
है मन से गुलाम वो स्वतन्त्र नहीं,
अगर न हुआ राष्ट्र भाषा का आदर
तो समझो हम राष्ट्र के है ही नहीं।।

अनुपमा ठाकुर
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15003

'बेटी'

मैं पढ़ लिखकर नाम कमाऊँगी,
'टीचर' बनकर दिखलाऊँगी,
'अफसर' बनकर दिखलाऊँगी,
'डॉक्टर' बनकर दिखलाऊँगी,
ये ज्ञान की ज्योति बढ़ने दें,
माँ मुझको भी अब पढ़ने दें।

जब भेदभाव की बात बड़ी।
तब माँ ने उसको चपत जड़ी।
भैया जो पढ़ लिख जाएगा
दो-पैसे कमा कर लाएगा।
तू भी जो पढ़ने जाएगी
ये चूल्हा कौन जलाएगा?
ये झाड़ू कौन लगाएगा?

बेटी की आँखें बहने लगी
अपनी माँ से वो कहने लगी
मैं गाय-भैंस चरा दूँगी।
खेतों में काम सम्भाल लूँगी।
मैं सारा काम कर लूँगी।
मैं कभी ना कुछ भी टालूँगी।

माँ एक बार
माँ बस एक बार
माँ एक बार
ये ज्ञान की ज्योति बढ़ने दे
माँ मुझको भी तू पढ़ने दे।
माँ मुझको भी मेरे मन की करने दे।

सरिता देवी
बी.ए. छठा सत्र, रोल नं. 15029



शिक्षा पाओ : जागो और जगाओ

जनता और सरकार के अथक प्रयासों से शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से हुआ है। गांव-गांव व कस्बों में विद्यालय खोले गए हैं। शिक्षा के महत्त्व को वही जान पाएगा जो दूर जाकर शिक्षा प्राप्त करता है। शिक्षा व्यक्ति की सोच ही बदल देती है।

राज्य का माध्यम तो यह है ही लेकिन यह उदार मानसिकता के सभ्य समाज की एक आधारशिला भी है। जब तक शिक्षा का प्रभाव नहीं होगा, तब तक मनुष्य कूप मण्डूक बना रहता है। आइए शिक्षा के द्वारा अपने भीतर के अंधेरे को दूर करके मन की शक्तियाँ और दरवाजे खोलें ताकि प्रकाश भीतर तक फैले और उस उजाले में हम अपने गुणों व अवगुणों को पहचानें।

पुस्तकें सच्ची सखियाँ हैं, शिक्षा जीवन के रास्तों को प्रशस्त करती है। उन्नति के मार्ग खोलने वाली शिक्षा ही तो है। शिक्षा के महत्त्व को मानसिक व शारीरिक विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अतः शिक्षा के महत्त्व को हृदय से स्वीकारते हुए हमें प्रयत्नशील रहना है और इसे प्रयोग में उतारना है। कथनी और करनी का एक बनाना है। सर्व शिक्षा माध्यम से भी इस भाग को जीवन्त बनाया जा रहा है।

सत्या देवी
बी.ए. षष्ठ सत्र
रोल नं. 15027

छूटे दिलावे से व्यष्ट इंकार बेहतव है

चलना ही जिददगी है

जिददिले के लिए मत जियो,
विले अच्चा बनने के लिये जियो ।
जो झुक सकता है
वह सारी दुनिया को झुका सकता है ।
गाँव में बुबकी, लगातार तीर्थ किए हजार,
हरने क्या होगा अगर बदलें नहीं विचार ।
क्रोध हवा का वह झोंका है,
जो बुद्धि के दीपक को बुझा देता है ।
अगर बुरी आदत समय पर न बदली जाए,
तो बुरी आदत समय बदल देती है ।
हमेशा प्रेम की भाषा बोलिए,
इसे बहरे भी सुन सकते है,
और गुंमों भी समझ सकते हैं ।
सोते रहने पर ही सफलता है,
जागू हुआ तो पानी भी बेकार हो जाता है ।
सुनने पर ही सफलता है,
सुनने पर ही सफलता है,
युग बदलेगा ।

हिम्मत मत हारना,
ध्येय मत भूलना ।
मन के जीते जीत है,
लक्ष्य मत छोड़ना ।
जो खुद को पहचान गया,
वह वक्त की कीमत जान गया ।
बाधाएं कुछ ना बिगाड़ पायेंगी,
संकल्प ये मन में ठान लिया ।
नाकामी से न कभी डरना,
हर कार्य को मन से करना ।
तुम से बेहतर न है कोई
विचार से बदले, किस्मत सोई ।।
मंजिल जब तक न मिले,
थकना शब्द रहे कोसों दूर
कुछ करने की ठान मन में,
कौन-सी मंजिल रही है दूर,
चलते-चलते चाहे हो जाए रैना,
चाहत की राह बनाती है ।

नगिना देवी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15008

टिक-टिक करती पर घड़ी न रुकती
चलना ही सभी को सिखाती है ।

सत्या देवी
बी.ए. षष्ठ सत्र
रोल नं. 15027



अनमोल वचन

पिता की आँखों में फर्ज ।
माता की आँखों में ममता ।
भाई की आँखों में स्नेह ।
बहन की आँखों में प्यार ।
अमीर की आँखों में घमण्ड ।
गरीब की आँखों में आशा ।
सज्जन की आँखों में दया ।
दुर्जन की आँखों में बदला ।
सदा बना रहता है ।।

बबली

बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15012

प्रकृति

हँसती खेलती गुनगुनाती प्रकृति,
झूमती नाचती गाती प्रकृति ।
मनोरम झरोखे समेटे हुए सबका मन मोहती प्रकृति
कभी बूंदों का रूप लेकर कभी शीत का झोंका बनकर ।
सबको आनंदित करती प्रकृति ।
अपने अनेक रूप दिखाकर अरण्य में कितने गुण छुपाकर
सबके लिए उपचार बनती प्रकृति ।
फूलों की सुगन्ध बनकर चारों तरफ हरियाली बनकर
हृदयों में प्रकृति मेघों की गरज बनकर
सबके मन को हर्षाती प्रकृति ।।

लता देवी

बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15236

माँ

माँ है एक ऐसा उजाला,
जो अंधेरे में भी है फैला ।
माँ है एक ऐसा दीपक,
जो संसार को जगमगाता है ।
माँ है एक ऐसी आशा,
जो दूर करती बच्चों की निराशा
माँ एक ऐसी ममता है,
जो बच्चों को भाती है ।



माँ बच्चों की साथी है,
जो साथ सदा निभाती है ।
कभी न छोड़ना माँ का साथ,
माँ जीवन का है आधार ।
बच्चों से करती है वो प्यार
करो माँ की जय-जयकार

पूजा

बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15034

चुटकुले

- दो मन्त्री हेलीकॉप्टर में बैठे बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का दौरा कर रहे थे ।
पहला मन्त्री :- अगर मैं यहाँ से 50 रुपये का नोट फैंक दूँ तो लोग खुश होंगे ।
दूसरा मन्त्री :- अगर मैं 100 रुपये का नोट फैंक दूँ तो लोग और भी अधिक खुश होंगे ।
दोनों की बेटुकी बातें सुनकर पायलट चुप न रह सका, वह खीझकर बोला अगर मैं तुम दोनों को यहाँ से उठाकर नीचे फैंक दूँ तो लोग कितने खुश होंगे ।
- कंजूस सेठ अपने बच्चों को बोला, जो आज शाम खाना नहीं खाएगा । उसे मैं 10 रुपये दूँगा । तीनों बेटे 10-10 रुपये लेकर बिना खाना खाए सो गए ।
कंजूस सुबह बोला अब जो 10 रुपये देगा उसे नाश्ता मिलेगा । बच्चे परेशान होकर बोले बाप है या कम्पनी का कॉरपोरेट ।
- ये अच्छा हुआ कि 1947 में Whatsapp नहीं था वरना आज़ादी के लिए कोई जंग में उतरता ही नहीं, लोग घर बैठते ही कहते कि इस मेसेज को इतना फैलाओं कि अंग्रेज खुद भारत छोड़कर भाग जाये ।

पूजा

बी.ए. चतुर्थ सत्र
रोल नं. 160098



किसान

भारत में है मेहनती किसान
किसान का काम नहीं आसान।
खून-पसीने से किसान कमाता है
खुद तो खाता, पूरे देश को भी खिलाता।
अगर न करे खेती का काम किसान
तो भूखा रहेगा हर इंसान
किसान का काम नहीं है आसान।
खून पसीने से किसान कमाए
हरी-भरी फसल किसान उगाए।
जो खेतों में सुन्दर लहराए।
आज जनसंख्या बढ़ रही है,
कृषि योग्य भूमि घट रही है।
लोगों ने बनाए मकान ही मकान,
खेती का न किसी को ध्यान।
क्या करे बेचारा किसान जब भूखा रहेगा इन्सान
तभी करेगा वह जनसंख्या का ध्यान।

रोहित ठाकुर

बी.ए. छठा सत्र, रोल नं. 15022

तितली

दूर-दूर क्यों रहती हम से,
मूँह खोलो, कुछ बोलो तितली।
इन्द्रधनुष से पंख सजाए,
वा फूलों से रंग चुराए?
छुई-मुई सी नाजुक हो तुम,
किसने नखरे तुम्हें सिखाए?
परियों जैसे पंख तुम्हारे,
कैसे है? नकली या असली?
फूल-फूल का रस पीती हो,
रस पर ही मानो जीती हो।
यह व्रत किसके लिए साधती,
किस प्रिय की तुम मन चहेती हो?
चुपके-चुपके, क्यारी-क्यारी
किसको ढूँढा करती हो?
फलती सदा बहारों में तुम,
जहाँ न कोई दिखता है गम।
फिर भी पनप न पाती हो क्यों?
चिन्तित-सी लगती हो हरदम



प्रवीना कुमारी

बी.ए. चतुर्थ सत्र
रोल नं. 160031

हम बच्चे आजाद देश के

हम बच्चे आजाद देश के,
ऐसा कुछ कर जाएंगे,
हमें भी युगों-युगों तक लोग याद रख जाएंगे,
जन्म लिया इस पावन धरती पर,
इस धरती का ऋण चुकाएंगे,
नया प्रकाश, नई रोशनी चारों ओर फैलाएंगे,
हम बच्चे आजाद देश के,
स्वतन्त्र भारत में हमने जन्म लिया,
नहीं भूले, हम उनकी कुर्बानी जिन्होंने हमें आजाद किया,
उनकी कुर्बानी व्यर्थ जाने न देंगे,
हर सपना साकार कर दिखाएंगे,
भ्रष्टाचार, गरीबी को मिटाकर,
देश को तरक्की की राह पर ले जाएंगे,
जाति-पाति का बंधन तोड़कर,
भेदभाव का फर्क मिटाएंगे।

मनीषा देवी

बी.ए. चतुर्थ सत्र, रोल नं. 160088

मेहमान की चप्पल

एक दिन एक बहुत बड़े कजूंस सेठ के घर में कोई मेहमान
आया। कजूंस ने अपने बेटे से कहा, आधा किलो बेहतरीन
रसगुल्ले ले आओ। बेटा बाहर गया और कई घंटों बाद वापिस
आया। कजूंस ने पूछा, 'रसगुल्ले' कहाँ हैं? बेटे ने कहना शुरु
किया, 'अरे पिताजी, मैं रसगुल्ले की दुकान पर गया और
दुकानदार से बोला कि सबसे अच्छे रसगुल्ले दे दो। दुकानदार
ने कहा कि ऐसे रसगुल्ले दूंगा, बिल्कुल माखन जैसा। फिर मैंने
सोचा कि क्यों न माखन ही ले लूं। मैं माखन लेने दुकान गया
और बोला कि सबसे बढ़िया मक्खन दो। दुकानवाला बोला कि
ऐसा मक्खन दूंगा बिल्कुल शहद जैसा। मैंने सोचा क्यों न शहद
ही ले लूं। मैं फिर गया शहद वाले के पास और उससे कहा कि
सबसे मस्त वाला शहद चाहिए। वो बोला ऐसा शहद दूंगा पानी
जैसा साफ। तो पिता जी फिर मैंने सोचा कि पानी तो अपने घर
पर ही है और मैं चला आया खाली हाथ। कजूंस बहुत खुश हुआ
और अपने बेटे को शाबासी दी लेकिन तभी उसके मन में कुछ
शंका उत्पन्न हुई। लेकिन बेटे तू इतनी देर तक घूम आया।
चप्पल तो घिस गई होगी। बेटा बोला पिता जी ये तो मेहमान की
चप्पल है जो घर पर आया है।

अंजना कुमारी

बी.ए. छठा सत्र, रोल नं. 15401



मंजिल मिले ना मिले

मंजिल मिले ना मिले ये तो मुकद्दर की बात है, हम कोशिश भी न करे ये तो गलत बात है। एक बार चन्द्रगुप्त ने चाणक्य से प्रश्न किया अगर किस्मत पहले ही लिखी जा चुकी है तो, कोशिश करके क्या मिलेगा? चाणक्य ने कहा :- क्या पता किस्मत में लिखा हो कि कोशिश करने से ही मिलेगा। इसीलिए हमें जीवन में संघर्ष करते रहना चाहिए। तभी हम जीवन में सफल हो सकते हैं।

राकेश कुमार
बी.ए. चतुर्थ सत्र, रोल नं. 160003

माँ

बहुत रोते हैं कि दामन हमारा नम नहीं होता
इन आंखों के बरसने का कोई मौसम नहीं होता,
मैं महफूज रहती हूँ कि मेरी माँ की दुआओं का
खजाना कभी कम नहीं होगा।
माँ संवेदना है, भावना है, एहसास है,
माँ जीवन के फूलों पर खुशबू का वास है।
माँ रोते हुए बच्चे का खुशबूनुमा पलना है।
माँ लोरी है गीत है प्यारी-सी छाया है।
माँ पूजा की थाली है, मन्त्रों का जाप है।
माँ आँखों का सिसकता हुआ किनारा है।
माँ गालों पर पप्पी, ममता की धारा है।
माँ कलम है, दवात है, स्याही है।
माँ परमात्मा की स्वयं एक छवि है।
माँ चिंता है, याद है, हिचकी है।
माँ बच्चे की चोट पर सिसकी है।
माँ पृथ्वी है, जगत है, धरी है।
बिन माँ सृष्टि की कल्पना अधूरी है।
माँ का महत्त्व दुनिया से कम नहीं हो सकता।
माँ जैसा दुनिया से अपनी ममता लुटाने के लिए
कभी कोई आ नहीं सकता
माँ तुम महान हो।।



मधु बाला।
बी.ए. पंचम सत्र
रोल नं. 15002

दादा जी की सीख

अक्ल खाती है गम
दादा जी कभी सिखाते थे।
पर उस समय बात उनकी
हम समझ नहीं पाते थे।
जब जिन्दगी के हम
उतार-चढ़ाव देखते हैं।
हम मोड़ पर समय रखने की
कोशिश में लगे रहते हैं।
तब दादा जी याद हमें बहुत आते हैं
दादा जी के अनुसार जिसकी
जेब में पैसा है मुँह में जुवान
पहुँच सकता है किसी भी
मंजिल पर वह इंसान ।।

पूजा देवी
बी.ए. पंचम सत्र
रोल नं. 15013

हिन्दी की स्थिति

आज भारत की स्थिति क्या हो गई
हिन्दी अढ़ाई शब्दों में खो गई है।
अंग्रेजी बोले मिले आज सम्मान
हिन्दी में बतियाए साधारण इन्सान।
नमस्ते को छोड़ हैलो, हाय
जैसे उन्हें कोई दुःख सताए।
नई पीढ़ी हिन्दी से नज़रे चुराएगी
बढ़ेगी हिन्दी कह हँसी उड़ाएगी।
हमारी मातृभाषा का जीवित रहे स्वरूप
हमारी हो पहचान हिन्दी के अनुरूप ।

बबली
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15012



कल किसने देखा

जी लो जी लो आज के पल,
देखा किसने क्या होगा कल ।
जी लो जी ले आज के पल,
जाने मिले न शायद कल ।
जीवन इक सागर थोड़ा गहरा थोड़ा खारा,
थोड़ी दल-दल थोड़ा प्यारा ।
जीना हमने जिन्दगी हमारी
फिर क्यों चले राय दूजों की सारी ।
खूब-खूब जी लें इस जन्म को यारा ।
अगले जन्म मिले या न मिले दुबारा ।
गुजरे हुए लम्हें बरसी बदली जैसे,
भला फिर इन्हें पकड़ेंगे कैसे ।
पी लें घूंट मीठे आज के,
बड़ा कीमती है आज यारा ।
कभी आंखें भी नम होगी,
कभी खुशियां हर कम होगी ।
खूब जी लें इस जन्म को यारा,
अगले जन्म मिले या न मिले दुबारा ।

टलकी

बी.ए. पंचम सत्र,
रोल नं. 15026

चुटकुले व शेर

1. एक हरियाणवी जोड़ी ।
बीवी : अजी सुणो हो के, आदमी की डेथ होए पाछे
स्वर्ग में उन्हें अप्सरा मिले ...
बीवी : फेर लुगाईयां ने स्वर्ग में के मिले है?
पति : बांदर मिले है बांदर
बीवी : (ठण्डी सांस लेती हुई) यो तो घणी गलत बात है ।
आड़े भी बांदर उड़े भी बांदर ।
2. जीवन में एक बार जो फैसला कर लिया हो तो फिर
पीछे मुड़कर मत देखो । क्योंकि
पलट-पलट कर देखने वाले इतिहास नहीं बनाते ।
3. अभी कुछ दूरियाँ तो कुछ फासले बाकी है,
पल-पल सिमटती शाम से कुछ रोशनी बाकी है,
हमें यकीन है कि कुछ दूँढता हुआ वो आयेगा जरूर,
अभी तो हौंसले और वो उम्मीदें बाकी हैं ।

पूजा देवी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15013

भारत की शान

हरा सफेद केसरिया
मध्य में धर्म चक्र संस्थान
वाह ! रे तिरंगे, तेरी अद्भुत शान
जिस पर बलिहारी हिन्दुस्तान ।
सत्य, त्याग और बलिदान
सुख-समृद्धि का तू गान
वाह! रे तिरंगे तेरी फर-फर महान
जिस पर बलिहारी हिन्दुस्तान ।
तू जिस भूमि आकाश में जन्मा
वह माटी तिलक समान
वाह! रे तिरंगे तू जैसे भगवान
जिस पर बलिहारी हिन्दुस्तान ।
जय हिन्द से प्रवाहित तेरा प्राण
राष्ट्र गीत से जगता तेरा मान
राष्ट्र शक्ति का तू आधार
वाह! रे तिरंगे, तू भारत का स्वाभिमान
जिस पर बलिहारी हिन्दुस्तान ।

भावना देवी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15018

सपनों का सागर

जिन्दगी एक खेल है
जैसे उलझन भरी जेल है
कुछ बनने की चाह हो, अगर
तो बनो निडर ।
हकीकत से दूर हूँ मगर
कोशिश से पार होगी हर डगर
मंजिल को पाना हो, अगर
तो बनो निडर ।
हौंसलों से उड़ान है
हिम्मत से पहचान है
जीत की इच्छा हो, अगर ।
उम्मीद से भरपूर है, जिगर
यह सपनों का सागर
मन जादूगर ।।

संगीता
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15014



अजीब जिन्दगी

ना जाने क्यूँ अजीब—सी ये जिन्दगी
एक पल में है कोई, दूसरे पल में कोई नहीं
में तो हूँ यहाँ पर मेरा मन है ओर कहीं
ना जाने क्यूँ अजीब—सी है ये जिन्दगी
हर एक पल कुछ गंवाया तो दूसरे ही कुछ नया पाया।

कभी कोई रूठा हमसे, तो कभी किसी ने हमें मनाया
कभी जिन्दगी ने रूलाया, तो कभी इसने हमें हँसाया
न जाने क्यूँ अजीब—सी ये जिन्दगी।

बहुत से रिश्ते दिए इसने माँ की ममता, पिता का प्यार
दादी की कहानी तो दादा का दुलार।
कभी किसी ने अपनाया तो कभी
किसी ने झटके से हाथ छुड़ाया।

ना जाने क्यूँ अजीब—सी ये जिन्दगी।

कभी जोर से गिराया तो कभी हौंसले से ऊपर उठाया
कभी थोड़ा फीका—सा तो कभी थोड़ा मीठा—सा बनाया
कभी किसी परीक्षा में फेल तो कभी परीक्षा में पास करवाया।
पर हर एक परीक्षा से इसने हमें बहुत कुछ सिखाया।

रीना देवी
बी.ए. चौथा सत्र
रोल नं. 160096

माँ अगर तुम न होती तो

माँ ! अगर तुम न होती हो मुझे समझाता कौन?
काँटो भरी इस मुश्किल राह पर चलना सिखाता कौन ?
माँ ! अगर तुम न होती मुझे लोरी सुनाता कौन ?
खुद जागकर सारी रात चैन की नींद सुलाता कौन?
ठोकर लगने पर रास्ते पर हाथ पकड़ कर संभालता कौन?
माँ ! अगर तुम न होती तो मुझे परिवार का प्यार दिलाता कौन?
सब रिश्ते—नातों से मेरी मुलाकात कराता कौन?
माँ ! अगर तुम न होती तो मुझे गलती करने से रोकता कौन?
सही क्या है, गलत क्या है इसका फर्क बताता कौन?
माँ ! अगर तुम न होती तो मुझे प्यारी लाडो कहता कौन?
मेरी राज दुलारी प्यारी 'बिटिया' कहकर गले लगाता कौन?
माँ ! अगर तुम न होती तो मुझे समाज में रहना सिखाता कौन?
तुम्हारे बिना ओ मेरी माँ मेरा अस्तित्व स्वीकारता कौन?
नारी की तीनों शक्ति से मुझे परिचित कराता कौन?
माँ ! अगर तुम न होती तो मुझे समझाता कौन?

सपना देवी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15033

जिन्दगी के मैदानों में

अजीब—सी धुन बजा रखी है
जिन्दगी ने मेरे कानों में,
कहाँ मिलती है चैन
पत्थर के इन मकानों में।

बहुत कोशिश करते हैं,
जो खुद का वजूद बनाने की,
हो जाते हैं दूर अपनों से
नज़र आते हैं बेगानों में।

हस्ती नहीं रहती दुनिया में,
इक लंबे दौर तक,
आखिर में जगह मिलती है
उन्हें कहीं दूर श्मशानों में।

न कर गम कि
कोई तेरा नहीं,
खुश रहने की राह है
मस्ती के तरानों में।

जान ले कि दुनिया साथ नहीं देती
कोई दम नहीं होता लोगों के अफसानों में।

मोनिका
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15028

बेटी का हर रूप सुहाना

बेटी का हर रूप सुहाना, प्यार भरे हृदय का,
ना कोई ठिकाना, ना कोई ठिकाना ॥
ममता का आँचल ओढ़े, हर रूप में पाया,
नया तराना, नया तराना ॥
जीवन की हर कठिनाई को, हँसते—हँसते सह जाना,
सीखा है ना जाने कहाँ से उसने अपमान के हर घूँट को,
मुस्कुराकर पीते जाना, मुस्कुराकर पीते जाना ॥
क्यों न हो फिर तकलीफ भंयकर,
सीखा नहीं टूटकर हारना,
जमाने की जंजीरे में जकड़े हुये सीखा है सिर्फ उसने,
आगे—आगे बढ़ते जाना, आगे—आगे बढ़ते जाना ॥
बेटी का हर रूप सुहाना, प्यार भरे हृदय का,
ना कोई ठिकाना, ना कोई ठिकाना ॥

मंजु
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15032

HIMARI GANGA



आ गए हैं दिन बहार के

आ गए हैं दिन बहार के,
नीले नीले रंग फुहार के,
मस्ती में सब डोल रहे हैं,
मन की भाषा बोल रहे हैं,
बोंके उठते हैं ब्यार के,
आ रहे हैं दिन बहार के
गोरे तन पर रंगों की छवि,
जैसे जल में बिम्बित हो रवि,
झरते फूल हरा शृंगार के,
आ रहे हैं दिन बहार के।
होली आई होली आई,
गूंज उठी उर की शहनाई,
बड़े डोर में सभी प्यार के,
आ गए दिन बहार के।।

मधु बाला
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15002

जीवन

जीवन के दिन डायरी के समान होते हैं, जिसमें कौन, कब, क्या, लिखता है यह स्वयं जीवन जीने वालों पर निर्भर करता है। लिखते-लिखते उसकी जिन्दगी भी एक दिन डायरी की तरह खत्म हो जाती है। फर्क सिर्फ इतना है कि डायरी खत्म होने पर वह और डायरी ले सकता है, परन्तु जिन्दगी दोबारा नहीं मिल सकती है। इसीलिए मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी जिन्दगी के महत्व को समझे और अपनी जिन्दगी को खुबसूरत बनाएं। हम जितने स्वयं अच्छे होंगे हमारा वातवारण उतना ही खुबसूरत होगा, लेकिन शुरूआत पहले स्वयं से करें।

सुनीता
बी.ए. चतुर्थ सत्र
रोल नं. 160084



जिन्दगी

दिल के टूटने पर भी हँसना
शायद जिंदादिली इसी को कहते हैं,
ठोकर लगने पर भी मंजिल तक भटकना,
शायद तलाश इसी को कहते हैं,
किसी को चाहकर भी न पाना,
शायद चाहत इसी को कहते हैं,
टूटे खंडहर में बिना तेल के दिया जलाना,
शायद उम्मीद इसी को कहते हैं
गिर जाने पर भी फिर से खड़ा होना,
शायद हिम्मत इसी को कहते हैं,
और ये उम्मीद, हिम्मत, चाहत, तलाश
शायद जिंदगी इसी को कहते हैं।।।

पूजा देवी
बी.ए. छठा सत्र, रोल नं. 15013

माता-पिता

माता-पिता है परम पूज्य
उन-सा जग में नहीं कोई और,
उनकी वजह से आए जग में,
उन्हीं की वजह से रह पाए जग में।
हर मुसीबत से हर कष्ट से उन्होंने हमें बचाया,
हर उलझनों को हमारी उन्होंने ही सुलझाया।
अपनी खुशियों की परवाह न कर
अपनी हर इच्छा को मारकर
भरा है जिसने हमारे जीवन को खुशियों से
पूजा करो हमेशा उनकी मन से।
माता-पिता है परम पूज्य उन-सा नहीं जग में कोई और
कहता है कर्तव्य हमारा उन्हें न पहुँचाना ठेस
सदा सम्मान करो उनका न करो कभी उनसे कलेश।
उद्देश्य रखो अपना यह सदा
करो स्वयं से यह वादा,
माता-पिता को रखेंगे हमेशा खुश कभी न करोगे उन्हें रुष्ट
निभाना उनका सदा साथ देना न उन्हें कभी दगा।
लगाना न कभी उनके आशीर्वाद का मोल
यही होगी तुम्हारी सबसे बड़ी भूल
यही होगी तुम्हारी सबसे बड़ी भूल ।।

रोहित ठाकुर
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15022



संकल्प शक्ति से मिलती है सफलता

“मन के हारे हार है, मन के जीते जीत”

नामक इस कहावत ने बहुत पहले ही स्थापित कर दिया था कि मन की संकल्प शक्ति पर बहुत कुछ निर्भर करता है। अगर मन में इच्छा शक्ति है तो बड़े से बड़ा कार्य भी सफल हो जाता है और अगर मन ही कमजोर हो तो छोटा कार्य भी काफी मुश्किल नजर आता है। मन की इच्छा शक्ति अथवा संकल्प शक्ति बढ़ने का परिणाम यह होता है कि हम उस काम को भी करने में समर्थ हो जाते हैं जिसको करने की क्षमता सामान्यतः हम में होती ही नहीं। इसका कारण चाहे जो भी हो लेकिन यह सही है कि जब हमारी संकल्प शक्ति बढ़ जाती है तो हमारी काम करने की क्षमता भी बढ़ जाती है। इसके विपरीत यदि संकल्प शक्ति कमजोर हो तो व्यक्ति से उतना कार्य भी नहीं हो पाता जितना करने की सामान्य क्षमता उसमें होती है।

विज्ञान भी इसका समर्थन करता है कि कोई संकल्प लेने पर मस्तिष्क में विद्यमान न्यूरोन्स अत्याधिक सक्रिय हो जाते हैं और जब एक न्यूरोन दस न्यूरोन्स को और आगे इसी क्रम में हजारों लाखों न्यूरोन्स एक ही संकल्प का आवाहन करने लगते हैं तो मानव कठिन और असंभव माने जाने वाले काम भी करने में समर्थ हो जाता है। मानव जीवन में संकल्प शक्ति अथवा इच्छा शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका है। जिस मनुष्य की इच्छा शक्ति कमजोर हो, वह छोटी सी समस्या का भी सामना नहीं कर पाता तथा जल्दी ही आपे से बाहर हो जाता है।

इसके उलट जिसकी इच्छा शक्ति दृढ़ होती है वह बड़ी से बड़ी समस्या देखकर भी हार नहीं मानता और कठिन से कठिन परिस्थिति को अपने मनोनुकूल मोड़ देने में सफल हो जाता है।

ऐतिहासिक तथ्य भी इस बात को प्रमाणित करते हैं। प्राचीनकाल में सेनाएं जब शत्रु सेनाओं से लड़ने जाती थीं तो वीर रस के कवि उनके साथ ले जाए जाते थे।

वीर रस की कविताएं सुनकर सैनिक अधिक शौर्य का परिचय देते थे और असाधारण उपलब्धि हासिल कर दिखाते थे।

हमारे जीवन में सुख भी है, दुःख भी है, अच्छाई भी है, बुराई भी है। जहाँ अच्छा वक्त हमें खुशी देता है, वही बुरा वक्त हमें मजबूत बनाता है। हम अपनी जिन्दगी को सभी घटनाओं पर नियंत्रण नहीं रख सकते, पर उनसे निपटने के लिए साकारात्मक सोच के साथ सही तरीका तो अपना ही सकते हैं।

यदि हम बीच में रूक गए तो हमेशा मन में अफसोस रहेगा कि काश ! हमने कोशिश की होती। अधूरे छोटे कार्य हमें हमेशा कमजोर होने का एहसास दिलाते हैं।

जो लोग ईमानदारी से सोचते हैं वे बाधाओं से उबरने के तरीके तलाशते हैं। वे भले ही असफल हो जाएं पर सफल होने की चाह उनको नए तरीकों से आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

संजय कुमार
बी.एस.सी. द्वितीय सत्र
रोल नं. 17134

विदाई

माँ का प्यार, पिता का दुलार,
माई से झगड़ा, बहन से लड़ाई,
फिर भी हुई विदाई।
जो बेटी कल तक थी घर की शान,
उसी का कर दिया गया कन्यादान।
दिल से दिल की यही आवाज आयी,
जो थी कल तक माता-पिता की जान
वही बन गई दूसरों के घर की शान।
पीढ़ी से पीढ़ी ने यह रीत निभाई,
बेटियाँ अपनी होकर भी हो गई पराई।

प्रियंका वर्मा
बी.ए. द्वितीय सत्र
रोल नं. 17204

जुमीर जिंदा रख

जुमीर जिंदा रख,
कबीर जिंदा रख....
सुल्तान भी बन जाए तो,
दिल में फकीर जिंदा रखा
हौंसले के तरकश में,
कोशिश का वो तीर जिंदा रख
हार जा चाहे जिन्दगी में सब कुछ
मगर फिर से जीतने की वो उम्मीद जिन्दा रख।

पूजा देवी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15013



इसे पढ़ना मना है

पता नहीं मानव का स्वभाव कैसा है? जिस काम के लिए उसे रोका जाए वह उसी काम को करता है। बसों में हमेशा उल्टा होता है जैसे बुजुर्ग खड़े हैं, नौजवान आराम से सीटों पर बैठे हैं। साथ ही मोटे अक्षरों में लिखा है 'धूम्रपान मना है' कुछ व्यक्तियों को वहां धूम्रपान में जो मज़ा आता है वो कहीं और नहीं। जहाँ कहीं लिखा होता है 'थूकना मना है' वहीं देखकर लोगों के मुँह थूक से भर जाते हैं। ठीक उसी प्रकार कूड़े का डिब्बा अपना मुँह लेकर पड़ा रहता है। जहाँ 'चुप रहिए' लिखा होता है, वहीं पर लोगों की बातों का अड़्डा खुलता है। जब कोई किसी से कहते हैं कि उस जगह पर नहीं देखना, फिर भी वो उसी जगह पर देखते हैं चाहे वहाँ पर कुछ भी न हो। परन्तु ऐसे लोगों को कुछ नहीं कह सकते हैं क्योंकि उन्हें इसी में मज़ा आता है। आज आप अपने आप को ही देख लीजिए ऊपर मैंने इतने बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है कि 'इसे पढ़ना मना है' फिर भी इसे पढ़ रहे हैं। जरा सोचो कि ऐसा क्यों हुआ।

अनीता यादव
बी.ए. चतुर्थ सत्र
रोल नं. 160024

चुटकुले

1. अपनी जिन्दगी के किसी भी दिन को मत कोसिए "क्योंकि" अच्छा दिन खुशियाँ लाता है, और बुरा दिन अनुभव। एक अच्छा दिन और बुरा दिन जिन्दगी के लिए दोनों ही जरूरी है। इसीलिए हमें हर परिस्थिति का सामना करना चाहिए।
2. लेड़ी टीचर -
अगर दुनिया में लड़की नहीं होती तो क्या होगा?
स्टूडेंट-
कॉलेज वीरान, गलिया सुनसान, दुनिया परेशान, तन्हा
इसान, ना जानू, ना जान, हर तरफ -जय हनुमान।

यशपाल
बी.ए. चतुर्थ सत्र
रोल नं. 160119

आओ मिलकर पेड़ लगाएं

पक्षियों ने इक सभा बुलाई,
सबने अपनी बात बताई।
सुन रहा था बूढ़ा तोता,
जो ऊँची डाली पर था बैठा।
सबकी समस्या लाया कौआ,
हम सब है मुश्किल में भैया।
न तो हमें मिलता स्वच्छ जल,
और दिखते हैं बहुत कम जंगल,
न दिखती है शीतल छाया,
जाने कैसा समय यह आया।
क्यों न मिलकर सुलझाएं
हम अपने कुछ नियम बनाएं।
आओ मिलकर धरा को सुन्दर बनाएं,
हम सब इक-इक वृक्ष लगाएं।

अंजना
बी.ए. चतुर्थ सत्र
रोल नं. 160128

हिन्दी जन-जन की बोली है

एक डोर में सबको जो है बांधती
वह हिन्दी है।
हर भाषा को सग्गी बहन जो है मानती
वह हिन्दी है।
तत्सम, तदभव, देशी-विदेशी
सब रंगों को अपनाती है
जैसे आप बोलना चाहें
वह मधुर, वह मनभाती है।
नए अर्थ के रूप धरती,
हर प्रदेश की माटी पर,
खाली-पीली वॉम मारती,
बम्बई की चौपाटी पर।
चौरंगी से चले नवली,
प्रीति प्रेयासी हिन्दी है
बहुत-बहुत तुम सबको लगती
भालो-बाशी हिन्दी है।
गंगा कावेरी की धारा
साथ मिलाती हिन्दी है
पूर्व-पश्चिम
कम पंखुरी सेतु बनाती हिन्दी है।

बबली
बी.ए. षष्ठ सत्र
रोल नं. 15012



मंजिल

मंजिल मिलती है उनको,
जो कदम-कदम पर आगे बढ़ते हैं,
जो बढ़ते हुए कठिनाइयों से लड़ते हैं।
मंजिल मिलती है उनको,
जो मेहनत करते हैं और
असफलता से नहीं डरते हैं।

मंजिल मिलती है उनको,
जो सपनों को हकीकत में लाते हैं,
मंजिल पाकर वो ही सम्मान योग्य कहलाते हैं।
बादल हो तो धूप नहीं खिलती,
बिना कष्टों को सहे मंजिल नहीं मिलती,
तारों में एक चांद जगमगाता है।

मुस्किलों में अकेला इन्सान ही डगमगाता है,
झटों से मत घबराना मेरे दोस्त,
होकि कांटों में एक गुलाब ही मुस्कुराता है।

कुशम गुलेरिया
बी.ए. चतुर्थ सत्र
रोल नं. 1160270078

सपने देखो जो सोने न दें

सपने देखने और उसमें सफलता पाने के लिए उम्र की नहीं,
बल्कि हमारी इच्छा शक्ति की जरूरत होती है हमारी
परिस्थिति और बीता हुआ कल भी इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं
कर सकता, यदि हम इन्हें पूरा करने की ठान लें। लेकिन कई
बार हम अपने सपनों की दिशा में कदम उठाने से पहले ही
हार मान लेते हैं। वहां कुछ लोग सोचते हैं कि वे जो करना
चाहते हैं, जो बनना चाहते थे, बन गए। जो सीखना चाहते थे,
सीख गए। लेकिन सीखने की कोई उम्र नहीं होती। जिन्दगी
में सफल होना चाहते हैं तो कभी सपने देखना न छोड़ें,
जिन्दगी को बेहतर बनाने की संभावना होती है, बस हमें इस
को बढ़ाने की जरूरत है। इसके लिए सबसे पहले यह जानना
जरूरी है कि हम क्या चाहते हैं? जीवन में उद्देश्य व दिशा
निर्धारित हो जाने के बाद जो हम चाहते हैं उस तक पहुँचने के
लिए उपयुक्त योजना बनानी चाहिए।

एक भी पल जो बीत गया, न फिर लौट के आएगा।
जो करना है वो कर ले आज, कल तो फिर पछताएगा।।

कुशम गुलेरिया
बी.ए. चतुर्थ सत्र
रोल नं. 1160270078

कुछ अच्छी पंक्तियाँ

किसी की मजबूरियों पर न हँसिये,
कोई मजबूरियां खरीद कर
नहीं लाता।
डरिये वक्त की मार से
बुरा वक्त किसी को

बताकर नहीं आता।
अक्कल कितनी भी तेज हो,
नसीब के बिना
नहीं जीत सकती।

अक्कलमंद होने के बावजूद
बीरबल कभी बादशाह नहीं
बन सका।

पूजा देवी
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15013

दर्द सहा नहीं जाता है

जीवन की इस भाग-दौड़ में तब दर्द सहा नहीं जाता है,
जब एक बच्चा सड़कों में रोटी के लिए हाथ फैलाता है।
बाप बेचारा करता भी क्या, बूढ़ा अब जो हो चला,
हाथ पकड़कर उठना चाहा, बेटा बैसाखी दिखाता है,
तब दर्द सहा नहीं जाता है।
बेटे बहू को फुरसत है ही कहां सजने और संबरने से,
बूढ़ी माँ रसोईघर में होती है, रोती आंखों को धोती है,
वो बिटिया जो सबसे प्यारी थी, सब की राज दुलारी थी,
उस बेटे को दहेज के लिए जब जिन्दा जला दिया जाता है,
तब दर्द सहा नहीं जाता है।
उम्र थी जब खेलने की तब पत्थर उठवा दिया जाता है,
हिन्दु मुस्लिमों के दंगों में इन्सान को जला दिया जाता है,
वो टूटी छप्पर जिससे गरीबी अपना सिर ढका करती है,
उस छप्पर में एक दिन आग लगा दी जाती है,
तब दर्द सहा नहीं जाता है।

अर्चना देवी
बी.ए. षष्ठम् सत्र
रोल नं. 15015



अलेन कनिंघम

आत्मबल जाग जाये तो व्हील चेयर छूट जाती है। तब मेरी उम्र मात्र 7 साल की थी। जब स्कूल में हुए एक विस्फोट में मेरे पैर बुरी तरह जल गए थे। तब हम रोला क्षेत्र में रहते थे। जहाँ कुछ सौ एक लोग रहते थे। हम वहाँ एक छोटे से स्कूल में पढ़ते थे जो हमारे घर से 2 मील की दूरी पर था। वह 9 फरवरी 1917 का दिन था। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी तथा सड़कों पर बर्फ बिछी हुई थी। उस दिन हम लोग शिक्षक के आने से पहले स्कूल पहुँच गये थे। मेरी बहन बाहर ही झूला-झूलने के लिए रुक गयी और मैं, फ्लोयड और रेमंड तीनों भीतर गये। मुख्य दरवाजे की चाबी मेरे शिक्षक के पास थी और बगल वाले दरवाजे में ताला नहीं लगा था। जिसे बाहर से खोला जा सकता था। लेकिन एक बार भीतर जाने पर उसे अन्दर से खोला नहीं जा सकता था।

फ्लोयड ने कमरे को गर्म करने के लिए तैयारी शुरू की हालांकि अंगीठी में थोड़ी आग थी। लेकिन अंगीठी में और लकड़ी डालकर उसे जलाने के लिए बगल में रखे कैरोसीन के केन से उसे अंगीठी पर डालने लगा, तभी विस्फोट हुआ और हम आग में घिर गये। बाहर मेरी बहन लेथा ने देखा तो वह मदद के लिए चिल्लाने लगी। हमें अस्पताल पहुँचाया गया। जहाँ मेरे बड़े भाई फ्लोयड की कुछ दिनों बाद मौत हो गई। डॉक्टर ने मेरे बारे में बताया कि मैं बच नहीं सकता और अगर शायद बच भी गया तो चल नहीं पाऊंगा।

लेकिन मैं तो न मरना चाहता था और न ही अपंग बनकर रहना चाहता था। मैं बच गया, यही डाक्टरों और मेरे घर वालों के लिए हैरानी की बात थी। घर आने के बाद मैं या तो बिस्तर में रहता था या व्हीलचेयर में, लेकिन फिर से चलने का मेरा इरादा पक्का था। एक दिन मैं जोखिम लेते हुए व्हीलचेयर से घास पर गिर गया और घिसट कर तार की बाड़ तक पहुँचा फिर बाड़ को पकड़ कर खड़ा हुआ और कदम-कदम चलने की कोशिश की। मेरा आत्म बल देख सबको हैरानी हुई। खासकर मेरी माँ को जिसने एक समय सारी उम्मीदें छोड़ दी थी, मैंने चलने की कोशिश जारी रखी और फिर मुझे एहसास हुआ कि चलने से ज्यादा आसान दौड़ना है और फिर जब मैं दौड़ने लगा तो अतीत के सारे दुःख हवा हो गए और अन्ततः 1936 के बर्लिन आलोम्पिक में मैंने रेस में रजत पदक हासिल किया। अपने पर भरोसा मजबूत हो तो जिन्दगी की कोई भी रेस जीती जा सकती है।

आशिष ठाकुर
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15404

वक्त है रेत का दरिया

वक्त है रेत का दरिया, जो मुट्ठी से फिसल जाएगा,
यूँ ही बैठे रहे तो ये वक्त हाथ से निकल जाएगा,
हर लम्हें में छिपी हुई एक नई जिन्दगी,
जो न दूँदा इसको तो ये यूँ ही नष्ट हो जाएगा।

इसको जो न समझेगा अँधेरे होंगे उसकी राहों में,
गम का साया होगा हर पल उसकी खाली बाहों में,
धीरे-धीरे सारी खुशियाँ उसके आगे से निकल जाएगी,
फिर एक पछतावा दिखेगा उसकी आँख भरी निगाहों में।

वक्त के साथ चलो जिन्दगी जीओ,
हर पल में जो छुपी है खुशियाँ इनको जी भर के पिओ,
फिर सारी दुनिया होगी सिर्फ तुम्हारी राहों में,
कामयाबी का कारवाँ होगा सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी पनाहों में।

आशा कुमारी
बी.ए. चतुर्थ सत्र
रोल नं. 160009



शिक्षा में योग का महत्त्व

बहुत से चिकित्सक योग करने की सलाह देते हैं लेकिन हम उनकी बातों की और गौर नहीं करते। परन्तु योग मनुष्य के लिए खास तौर पर छात्र जीवन के लिए तो बहुत ही आवश्यक है।

योग से छात्रों में बढ़ती है एकाग्रता :-

1. आजकल के छात्रों में पढ़ाई को लेकर रुचि थोड़ी कम देखी जा रही है। वे पढ़ाई में ध्यान नहीं लगा पाते हैं। इसके पीछे की एक वजह यह भी हो सकती है कि वह स्वस्थ नहीं है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। योग की मदद से स्वस्थ शरीर सम्भव है। क्योंकि इससे सारे शरीर के रोगों का निदान होता है। यह केवल शरीर को स्वस्थ नहीं बनाता अपितु सम्पूर्ण शरीर का विकास करता है।

योग मन को शक्तिशाली बनाता है :-

2. आजकल के बच्चों को बचपन से ही पढ़ाई का बहुत बोझ होता है। बचपन से ही वे कम्पीटिशन की फील्ड में उतर जाते हैं एवं नाकाम होने पर उन्हें दुःख होता है। ऐसे बच्चे मन से कमजोर होते हैं। इसलिए बच्चों का मन भी मजबूत होना चाहिए।

मस्तिष्क को शक्तिशाली बनाना :-

3. योग का अभ्यास नियमित तौर पर करने से आपका मस्तिष्क शक्तिशाली एवं संतुलित बनता है। इससे आपका मन विकलित नहीं होता है। यह सुप्त शक्तियों को जागृत तो करता ही है साथ ही साथ उसमें आत्म विश्वास भी भरता है।

मादक द्रव्यों से छुटकारा :-

4. बहुत से छात्रों को अपने जीवन निर्माण के समय मादक द्रव्यों/पदार्थों की आदत लग जाती है। यह मादक पदार्थ स्वस्थ के लिए बहुत हानिकारक होते हैं। योग के लगातार किए गए अभ्यासों से इन गलत आदतों से छुटकारा मिलता है।

जीवन को सुखमय बनाये :-

5. बहुत से छात्र बहुत ही नीरस जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे छात्रों को भी योग का सहारा जरूर लेना चाहिए। योग का अभ्यास मस्तिष्क को शुद्ध करके विचार शक्ति को बढ़ाता है।

आशिष ठाकुर
बी.ए. छठा सत्र
रोल नं. 15404

खुश रहो

छोटी-सी जिंदगी है,
हर बात में खुश रहो
जो चेहरा पास न हो,
उसकी आवाज़ में खुश रहो,
कोई रुठा हो तुमसे
उसके इस अंदाज में भी खुश रहो,
जो लौट के नहीं आने वाले
उन लम्हों की याद में खुश रहो
कल किसने देखा है,
अपने आज में खुश रहो,

खुशियों का इंतजार किसलिए,
दूसरों की मुस्कान में खुश रहो,
क्यों तड़पते हो हर पल किसी के साथ को,
कभी तो अपने आप में खुश रहो
छोटी-सी तो जिंदगी है,
हर हाल में खुश रहो।

मधु
बी.ए. चतुर्थ सत्र
रोल नं. 160090



इन्सानियत

जिन्दगी

आगे बढ़ने का नाम है जिन्दगी ।
 गमों से भरा जाम है जिन्दगी ।
 यहां खुशियां कुछ पल होती है,
 गम से डूबी आँखें सदा रोती है ।
 सच में जिन्दगी एक पहेली है ।
 भीड़ में अकेली हूँ
 कभी बेवस हमें बनाती है जिन्दगी ।
 खुशियों में उपहार लगती है जिन्दगी ।
 गम में बेकार लगती है जिन्दगी ।
 पल-दो-पल का संसार है जिन्दगी ।
 कोई इससे मुँह मोड़ जाता है ।
 कोई इसे खोने से घबराता है ।
 सच में एक अरमान है जिन्दगी ।
 समझो तो भगवान है जिन्दगी ।
 देख सको तो 'वरदान' है जिन्दगी ।
 पा सको तो 'सम्मान' है जिन्दगी ।।

मधु बाला
 बी.ए. पंचम सत्र
 रोल नं. 15002

किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं,
 पराया दर्द जो अपनाएं, उसे इन्सान कहते हैं ।
 कोई धनवान है कितना, कोई निर्धन है कितना,
 सुख है, कभी दुख है, इसी का नाम जीवन है ।
 जो मुश्किल में न घबराए, उसे इन्सान कहते हैं ।
 ये दुनिया एक उलझन है, कभी धोखा, कभी ठोकर,
 कोई हँस-हँस कर जीता है, कोई रो-रो कर जीता है ।
 जो गिरकर फिर सम्भल जाए, उसे इन्सान कहते हैं ।
 अगर गलती रुलाती है तो राहें भी दिखती है,
 मनुष्य गलती का पुतला है जो अक्सर हो जाती है ।
 जो कर लें ठीक गलती को, उसे इन्सान कहते हैं ।
 भरने को तो दुनिया में पशु भी पेट भरते हैं ।
 पथिक जो बांट कर खाये उसे इन्सान कहते हैं ।

बनिता
 बी.ए. पंचम सत्र
 रोल नं. 15006

HIMARI GANGA

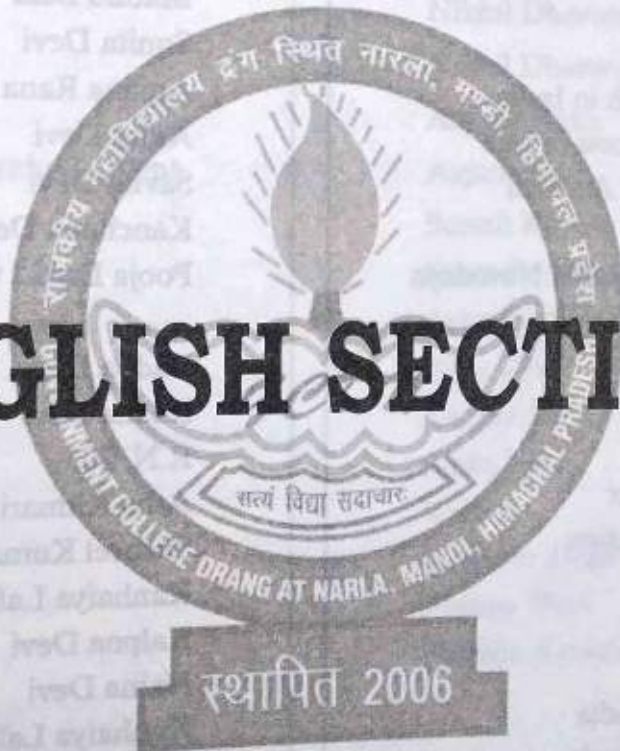


Simari Ganga

College Magazine
2016-17 & 2017-18



ENGLISH SECTION



स्थापित 2006

Teacher Editor
Prof. Asha Thakur

Student Editor
Aashish Thakur
Class BA VI Sem.
Roll No. 15404

Govt. College Drang at Narla
Dist. Mandi (H.P.)

Contents

S.N.	Composition	Written by	Page
1.	Editorial	Aashish Thakur	28
2.	Inspiring thoughts in English	Ganga	29
3.	Life is an examination	Sanjay Kumar	29
4.	Success	Sanjay Kumar	30
5.	Smile	Sanjay Kumar	30
6.	Confidence	Sanjay Kumar	30
7.	Smile is a Secret of Success	Dimpal	30
8.	In My India	Madhu Bala	30
9.	Music	Madhu Bala	31
10.	Importance of Trees	Sunita Devi	31
11.	Importance of English in India	Anjana Rana	31
12.	Magic Words for success in Life	Anita Devi	32
13.	Meaning of National Anthem	Savita Devi	32
14.	My meaning of Life	Kanchana Devi	33
15.	My Experience in Jawahar Navodaya Vidyalya	Pooja Devi	33
16.	Best Thoughts	Radha Devi	34
17.	Pleasures of Reading	Radha Devi	34
18.	Unhelpful Friends	R.N. 203	35
19.	Thoughts for Students	Asha Kumari	35
20.	Importance of Education	Susheel Kumar	36
21.	Blindness	Kanhaiya Lal	36
22.	A Word	Kanhaiya Lal	37
23.	The Mother	Kalpna Devi	37
24.	Demonetisation in India	Naina Devi	37
25.	One to Ten Letter Words	Kanhaiya Lal	38
26.	A Dream within a Dream	Naina Devi	39
27.	Think Positive	Rakesh Thakur	39
28.	Jokes	Vidya Rao	39
29.	Man and Woman	Jaya Devi	40
30.	Hope	Manju	41
31.	My Belief	Daya Kumari	41
32.	Good Manners	Daya Kumari	41
33.	Summer Days	Sapna Devi	42
34.	Indian Army- Asan Nahin Yeh Zindagi	Joginder Singh	42
35.	Indian Farmer : The Power of Nation	Jitender Kumar	43
36.	Sachin Tendulkar	Kamlesh	43
		Unknown	44

HIMARI GANGA



S.N.	Composition	Written by	Page
37.	Thoughts	Suresh Kumari	45
38.	Woman of Today	Raksha	45
39.	Thoughts	Bandna Sharma	45
40.	Buddhism	Madhu	46
41.	Positive Attitude	Ashish Thakur	47-48
42.	Drang at Narla College is the Best	Dimple Bhardwaj	49
43.	Jokes	Mamta Kumari	49
44.	It could n't be done	Nikhil Dharwal	50
45.	Love's Philosophy	Nikhil Dharwal	50
46.	The Tradition	Anjana Rana	50
47.	Tradition and the Individual Talent	Anjana Rana	51
48.	Importance of Trees	Suresh Kumar	51
49.	Just Think About Your Life	Surender Kumar	52
50.	School Life	Asha Devi	52
51.	Laugh For a While	Asha Devi	52
52.	Indian Scientists	Kalpna Devi	53
53.	Proverbs	Anita Devi	53
54.	Suggestion for Success	Raksha	53
55.	Jokes	Joginder Singh	53
56.	Trees	Pushpa Devi	54
57.	The word Mother	Neelam Kumari	54



Editorial

Dear Friends,

Just as we can see our own image in the mirror, in the same manner the college magazine "Himari Ganga" reflects the image of our college. I feel extremely proud of myself while presenting this English section for you.

Friends, College life is the most enjoying and struggling period of our life. College life provides excellent opportunity for the development of our mind and personality. Our education should be shown in our character, in our nature, in our behaviour not only in the certificates or degrees.

To become successful in our life we must have an aim. Success does not come by accident and it is not limited to the chosen few. It requires hard work, single minded dedication and indomitable courage in the face of vicissitudes of life. As someone has rightly said :

"Every mile begins with one small step. "

I congratulate all those students who have contributed their compositions in this section and regret to those whose articles could not be published due to some errors and the creation limitations. I hope they will try with more efforts and get success in their next attempt, as "Success is a journey not a destination." At last, my humble and sincere thanks to the Staff Editor, English Section, Prof. Asha Thakur who bestowed me with the title of student Editor and guided me for this.

Best wishes for your bright future.

Student Editor
Aashish Thakur
BA-6th Semester
Roll No. 15404

Remember that,

"Dream, Dream, Dream

Dreams transform into thought

And thoughts result in action."





Inspiring Thoughts in English

- (1) If you salute your Duty, You no need to salute anybody, but
If you pollute your duty, You have to salute everybody.
- (2) Successful persons never do big things,
They do small things in extra ordinary way.
"As you will think, as you will become."
- (3) If you consider yourself weak then you will become weak and
If you consider yourself strong, then you will become strong".
- (4) Strong people know how to keep their life in order.
Even with tears in their eyes,
They still manage to say "I am ok" with a smile.
- (5) Never think about the past it brings tears.
Don't think about the future it brings fears.
Live this moment with a smile and good cheers.

Ganga
Roll No. 230
BA VISEm.

Life is an Examination

God is a great Examiner,
We are all student.
Life is our answer sheet,
upon which we have to write.

The world is the hall,
For us to take the examination
Time allowed only three hours;
The first bell rings in childhood
The second in the Youth
And the third bell rings in old age.

Time quickly flips away,
And the examination is over.
The answer sheet is snatched away.
And life come to an end
Do not try to deceive,
Do not waste time by writing something useless.
Write down what will count.

So you may not say that
The paper was lengthy
And the time was short.

Sanjay Kumar
Roll No. 17134
B.Sc. 2nd Sem.



Success

Every successful person has a painful story.
Every painful story has a successful ending.
Accept the pain and get ready for success.
Help your friends in problem
without invitation. But don't go to your
Friend in happiness without invitation.

Sanjay Kumar
Roll No. 17134
B.Sc. 2nd Sem.

Smile

A smile is
lighting system of face.
Cooling system of head.
Healing system of heart.
Sparking system of eyes.
Relaxing system of mind.
So keep "SMILING".

Sanjay Kumar
Roll No. 17134
B.Sc. 2nd Sem.

Confidence

Some achieve great success is proof to all, that others can achieve it as well. The first and most important step toward success is the feeling that we can succeed. To accomplish great things we must not only act, but also dream : not only plan, but also believe.

Success is the ability to go from one failure to another with no loss of enthusiasm. Most of the important things in the world have been accomplished by people who have kept on trying when there seemed to be no help at all.

Sanjay Kumar
Roll No. 17134
B.Sc. 2nd Sem.

Smile is a Secret of Success

A happy person succeeds in all fields of life. He can earn every thing with a free smile. Smile has its magic effect in your daily life. It is not difficult to develop the habit of smile. It has great effects on personality. If a person asks you something with a smile, the smile will automatically comes on your lips when you will answer. A happy person is liked by all his friends. They like to accompany him. Smile has great value in our daily life. We should develop the habit of smile. But we should remember that smile should not be artificial. It should appear on face as well as in heart.

*Love starts with a smile,
Grows with a kiss and Ends with a Tear,
But Friendship starts with Eyes,
Grows with an understanding and Ends with Faith.*

Dimpal
BA VI Sem.

HIMARI GANGA



In my India

Assam for Rains,
Kashmir for Lakes
Goa for beauty,
Delhi for majesty,
Bengal for writers,
Punjab for fighters
Haryana for milk
Karnataka for silk
Tamilnadu for temple
Himachal for apples
Sikkim for pines,
Bihar for mines.
Tripura for Workers,
U.P. for Population,
Kerala for learners,
Jhar Khand for politics
Maharashtra for Coconut,
Rajsthan for desert,
West Bengal for Rice,
My India is nice.

Madhu Bala
BA VI Sem.
Roll no. 15002

Music

Music makes me happy
When in sad.
Music makes me laugh
When in Weeping.
Music showed me how
Beautiful a life is.
Music making my Companion
When in alone.
Music fills many
Colours in my life,
Music helps me to go
Further in life.
Music brings confidence in my life.

Madhu Bala
BA VI Sem.
Roll no. 15002

Importance of Trees

We and you for the trees
Let your light pass through
the leaves covered forests
through the trees.

Like your angels
You come very closer to us.
They always remind us
Those who have
dedicated their life
so that we may enjoy
the earth created by you
Please help us.

So that we may feel
our selves among the earth,
the trees

and all living creatures
At the end of the life.
We may give out our best
and help us

So that we may make
the world a little
more beautiful in return
of our staying here
we always become justice
oriented towards,
the land below our legs.
Our neighbours and the light
that come from
inside and outside.

O God !
give a long life
to the trees planted by us
and establish your world
with your love and
understanding on the earth.

Sunita Devi
BA VI Sem.

HIMARI GANGA



Importance of English in India

Whether English should be given the importance it enjoys, has been a debatable issue for many years now. India is sub continent inhabited by diverse people. There are numerous mother tongues. Many states do not recognise Hindi under such circumstances, English acts as a "Lingua Franca". English has emerged as the most important global language. It is a wrong view to hold that it is a language of the British alone. English has evolved into a language of science and technology. Majority of all important books for higher studies are written in English. The Indians must not keep their eyes closed in this adventurous period of globalization. United Nations has recognized five languages as its official languages and English takes the first position amongst them.

If we go back to historical facts, we see that half of the globe was under the British imperialism. Those countries coming directly under the British rule had to learn English under compulsion. But even after the Britishers quit India, their language remained with us. English is taught as a second language in India.

Many people question the relevance of still keeping English with us. English language, as it stands today is not the language of a particular people or particular country. It has assumed a world wide significance. It is language, understood and spoken by more than half the population of the world. In a sense, English has become an international language. English contains one of the richest treasure of literature and of course many western writers have been influenced by Indian writers Rabindra Nath Tagore was deeply inspired by Shelley and Swinburne. English also serves as the communicative medium of international trade.

English has been a link between India and the outside world even in the past. The great Indian philosophers and spiritualists, like Swami Vivekananda and Swami Ram Tirath, exalted fame in America and Cannada by clint of their mastery of English language. The national significance of Hindi should be maintained. Hindi should remain our national language while English should be adopted as international language.

Anjana Rana
BA VI Sem.

Magic Words for Success in Life

Smile, smile always smile and never cry.

If you don't succeed, try again and try again.

Be bold and be free.

Be everything you want to be, No need to depend upon others.

You can do alone and move further.

Faith and efforts are magical words.

Having the power of thousand words.

Go ahead and show your capability.

Do your work to the best of your ability.

Anita Devi
BA VI Sem.
Roll No. 233 (330015)

HIMARI GANGA



Meaning of National Anthem

Jana	-	People	Taranga	-	Waves
Gana	-	Group	Tava	-	Your
Mana	-	Mind	Subh	-	Auspicious
Adhinayaka	-	Leader	Naame	-	Name
Jaya He	-	Victory	Jage	-	Awaken
Bharata	-	India	Tava	-	Your
Bhagya	-	Destiny	Shubha	-	Auspicious
Vidhata	-	Desposer	Aashisha	-	Blessings
Punjaba	-	Punjab	Maage	-	Ask
Sindhu	-	Indus	Gaahe	-	Singh
Gujarata	-	Gujrat	Tava	-	Your
Maratha	-	Marathi Maharashtra	Jaya	-	Victory
Dravida	-	South	Gatha	-	Song
Utkala	-	Orissa	Jana	-	People
Banga	-	Bengal	Gana	-	Group
Vindhaya	-	Vindhya	Mangala	-	Fortune
Himachal	-	Himalaya	Dayaka	-	Giver
Yamuna	-	Yamuna	Jay He	-	Victory Be
Ganga	-	Gangas	Bharata	-	India
Uchchhala	-	Moving	Bhagya	-	Destiny
Jaladhi	-	Ocean	Vidhata	-	Dispenser

Jay He, Jay He, Jay He, Jay Jay Jay Jay He - Victory, Victory, Victory, Victory
Forever- Jai Hind

Savita Devi
BA VI Sem.
Roll No. 214

My Meaning of life

The meaning of life has no definition.

It's never the same,
how it's different,
makes it unique,
for every living soul.

My meaning of life is like a tree
filled with leaves.

Some leaves fall and others don't.
Like the million of stars stuck in space,
waiting to be discovered,

Like fire can cause war or peace.

Like money,
used and wasted,
abused and hasted,

Loved and wanted.

But if there a meaning to it?
If there a meaning to your life?
I don't know, you decide.

Kanchana Devi
BA VI Sem.
Roll No. 295



My Experience in Jawahar Navodaya Vidyalaya

Jawahar Navodaya Vidyalaya hunts for talented children from rural and urban areas and offers them free education with no extra expenses irrespective of the financial condition of candidates. Whether rich or poor, I was awarded with this opportunity in younger age. This article describes my journey at JNV and the changes occurred in myself.

I spent three years in JNV Pandoh Mandi. Two years is JNV Kothipura, Bilaspur and one year in JNV Pojewal, Punjab. These seven years were one of the wonderful periods of my life, though I did not expect it at the time of admission in JNV. Let's have an introduction of JNV.

JNVs are operated by Navodaya Vidyalaya Samiti, New Delhi. This school conducts an entrance exam call JNVST (Jawahar Navodaya Didyalaya Selection Test) for students studying in class 5th and qualified candidates are offered scholarship for 6th to 12th standard. All items such as textbooks, school uniform, stationery, PT uniforms and other items required in daily use are provided at no cost. When I was studying in class 5th, I gave an entrance exam (JNVST) for JNV. I just appeared, scored good marks and got selected for admission in JVN Pandoh Mandi. I was just 11 yrs., too young to leave my family and to stay in hostel with unknown faces. I was very excited to go to hostel. My parents came to leave me with my luggage. I got easily mixed with others and made good friends and I was fully enjoying my life at JNV.

Daily routine of JNV was quite interesting and kept us busy full day. It included waking up early in the morning for PT, after PT fresher up time, breakfast, morning Assembly, rest or study time, dinner, study time and at last it was bed time. Everything was punctual. I was admired for studies, acting and maintaining cleanliness in our hostel. Overall it was a nice experience. My parents visit twice in a month in weekends. Though I was comfortable at JNV and availing all the opportunities of amusement but thought of going back to home. I prayed to God to create such a situation that would send me again back to home to enjoy additional holidays. I know this is stupid and never got fulfilled.

Pooja Devi
B.A IV Semester

Best Thoughts

Best Teacher	-	Experience
Best Student	-	Attempt
Best Book	-	Life
Best Friend	-	Praise
Best Sport	-	Duty
Best Food	-	Thought
Best Dress	-	Smile
Best Shelter	-	Truth

Best Medicine	-	Laughter
Best Hobby	-	Service of man kind
Best Relation	-	Love

Radha Devi
Roll No. 302
B.A. VI Semester.



Pleasures of Reading

Books are our true friends. They stand by us through thick and thin. They amuse us in loneliness. They make us forget the worries and cares of life like true friends. They light our way in life. We can get instruction as well as entertainment from the readings of book. We can enjoy the company of great writers by reading their works. The reading of books can help us to learn the good and noble things of life. Good books are the best friends. They contain the wisdom of ages. They give us an endless store of knowledge. We can learn much from them. They provide us food for the mind. A well read person is held in high respect. One can impress others by his knowledge and understanding. He has better chance to rise in life. Reading books is the best of all the hobbies. It is not very expensive. So, we can borrow books from our friends. We can also get them from libraries. We can enjoy reading books to suit every age and every taste. They prove good companions during long journey also. But, we must know the difference between good and bad books. We should be very careful in the choice of books that we want to read. Some books do more harm than good. We should develop a taste for reading only good useful books. Good books will never let you down. Good books have indispensable contribution in the success story of a person.

Radha Devi
Roll no. 302
BA VI Semester

Unhelpful Friends

Bunny rabbit lived in the forest. He had many friends. He was proud of his friends.

One day Bunny rabbit heard the loud barking of wild dogs. He was very scared. He decided to ask for help. He quickly went to his friend deer. He said. " Dear friend, some wild dogs are chasing me. Can you chase them away with your sharp antlers?"

The deer said, "That is right, I can. But now I am busy. Why don't you ask bear for help?"

Bunny rabbit ran to the bear. "My dear friend you are very strong. Please help me. Some wild dogs are after me. Please chase them away", He requested. "I am sorry. I am hungry and tired. I need to find some good. Please ask the monkey for help".

Poor Bunny went to the Monkey, the elephant, the goat and all his other friends. Bunny felt sad that nobody was ready to help him.

He understood that he had to think of a way out by himself. He hid under a bush. He lay very still. The wild dogs did not find Bunny. They went chasing other animal.

Bunny rabbit learnt that he had to learn to survive by himself, not depending on his unhelpful friends.

Moral : - It is better to rely on your self than depend on others.

RollNo. 203
B.A. 6th Sem.



HIMARI GANGA

Thoughts for Students

1. Your life is the reflection of your thoughts. If you change your thinking you will change life.
2. Darkness cannot drive out darkness, only light can do that. Hate cannot drive out hate, only love can do that.
3. Life is like riding a bicycle to keep your balance you have to keep moving.
4. Life gives us new lessons each day not for learning but to improve our understanding.
5. Success is the sum of several small effort repeated often day in and day out.
6. Every bad situation has some good. Even a stopped clock shows the right time twice a day.
7. Always ask yourself, if not me, then who and if not now then when.
8. Fear can hold you prisoner and hope will set you free.
9. Bravery is the solution to the regret.
10. If the right advice is followed, Success comes early.

Asha Kumari

Roll No. 3334

VI Sem.

Importance of Education

We all want to succeed in our life. We must give importance to the education then other forgets in life as it is the only source of real happiness in our life. It completely changes our mind and personality and help us to attain the positive attitude. It develops confidence and helps building personality. So school education plays a great role in everyone's life. Our good and bad education decides that which type of person we would in the future. The importance of higher education has increased in getting good job. Proper education creates lots of way to go ahead in the future. There is only one way to all dreams which is good education. Education is a very good tool which benefits all through the life. Education is very important tool for everyone to succeed in life and get something different. Highly educated people become the base of the developed country. So, proper education makes the bright future of both, the individual and the country. Education makes people as perfect and noble as possible, it provides ability to understand all the human rights, social rights, duties and responsibilities toward country.

Susheel Kumar

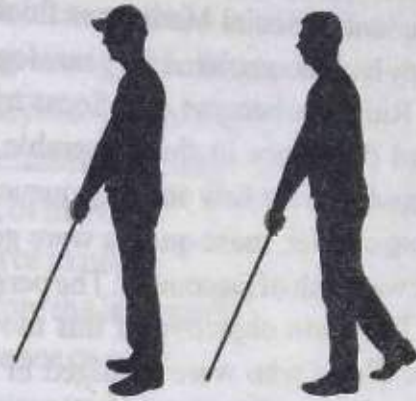
BA VI Sem.

Roll No. 315



Blindness

When I consider how my light is spent
Ere half my day in this dark world and wide.
And that one talent which is death to hide
Lodg'd with me useless, though my soul more bent.
To serve there with my maker, and present
My true account, Lest he returning chide,
"Doth God exact day-labour. Light denied?"
I fondly ask. But Patience, to prevent
That murmur, soon replies: "God doth no heed
Either man's work or his own gifts: who best
Bear his mild yoke, they serve him best. His state
Is kingly; thousands at his bidding speed
And past O'er land and ocean without rest:
They also serve who only stand and wait"



Kanhaiya Lal
Roll No. 299
BA VI Sem.

A Word

careless word,
May kindle strife,
cruel word,
May wreck life;
bitter word
May instil hate
gracious word,
May smoothen the way;
joyful word,
May light the day,
loving word,
May heal and bless.

Kalpna Devi
BA VI Sem.
Roll No. 243

The Mother

The mother is a special gift of love that is deep and true. You know she is always standing by to guide and comfort you. A mother with unfailing strength can keep you safe from harm. Yet you feel the softness of her gentle grace and charm. A mother gives encouragement with wisdom and a smile. She understands your hopes and dreams and make them seem worth while. Where ever you may go whatever you may do she is part of everything that is why we love and adore her too. If you have a loving mother. Treat her with love and care because you know the value of this gift is rarest of the rare.

All that I want or hope to be, I love it to be my angel mother.

Naina Devi
BA VI Sem.
Roll No. 244



Demonetisation in India

When PM Modi announced that Rs with the denomination of 500/- and 1000/- would cease to be the legal tender from 9th Nov, 2017 the whole country was stunned. This decision caused sensation in the whole country. Social Media was flooded with messages and information. People started counting the cash they had accumulated for years legally or illegally.

Rumours became rife. Some tried to invest their dying currency in gold. Some contacted their near and dear ones in this miserable hour. People could get only Rs. 4000/- of old denomination exchanged with the new one. Big queues before the banks and ATMs became the order of the day. Instead of getting shorter, these queues were getting longer with every passing day. The last date for the whole process was 30th of December. The persons could deposit the old cash worth Rs. 2.5 lac till the said date.

The main objective of this move was to club the black money, corruption and check money menace. Those who were indulged in malpractice did not welcome the move. The whole opposition shook hand against this move under one predece or the other. They called this decision a draconian law and wanted the govt to roll back it. Triadas were made to target the decision. Govt. also carried out counter attacks.

The new currency which replaced the old one is of denomination of 500/- and 2000/- Though the people faced a lot of inconvenience owing to shortage of funds, they did not criticize the govt. for the move. Prime Minister also addressed the people that it was a mahayajna and they must offer their own ahuti in it.

The most interesting thing regarding the demonetisation is that people are devising various unique methods for transforming their black money in to white one. Some of these methods are as follows :-

- Depositing money in the accounts of their poor relatives and friends.
- Enticing the people with some percentage of money for exchange.
- Asking their employees to stand in the long queues in front of Banks and ATMs for getting money exchanged.
- Converting black money into gold.
- Paying back loan forcibly.
- Using their influence /links with bank employees and so on.

Impact of Demonetization on Indian Society/Economy :-

We shall see a great impact of this move of the central govt. on Indian society and economy. The first impact shall be that people will have lower expenditure power with that they will not be able to purchase luxurious things. There shall be no ostentatious expenditures on marriage and other ceremonies. So the society will grow lesser materialistic and people more prudent with the fake money destroyed, Indian economy will see a big boom and so far booming real estate sector shall fall on the ground.

The things shall be cheaper. It will abridge the gap between the haves and the have nots. However, there may be some difficulties for a couple of months. But this inconvenience shall be temporary and for short-term.

Kanhaiya Lal
Roll No. 299
BA VI Sem.

HIMARI GANGA



One to Ten Letter Words

- The most selfish one letter word :
I - Aoid it
- The most satisfying two letter word :
We - Use It .
- The most damaging three letters word :
EGO - quit it.
- The most pleasing four letter word :
Love - Value it.
- The most friendly five letters word :
Smile - Value it.
- The fastest spreading six letters word :
RUMOUR - Ignore it
- The most Admirable seven letters word :
Success - achieve it
- The most admirable eight letters word :
JEALOUSY - distance it
- The most powerful nine letter word :
Knowledge - acquire it
- The most positive ten letters word :
CONFIDENCE - Possess it

Naina Devi
BA VI Sem.
Roll No.244

Think Positive

Say to yourself every morning

Today is going to be a great day.

I can handle more than I can

Things don't get better by worrying about them.

I can be satisfied if try to do my best.

There is always something to be happy about.

I am going to make someone happy today.

Life is great, I am going to enjoy it.

Be an optimist.

Vidya Rao
BA 6th Sem.
Roll No. 231

A Dream within a Dream

Take this kiss upon the brow!
And, in parting from you now,
Thus much let me avow.
You are not wrong, who dream
That my days have been a dream,
Yet it hope has flown away
In a night, or in a day,
In a vision or in none.
Is it therefore the less gone?
All that we see or seem
Is but a dream within a dream.
I stand amid the roar
of a surf-tormented shore.
And I hold within my hand
Grains of the golden sand
How few! yet how they reap
Through my fingers to the deep,
While I weep- while I weep!
O God! can I not grasp
Them with a fighter clasp?
O God! Can I not save
One from the pitiless wave?
Is all that we see or seem
But a dream with in a dream.

Rakesh Thakur
Roll no. 298
BA 6 Sem.



HIMARI GANGA



Jokes



- (1) **Teacher:-** Who is great? Mother or Teacher?
Student :- Teacher is great because the mother puts one child to sleep at one time, where as the teacher puts 40 children to sleep at one time.
- (2) **Housewife :-** Nimmi, did you wash the fish before you fried it in the morning.
Nimmi :- Oh, No Madam! Why should I wash a fish which has spent all its life in water?
- (3) Two men in a restaurant who were discussing politics nearly come to blows.
Proprietor :- Gentlemen, leave politics alone and eat and drink .
Customer :- What? If a man only thinks of eating and drinking what distinguishes him for the cattle?
Proprietor :- Paying the bill, Sir.
- (4) **Man :-** I could go to the end of the world for you.
Woman :- Yes, but would you stay there?
Man :- After you my self.
Woman :- Let's start from your bank account.
- (5) One day there was a rabbit and a snake who were both growing old and could not remember. What animal they were. Ok I'll describe you and then see if you can guess what you are.
Said the Snake :- That's a good idea.
Said the rabbit :- You are while, fluffy and you have big ears and feel.
Said the Snake :- Oh good. I'm a rabbit!
So the rabbit says - You are long, slim, and have a forked tongue.
Oh no, I'm a lawyer!
- (6) The perfect son.
A :- I have the perfect son. B :- Does he smoke?
A :- No, he does n't. B :- Does he drink, Whiskey?
A :- No, he does n't. B :- Does, he ever come home late ?
A :- No, he does n't. B :- I guess you really do have the prefect son. How old is he ?
A :- He will be six months old next month on next Wednesday.
7. **Editor :-** Is it your original story?
Student : Yes sir ! Every word of it.
Editor :- Then I am glad to meet you Mr. Thomas Hardy. I thought you were dead long ago.
- (8) **Mother :-** What does zero on your report card mean?
Kitu :- That's not a zero, The teacher ran out of stars so she gave me a moon.

Jaya Devi
BA 6 Sem.
Roll No. 269

HIMARI GANGA



Man And Woman : A Balanced Creation of God

Man is strong ...
Woman is beautiful.
Man is daring and confident ...
Woman is diffident and withdrawing.
Man is great in action ...
Woman is suffering.
Man shines abroad ...
Woman at home.
Man has a rugged heat ...
Woman is soft and tender one.
Man prevents misery ...
Woman relieves if
Man thinks ---
Woman feels,
Man has Science ...
Woman sensibility.
Man is being of Justice ...
Woman of Mercy.
Man rules the world. ...
Woman rules the man.

Manju
Roll No. 232

Hope

Hope is a beautiful flower,
Which gives off its fragrance.
Hope is a light,
Which shows way in the dark.
Hope is an inspiration.
Which leads to success.
Hope is a companion,
Which stands by in all circumstances.
Hope is a thought,
Which consoles at tough moments.
Hope is an entertainment.
Which passes time.
Hope is a force,
which helps to survive.

Pooja Verma
Roll No. 307
B.A. 6th Sem.

My Belief

I believe in my dreams,
I will never lose hope.
I believe in my ambition,
So with competition I can cope.

I believe in my talents.
And I will make the best of it.
I believe in my future
For which I will work bit by bit.

I believe in my abilities,
I will make my own name.
I believe I can do it.
So I can win life's game.

I believe in my strength.
I want to lead the thrang.
I believe in Almighty God.
Who keeps away from wrong.

I believe in myself.
Though the world may not.
Any thing in the world is possible.
When it is carefully wrought.

Daya Kumari
Roll No. 326
B.A. 6th Sem.





HIMARI GANGA

Good Manners

Importance of good manners ...

good manners at home

good manners at school

good manners in social life.

Manners make a man. Good Manners are admired by all. They make a person useful member of the society. They lend colour and grace to life. They make the machine of life run smoothly. Good manners are even more important than the laws of the state.

We should have good manners at home. We should be respectful to our elders and affectionate to those who are younger to us. We should cooperate with each other in doing household work. We should look to the comforts of each member of the family. We should keep our house neat and clean. We should entertain the guests who visit us.

Good manners should be observed at school also. We should be respectful to our teachers. We should not make a mischief in the class. We should maintain discipline. We should not damage the College property. We should be helpful to those students who are weak.

Good manners are equally important in social life. We should be courteous and polite to others. In no case we should lose our temper. We should be polite even while turning down the unfair requests of others. We should treat all as equals. If we are in a company, we should talk less and listen more. We should not hurt the feeling of others. Whenever some body does us a favour, we should use the words 'Please' and 'thank you'.

Sapna Devi
B.A. 6th Sem.
Roll No. 213

Summer Days

Summer days nice and long
Make me want to sing a song.

It is hot and dry but I still sing
When I hear the ice cream man bells ring.

Snow-cones and ice pope keep me cool.
even though I love the poal.

Summer's speeding by so fast.
oh how I wish these days would last.

For when it ends, I must abandon my pool.
I really dread going back to school.

But in the end, It will suffice
because I had the best summer of my life.

Joginder Singh
B.A. 6th Sem.
Roll No. 257

HIMARI GANGA



Indian Army : Aasan Nahin Yeh Zindagi

India is one of the biggest country in world. For its security India needs a good and powerful force. Indian Army gives this force to India. Indian Army is the 2nd biggest Army force in world. India has a large number of soldiers and large number of weapons also.

Behind this powerful army force there is so much hard work done by a soldier. A soldier lives his life in a very difficult situation in the border. Indian soldier does his duty in the world's highest battle ground and the very hot Desert Thar. BSF is the best Indian force for defence. BSF is also called the First line of defence. And the Motto of the BSF is "duty unto death".

Himachal is the state of Army boys. Every year Himachal gives many soldiers to Indian Army. I am proud of my state, proud of India, and proud of Indian Army. Motto of Indian Army - "Service Before Self". Motto of Indian Navy - "May the lord of the water be auspicious unto us". The army is the backbone of our country.

Jitender Kumar
B.A. 6th Sem.
Roll No. 256

Indian Farmer : The Power of Nation

The farmer is the backbone of our country. He is usually very hard-working. His day begins much before the sunrise. He goes to his fields when others are enjoying their sleep in the comfort of their beds. He works with his own hands. He tills his fields. He sows the seed. He irrigates his fields. He cleans and digs channels to bring water to his fields from distant canals or rivers. In the olden times, much of the product of his labour used to taken away by the landlords. But, now because of the progressive policies of our government the land belongs to the tiller. So, he is the sole owner of the crop which he produces with the sweat of his brow. The farmer of free India is very forward-looking. He has started using the advanced varieties of seeds. He uses chemical manures. Because of his use of scientific means of agriculture and his hard work he has brought a green revolution in our country. He has also become rich. Now our country has become surplus in food production. Fanainess have become a thing of the past and belong to the history books only. Long live the Indian Farmer!

Kamlesh
B.A. 6th Sem.
Roll No. 258



HIMARI GANGA

Sachin Tendulkar

Sachin Ramesh Tendulkar was born on 24 April, 1973. He is a former Indian Cricketer and captain widely regarded as one of the greatest batsman of all time. Sachin Tendulkar's father's name is Ramesh Tendulkar, was a well known Marathi novelist and his mother, Rajni Tendulkar worked in the insurance industry. Sachin Tendulkar has three elder siblings, two half brothers Nitin and Ajit, and a half sister Savita. They were Ramesh's children from his first marriage. Sachin Tendulkar started education from Sharadashram Vidyamandir high school, where he began his cricket career under the guidance of his coach and mentor, Rama Kant Achrekar. While at school he developed a reputation as a child prodigy he had become a common conversation point in Mumbai circles, where there were suggestions already that he would become one of the greats. His season in 1988 was extraordinary with Tendulkar scoring a century in every innings he played. He was involved in an unbroken 664- run partnership in a Lord Harris Shield inter-school game in 1988 with friend and team mate Vinod Kumble who would also go on to represent India. On 24 May, 1995, Sachin Tendulkar married Anjali, a paediatrician and daughter of Gujarati industrialist social worker Annabel Mehta. They have two children, Sara and Arjun.

Sachin Tendulkar, at the age of eleven, made his test debut on 15 Nov. 1989 against Pakistan in Krachi, at the age of sixteen he went on to represent Mumbai domestically and India internationally for twenty four years. He is the only player to have scored one hundred international centuries, the holder of the record for the number of runs in both ODI and Test cricket and the only player to complete more than 30,000 runs in international cricket. In 2002, just halfway through his career, 'Wisden cricketers' Almanock ranked him the second greatest Test batsman of all time, after Den Bradman, and the second greatest ODI batsman of all time, after Viv. Richardss. Later in his career, Tendulkar was a part of the Indian team that won the 2011 world cup, his first win in six world cup appearances for India. He was the only Indian Cricketer included in an all of Time Test World XI named to mark the 150th Anniversary of Wisden Cricketers' Almanock, Sachin Tendulkar received the Arjuna Award in 1994 for his outstanding sporting achievement, the Rajiv Gandhi Khel Ratna award in 1997, India's highest sporting honour, and the Padma Shri and Padma Vibushan awards in 1999 and 2008, India's fourth and second highest civilian awards after a few hours of his final match on 16 Nov. 2013. The prime minister's officer announced the decision to award him the "Bharat Ratna" India's highest civilian award. He is the youngest recipient till date and the first ever sports person to receive the award. Sachin Ramesh Tendulkar is the ideal of every Indian.

-Unknown

HIMARI GANGA



Thoughts

The happiness of your life depends upon the quality of your thoughts.

Your mind is a powerful thing when you fill it with positive thoughts. Your life will start to change.

Success is not the key to happiness. Happiness is the key to success. If you love what you are doing, you will be successful.

Success is the ability to go from one failure to another with no loss of enthusiasm.

Success stand for :-

S- See your goal.

U- Understand the obstacles.

C- Create a positive mental picture.

C- Clear your mind of self doubt.

E- Embrace the Challenge.

S- Stay on track.

S- Show the world you can do it.

Suresh Kumari

B.A. 6th Sem.

Roll No. 310

Woman of Today

Bold and beautiful

Charming and graceful

She is the one who

moves the world.

There is gentleness in her words.

She is not afraid of anything.

She is a doctor, She is a teacher

Beautiful in her every feature,

She loves, cares and sacrifices.

All are equal in her eyes.

She has love, She has power,

She is sweet, She is sour.

She is the woman of today,

In her praise

What else can I say?

Raksha

Roll. 309

B.A. 6th Sem.

Thoughts

Don't compare yourself with anyone in the world. But If you do this, you are insulting yourself.

Politeness is sign of nice person.

Life is so shortbut you have to make it sweet.

Everybody gets time change for life. But don't again get life change for time.

If you tell the truth you don't have to remember anything.

Bandna Sharma

Roll No. 262

B.A 6th Sem.



HIMARI GANGA

Buddhism

The Buddha

- Also known as Sakyamuni or Tathagata.
- Born in 563 on the Vaishakha Poornima Day at Lumbini near Kapilavastu) in Nepal?
- His father Suddhodana was the Saka ruler.
- His mother (Mahamaya of Kosala dynasty) dies after 7 days of his birth. Brought up by step-mother Gautami.
- Married at 16 to Yashodhara. Enjoyed the married life for 13 years and had a son name Rahula.
- After seeing an old man, a sick man, a corpse and an ascetic, he decided to become a wanderer.
- Left his palace at 29 in search of truth (also called 'Mahabhinishkramana' or The Great Renunciation) and Wandered for 6 years.
- Attained 'Enlightenment' at 35 at Gaya in Magadha (Bihar) under the Banyan tree.
- Delivered the first sermon at Sarnath where his five disciples has settled. His first sermon is called 'Dharamachakra pravartan' at Turning of the wheels of law?
- Attained Mahaparinivana at Kushinagar (identical with village Kasia in Deoria district of UP) in 483 BC at the age of 80 in the Malla republic.

Buddhist Councils :

- **First Council** : At Rajgriha, in 483 BC under the chairmanship of Mehakassaapa (King was Ajatshatru) Divided the teachings of Buddha into three pitaka-Vinaya pitaka , Satta pitaka and Abhidhamma pitaka.
- **Second Council** : At Vaishali, In 383 BC under Sabakami (King was kalasoka) followers divided into Sthavirmadius and Mahasonghikas.
- **Third Council** :- At Pataliputra, in 250 BC under Mogaliputta Tissa (King was Ashoka) In this, the third part of Pripitaka was coded in the pali language.
- **Fourth Council** :- At Kashmir (Kundalvand) in 72 AD under Vasumitra (King was Kanishka, Vice Chairman was Ashwaghosha) Divided Buddhism into Mahayana and Hinayana Sects.

Buddist Literature

- In Pali Language VINAYA PITAKA.
- Rules of discipline in Buddhist monasteries SUTTA PITAKA.
- Largest , Contains collection of Buddha's Sermons ABHIDHAMMA PITAKA.
- Explanation of the Philosophical printers of the Buddhist religion.

Madhu

B.A. 6th Sem.

Roll No. 280001



Positive Attitude

Adopting a positive attitude as a way of life which will help you cope more easily with your daily affair of life and would bring constructive changes into your life. A positive attitude will make you an optimist and help you avoid worries and negative thoughts.

Developing this attitude would make you a happier person, who sees the bright side of life and expects the best to happen. It is certainly a state of mind that will be worth developing.

What is a positive attitude? Here are a few definitions that attempt to describe what is a positive attitude and how it manifests.

1. It is a mental state that expects the best to happen. It is actually positive thinking, the habit of believing that things would turn well and not allowing negative thoughts and doubts to disturb this belief.
2. It is constructive thinking, you think about solutions and believe that you can find them.
3. It is creative thinking- Looking at life and situations with a broader vision and finding creative solutions with a positive attitude, you are not afraid to look for new ways of doing things that make you unique and can help you do things in a better way than others.
4. Optimism :- This is one of its main characteristics. It means hope and expecting situations to improve and plans to turn out well.
5. Motivation :- This is the energy and zest to do things and accomplish goals. When motivation is present you are keen on doing, spending energy and time on work, studies or accomplishing a goal. When you are sure of yourself, believe in your abilities and don't allow any thing to discourage you, you become motivated.
6. Happiness-A person with a positive attitude is usually happy and contented. How do you know that you have positive attitude?

A positive frame of mind can help you in many ways and in many situations :

1. Do you expect a successful outcome of your actions?
2. Do you inspire and encourage yourself and other people?
3. Not giving up and not feeling down when meeting obstacles and encountering problems?
4. You look at failure and problems as blessing in disguise. You learn from them, so you don't repeat them.
5. You believe in your self and in your abilities and skills.
6. Do you feel that you possess enough self-esteem and self-confidence to handle confidently the affairs of your daily life?
7. Do you look for solutions, instead of dwelling on problems?
8. Do you have the positive frame of mind in the ability to stay immune to negative thoughts.?



HIMARI GANGA

A positive attitude leads to happiness and success and can change your whole life.

Negative attitude says : You can't achieve success.

Positive attitude says : You can achieve success.

The benefits of a positive attitude :

- It helps you achieve goals and attain success.
- It can bring more joy into your life.
- It makes you a pleasant person and easier to be liked and gain friends.
- It produces more energy, enthusiasm, interest, and even curiosity making life more interesting.
- Positive attitude increases your confidence.
- It enhances your motivation when carrying out task and working on goals.
- When you feel good and happy and expect good things to happen, life smiles at you.

Simple tips to improve Positive attitude :-

1. Choose to be happy and refuse negative thoughts.
2. Look at the bright side of life. Its a matter of choice and repeated attempts.
3. Choose to be optimistic. Choose to believe that things would change for the better.
4. Find reason to smile more often. You can find such reason, if you look around you. There are funny events that make you smile.
5. Have faith in your self, believe that the universe can help you.
6. Associate yourself with happy people since happiness is contagious.
7. Read inspiring stories about inspiring happy or successful people. Don't envy them or be jealous of them.
8. Read inspiring quotes. You can find such quotes on the internet and at our quotes directory. I suggest you to read a few in the morning. If before going to work, and at night, before you go to sleep.
9. Repeat affirmations to inspire and motivate you.
10. Visualize only what you want to happen in your life.
11. Learn to develop a focused mind and master our thoughts when you can focus, you can direct your attention more easily to thoughts that you choose and avoid negative thoughts.

Following even only one of the above suggestions will bring more happiness and joy into your life.

Ashish Thakur
B.A. 6th Sem.
Roll No. 15404



Drang at Narla College is the Best

"There are many stars in the sky, but some of them twinkle very high.

I know such stars and you know too. Stars are on every body's lips as well as on every body's

tongue."

Drang at Narla College is situated near the village of Junder, Pristine beauty of nature. Maa Shagwati's blessings are always on our college. Drang at Narla College is the most conducive place to earn knowledge, name and fame with brilliant faculty members and obedient students. The institution is stepping the stone of success every day. It is meant for students who are bright and young. I have the pride and trust on my college. The students are like earth's crust whether they go to the east or to the west.

Dimpal Bhardwaj
B.A. 6th Sem.



Jokes



1. Girl : You would be a good dancer except for two things.
Boy : What are the two things?
Girl : Your feet.
2. Patient : Doctor, I have pain in my eye whenever I drink tea.
Doctor : Take the spoon out of the mug before you drink.
3. A teacher asked a student to write 55.
Student asked : How ?
Teacher : Write 5 and beside it another 5.
The student wrote 5 and stopped.
Teacher : What are you waiting for ?
Student : I don't know which side to write the other 5.
4. A : Do you want to hear a dirty joke?
B : Ok
A : A white horse fell in the mud.



Mamta Kumari
B.A. VI Semester
Roll No. 279



HIMARI GANGA

It Could n't be done

Somebody said that it could n't be done,
 But, he with a chuckle replied
 that "May be it could n't, but he would be one".
 Who would n't say so till he had tried.
 So he buckled right in with the trace of grin
 on his face. If he worried he hid it.
 He started to sing as he tackled the thing.
 That could n't be done, and he did it.
 Some body scoffed : "Oh, you'll never do that;
 At least no one has done it"
 But he took off his coat and he took off his hat
 And the first thing we knew held began it.
 With a lift of his chin and a bit of a grin,
 without any doubting.
 He started to sing as he tackled the thing
 That could n't be done, and he did it
 There are thousands to point out to
 you are by one,
 The dangers that wait to assail you.
 But just buckle it in with a bit of a grin,
 Just take off your coat and go to it,
 Just Start to sing as you tackle the thing
 That "Could n't be done" and you'll do it.

Nikhil Dharwal
 Roll No. 233 (330015)
 B.A. VI Sem.

Love's Philosophy

The fountains mingle with the river
 And the rivers with the ocean,
 The winds of heaven mix for ever
 with a sweet emotion,
 Nothing in the world is single,
 All things by a law divine
 In one spirit meet and mingle.
 Why not I with thine?
 See the mountains kiss high heaven
 And the waves clasp are another,
 No sister flower would be forgiven
 If it disclaimed its brother,
 And the sunlight clasps the earth
 And the moon beams kiss the sea:
 What is all this sweet work worth
 If thou kiss not me?

Nikhil Dharwal
 Roll No. 233 (330015)
 B.A. VI Sem.

The Tradition

Some folks just don't get it ,
 They think owning cattle make no sense.
 It fakes too much time, too much equipment.
 not to mention the expense
 But the fondest memories of my life
 they might think sound funny
 Were made possible by Mom and Dad,
 beause they spent the time

and spent the money.
 You see, the most important lessons
 helping values grow so strong,
 Come from loving cattle
 and passing that tradition on.

Anjana Rana
 B.A. VI Sem.
 Major -English

HIMARI GANGA



Tradition and the Individual Talent

The difference between the present and the past is that the conscious present is an awareness of the past in a way and to an extent which the past's awareness of itself cannot show.

Yet if the only form or tradition, of handing down, consisted in following the ways at the immediate generation before us in a blind or timid adherence to its successes, "tradition" should positively be discouraged.

We have been many such simple currents soon lost in the sand, and novelty is better than repetition. Tradition is a matter of much wider significance. It cannot be inherited, and if you want it you must obtain it by great labor. The historical sense completes a man to write not merely with his own generation in his bones, but with a feeling that the whole of the literature of Europe from Homer and within it the whole of the literature of his own country has a simultaneous existence and composed a simultaneous order. This historical sense, which is a sense of the timeless as well as of the temporal and of the timeless and of the temporal together, is what makes a writer traditional. And it is at the same time what makes a writer most actually conscious of contemporaneity.

The poet mind is in fact a receptacle for seizing and storing up numberless feelings, phrases, images, which remain there until all the particles which can unite to form a new compound are present together.

No poet, no artist of any art, has his complete meaning alone. His significance, his appreciation is the appreciation of his relation to dead poets and artists. You cannot value him alone, you must see him, for contrast and comparison, among the dead. I mean this as a principle of aesthetic, not merely historical criticism. What happens when a new work of art is created is something that happens simultaneously to all the works of art which preceded it... The poet who is aware of this will be aware of great difficulties and responsibilities.

Anjana Rana
B.A. VI Sem.
Major -English

Importance of Trees

Trees are a great gift of nature to humanity. They are like saints who live and die for others. They are sources of sustenance to us. They give us shade, flowers, fruit and add to the beauty of the surroundings. They breathe out oxygen without which we would not be able to survive. They provide fuel to the poor and furniture for buildings. They serve us in every way and in all states. They keep the weather well in control. They bring rain, check floods and preserve soil. For the development of a nation the trees have a great importance. Starting from the bullock cart to the heavy ship we cannot do without trees. The whole civilization will collapse if there are no trees. They are the very life and food of us.

Suresh Kumar
B.A. VI Sem.



Just Think About Your life

1. We have created higher buildings but have forgotten to touch our parent's feet.
2. We are spending so much, but do not enjoy.
3. We have bigger houses but smaller families .
4. We are short of time but spend hours online.
5. We have great knowledge but a little ability to make decisions.
6. We have alot of drugs but the body is not healthy.
7. We have been to the moon, but find it hard to go across the street to a neighbor's house.
8. We have conquered space but then could not reach their conscience.
9. Food is more than nutrition.
10. We have more freedom than happiness.
11. Search for knowledge, more and more studies, focus on the shifting landcapes admire your needs.
12. Life is just a series of moments of happiness not only life.
13. Try not to lose any moment of joy in your life .
14. Everyday, hour and minute is extremely important, you might not find it again.

Surender Kumar
Roll No.259
B.A. 6th Semester.

School life

Most Irritating Moments

-Morning Alarm

Most Difficult Task

-To find Socks

Most Dreadful Journey

- Way to Class

Most Lovely Time

-Meeting Friends

Most Tragic Moments

-Surprise Test in 1st Period

Most Wonderful News

-Teacher is Absent

Asha Devi
B.A. 6th (Sem.)
Roll No. - 212

Laugh for a while

1. Wife : Had your Lunch?
Husband : Had your Lunch?
Wife : I am asking you.
Husband : I am asking you.
Wife : You copying me?
Husband : You copying me?
Wife : Lets go shopping.
Husband : I had my Lunch.
2. Brother : Hey dad, I got a girlfriend.
Dad : Good job son.
Sister : Hey daddy, I got a boy friend.
Dad : loads shotgun.
3. Teacher : Did your father help you with your home work?
Student : No, he did it all by himself.

Asha Devi
Roll No.212
B.A. 6th Semester.

HIMARI GANGA



Indian Scientists

Indian Scientists have capacity, capability,
skill and knowledge
To make new discoveries,
To traverse untrodden paths.
To study stones unturned,
To marvel in astronomy.
To research in Antarctica,
But they have to suffer
Due to lack of
The much deserved recognition.
And the absence of scientific temperament
In the general masses,
That is why we are unable
Unable to utilize their abilities
To the maximum.
And have to face,
The problem of brain drain.
We are unable to provoke them
To work for their nation
And to bless us,
With modern scientific developments.
So that we can compete
With this fast moving modern world.

Kalpna Devi
B.A. 6th Sem.
Roll No. - 243

Proverbs

- Haste makes waste.
- Good mind - Good Find.
- Great Cry Little Wool.
- Small wits great beast.
- Beauty has wings.
- A drop in the Ocean.
- Oil and truth must come out.

Anita Devi
Roll No. 233
B.A. VI Sem.

Suggestion for Success

Be honest.
Have a graceful heart.
Talk slow, but think quick.
Take good care of those you love.
Utilize the every moment of day.
Never be ashamed of honest tears.
Be loyal, be honest, be a self starter.
Commit yourself to contact improvements.
Best way to get noticed is, to do good works.
Believe in the thought. Its never too late.
Treat anyone you meet like,
you want to be treated.
Give people more than they expect,
and do it cheerfully.

Raksha
Roll No.-309
B.A. 6th Sem

Jokes

1. Santa went to court
Judge : Order! Order!
Santa : 1 Pizza, 2 Dosa, 3 Idli, and
1 cold drinks
Judge : Shut up!
Santa : No, No ... 7-up!
2. A Sardar learning English introduces his
family in the party - Hi I am Sardar.
This is my sardarni.
He is my kid.
She is my kidney.
3. English Teacher : Make a sentence using
Neither-Nor
Naughty boy student : When girls wear
tight fitting dresses neither are they
comfortable nor we are.

Joginder Singh
Roll No. : 257
B.A. 6th Sem.



HIMARI GANGA

Trees

I think that I shall never see,
A poem lovely as a tree.

A tree whose hungry mouth is preset
Against the earth's sweet flowing breast.

A tree that looks at God all days,
And lifts its leafy arms to pray.

A tree that may in summer wear
A nest of robins in her hair.

Upon whose bosom snow has lain
Who intimately lives with rain.

Poems are made by fools like me
But only God can make a tree.

Pushpa Devi
Roll No. 208
B.A. 6th Sem.

The Word "Mother"

M is for millions of things she gives me.
O is for the love she offers me.
T is for the tears she sheds for me.
H is for her heart, crystal and very lovely.
E is for her eyes, full of love.
R is for reverence, I extend to her.

Neelam Kumari
Roll No. 15107
B.A. IVth Sem.

HIMARI GANGA

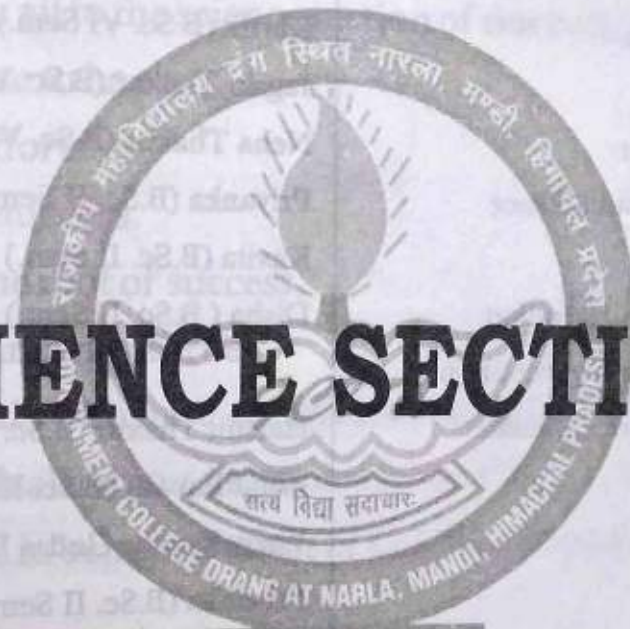


Himari Ganga

College Magazine
2016-17 & 2017-18



SCIENCE SECTION



स्थापित 2006

Teacher Editor
Dr. Meena Kumari

Student Editor
Neha Thakur
B.Sc. 6th Sem.
R.N. 15610

Govt. College Drang at Narla
Dist. Mandi (H.P.)



HIMARI GANGA

Contents

S.N.	Topic	Written by	Page
1 .	Editorial	Neha Thakur	57
2 .	Big Bang Theory : Evolution of our Universe	Neha Thakur (B.Sc. VI Sem.)	58
3 .	Global Warming	Kajol Kumari (B.Sc. VI Sem.)	58
4 .	Is Electron a Partical Or a Wave?	Karishma (B.Sc. II Sem.)	59
5 .	Physics in our daily life	Rohit (B.Sc. II Sem.)	59
6 .	Fun and Intersting Chemistry Facts	Priyanka Verma (B.Sc. II Sem.)	59
7 .	Ebola Virus-	Kanika (B.Sc. II Sem.)	60
8 .	Cool Human Body Facts	Kartik (B.Sc. VI Sem.)	60
9 .	Black Hole	Jagriti Thakur (B.Sc. VI Sem.)	60
10.	Life of a Science Student	Neha Thakur (B.Sc. VI Sem.)	61
11.	Rarely known facts aboout Science	Priyanka (B.Sc. II Sem.)	61
12.	Drugs	Kavita (B.Sc. II Sem.)	61
13.	Do You know about Top 10 Indian Mathematician and their Contribution	Disha (B.Sc. II Sem.)	62
14.	Discovery of Inert Gaseous Element	Harshit Thakur (B.Sc. II Sem.)	62
15.	What is Chemistry?	Rohit Barwal (B.Sc. III Sem.)	63
16.	Life is just like a way	Vinay Kumar Godsa B.Sc. II Sem.)	63
17.	Oh! yeh Chemistry	Priyanka (B.Sc. II Sem.)	63
18.	Amazing Facts-	Priyanka (B.Sc. II Sem.)	63
19.	Srinivasa Ramanujan The great Scientist	Sanjay Kumar (B.Sc. II Sem.)	64
20.	Facts about Science	Kanika (B.Sc. II Sem.)	65
21.	History of Science	Aditya Kumar (B.Sc. II Sem.)	65
22.	Maths Jokes	Nishant (B.Sc. II Sem.)	66
23.	Winners versus Losers	Aman Mahant B.Sc. II Sem.)	66
24.	Ozone layer depletion	Kapil (B.Sc. II Sem.)	66



Editorial

Dear Readers,

It's a thing of great pleasure that I have been selected as an editor of the "Science Section" of the college magazine. I would like to thank my teachers who gave me the opportunity to be a part of this magazine.

This magazine provides a platform to the students to express their creative ideas about various issues. Writing is to the mind what exercise is to the career. I heartily welcome you all to the science section of our college magazine.

"Dreams give rise to hope.

Hope inspires efforts

Efforts result in success.

So dreams are the root of success.

Let all your dreams come true."

I think my friends who have contributed. I wish write ups for this section of the magazine. I wish all of you a meaningful and blissful life.

Personally, I take pride in being a student of G.D.C. Drang at Narla.

Neha Thakur

BSc. 6th Sem. (Chemistry)

Roll No. 15610





Big Bang Theory : Evolution of our Universe

How was our universe created? How did it come to be the seemingly infinite place we know of today? And what will become of it ages from now? These are the questions that have been puzzling philosophers and scholars since the beginning of the time and led to some pretty wild and interesting theories.

Most astronomers believe the universe began in a Big Bang about 13.8 billion years ago. At that time the entire universe was inside a bubble that was thousand of times smaller than a pinhead. It was hotter and denser than anything we can imagine.

Then it suddenly exploded. The universe that we know was born. Time, space and matter all began with the Big Bang. In a fraction of a second, the universe grew from smaller than a single atom to bigger than galaxy. And it kept on growing and is still expanding today.

As the universe expanded and cooled energy changed in particles of matter and antimatter. These two opposite type of particles largely destroyed each other. But some matter survived. More stable particles called protons and neutrons started to form when the universe was one second old.

Over the next three minutes, the temperature dropped below billion degree celsius It was now cool enough for the protons and neutrons to come together, forming hydrogen and helium nuclei. After 300,000 years, the universe had cooled to about 3000 degrees atomic nuclei could finally capture electrons to form atoms the universe filled with clouds of hydrogen and helium gas.

Neha Thakur

BSc. 6th Sem. R.N.15610

Global Warming

Global warming is the gradual warming of the Earth's atmosphere. It has resulted in an increase in the sea level. It has also led to changes in climatic conditions all over the world. Warming and cooling of the Earth's atmosphere has been a natural phenomenon. It has occurred over the ages but the warming of the atmosphere in the last few decades had been faster than before.

Global warming has been attributed to the increased emission of green house gases. The increase in the amount of green house gases has made earth warmer than usual. It is also causing great problem for the survival of planet earth.

Causes:-

Global warming is caused by natural as well as man-made causes. Natural causes such as release of greenhouse gases by wetlands and cyclic climate changes lead to an increase in amount of greenhouse gases. Burning of fossil fuels, mining coals, increase in population, and deforestation are a few causes of the many causes of global warming.

Effects of Global warming

The change in climate affects people, plants and animals. Human health is also affected by climate change. It also causes diseases such as Malaria, Dengue fever & Yellow fever. The increase in temperature has also increased the air and water pollution.

Kajol Kumari

BSc. 6th Sem.



Is Electron a Particle or a Wave?

A question comes to our mind "Is the electron really a particle or is it a wave?" and what does it look like? Up to the year 1924, the electron was exclusively regarded as a particle. However in 1924, de-Broglie suggested that the electron behaves both as a material particle and as a wave. Just like light some experimental facts can be explained assuming electron as tiny particles while some other facts can be explained only on the basis of wave character of the electrons. Thus, the electron behaves as a particle as well as a wave.

The electrons are so small that they cannot be seen even with the help of a powerful microscope. But there is no doubt regarding their existence, rather they are the essential constituents of all forms of matter. Thus, they can be imagined to look like very tiny dots executing wave like motion and moving with speed 3×10^8 m/sec.

Karishma

BSc. 2nd Sem. 17107

Physics in Our Daily Life

Physics is the science of matter and its motion. Space time and energy. Physics describes many form of energy such as kinetic energy, electrical energy and mass and the way energy can change from one form to another. Physics is all around us. We can find physics as the backbone for any daily life examples such as electricity the working of vehicle, wristwatch, cell phone, CD player, radio, TV and computer system etc.

As we all know physics is the study of natural phenomena. Some example of technology which we use in our daily life are given below:-

- 1) Television use electromagnets to direct electrons on a screen to produce
- 2) A cell phone use a microwave .
- 3) Your car is built on mechanical principles
- 4) A refrigerator uses thermodynamic principles.
- 5) Most modern homes use electricity to power appliance.

Rohit

BSc. 2nd Sem. 17115

Fun and Interesting Chemistry Facts

Chemistry is a fascinating science, full of unusual trivia! Here are some fun and interesting chemistry facts for you.

The only elements that are liquid at room temperature are bromine and mercury. However you can melt gallium by holding a lump in the warmth of your hand. Unlike many substances water expands as it freezes, an ice cube take up about 9% more volume than the water used to make it. If you pour a handful of salt into a full glass of water the level will actually go down rather than over glowing the glass.

Priynaka Verma

BSc. 2nd Sem. 17204



Ebola Virus

Family : Filoviridae

Genus : Ebola virus

No of species 5 (4 causes disease in human)

First discovered : 1976

Ebola virus are found in several African countries. Ebola was first discovered in 1976, near the Ebola river in democratic republic of Congo. Since then outbreak have appeared in Africa. The natural reservoir host of Ebola virus remains unknown. Four of five viruses strains occurs in an animal host native to Africa. Ebola is spread through direct means as with blood and body fluids as saliva, faeces, semen, vomit etc. of sick person It doesn't spread through air, water and food.

The five species of Ebola virus are:-

1. Ebola virus
2. Sudan virus
3. Forest virus
4. Bundibrigya virus
5. Reston virus

Fifth, reston virus caused diseases in non human primates.

Kanika

B.Sc. 2nd Sem. Roll No. 17202

Cool Human Body Facts

1. The brain is much more active at night than during the day
2. During your lifetime, you will produce enough saliva to fill two swimming pools.
3. Your nose can remember 50,000 different scents
4. Women's hearts beat faster than men's
5. Your eyes are always the same size from birth (but your nose and ears never stop growing)
6. The brain itself cannot feel pain
7. The largest internal organ is the small intestine
8. Sneezes regularly exceed 100 mph & nerve impulses to and from the brain travel as fast as 170 mile per hour.
9. It takes 17 muscles to smile and 43 to frown.
10. The average human brain has about 100 billion nerve cells.
11. The only jointless bone in your body is the hyoid in your throat.
12. It's impossible to sneeze with our eyes open.

Kartik

B. Sc. 6th Sem.

Black Hole

A black hole is a region in space where the pulling force of gravity is so strong that light is not able to escape. The strong gravity occurs because matter has been pressed into a tiny space. This compression can take place at the end of a star's life. Some black holes are a result of dying stars. Because no light can escape, black holes are invisible

How big are black holes?

There are three main types of black holes which determine their size and mass.

1. The smallest one are known as primordial black holes. These black holes are as small as single atoms but with the mass of a large mountain.
2. The most common medium-sized black hole is called "Stellar." Its mass can be up to 20 times greater than the mass of the sun.
3. The largest black holes are called "Supermassive." These black holes have masses greater than 1 million combined suns.

How black holes form?

Black holes formed in the early universe, soon after the big bang and some black holes form due to the collapse of the centre of massive stars upon itself.

Jagriti Thakur

B.Sc. 6th Sem.



Life of a Science Student

A Science student leads a life of care and has no time to stand and stare. The force of attraction attracts him towards his text books, When he opens the chapter of "Chemical Equilibrium" in physical chemistry, the equilibrium of his mind is disturbed. A science student has to study a number of catalysts in different chemical relation in chemistry but he has no catalyst to increase the rate of learning of his mind and brain. A science student choose the back bench in the class in order to complete his practical note book. In the examination hall, when he forgets something his heart starts to beat so fast that tremendous amount of heat energy is produced and every thing gets evaporated, ultimately he fails. A poor and pathetic life indeed.

Neha Thakur

B.Sc. 6th Sem., Roll.No.15607

Rarely Known Facts about Science

1. There is enough DNA in an average person's body to stretch from the sun to pluto and back 17 times.
2. The average human body carries ten times more bacterial cell then human cells.
3. The average person walks the equivalent of five around the world in a life time.
4. When helium is cooled to almost absolute zero or, the lowest temperature possible, it becomes a liquid with surprising properties it flows against gravity and will start running up and over the lip of a glass container.
5. Light would take 13 seconds to travel around the Earth.

Priyanka

BSc. 2nd Sem. Roll.No.17219

DRUGS

DRUGS:- A drug is any substance that when inhaled injected, smoked, consumed, absorbed via a patch on the skin or dissolved under the tongue cause a temporary physiological change in the body and often Psychological change in the body.

Facts about drugs:-

1. Drugs overdoses kill more than cars guns and falling.
2. There were 80,035 cases reported to the united states sentencing commission in fiscal year 2013 of these 22,215 involved in drug trafficking.
3. Marijuana is the most widely used illegal drug in the united states.
4. Cocaine, heroin and methamphetamines are illegal in all states and highly dangerous.
5. 65.7% of all adult illicit drug users are employed.
6. In 2008, 1.9 million youth age 12 to 17 abused prescription drugs and now the rate is increases.
7. Marijuana is legal and is not even classified as drug in North Korea.
8. Kids begin using drugs and drinking as early as 9.
9. International overdose awareness day is observed on 31 August.
10. International drug abuse day and illicit trafficking is observed on 26 June.

Kavita

B.Sc. 2nd Sem.



HIMARI GANGA

Do you know about top 10 Indian Mathematician and their contribution

1. **ARYA BHATTA** : He worked on the place value of system using letters to signify number and stating qualities. He discovered the position of nine planets and stated that these planets revolve around the sun. He also stated the correct number of days in a year 365.
2. **BRAHMA GUPTA**: The most significant contribution of Brahma Gupta was the introduction of zero (0) to the mathematics which stood for nothing.
3. **SRINIVASA RAMANUJAN**: His contribution to the field include hardy Ramanujan little wood circle method number theory, Royer Ramanujan's identities in partition of numbers, works on algebra continued fractions, partial sums & product of hypergeometric series.
4. **P.C MAHLANOBIS**: Founder of Indian statistical Institute as well as the national sample surveys for which he gained international recognition.
5. **C.R. RAO** : Calyampudi Radhakrishna Rao popularly known as C.R. Rao is well known statistician famous for his theory of estimation.
6. **DR KAPREKER**: Discovered several result in number theory, including a class of number and a constant named after him without any formal mathematical educations he published extensively and was very well known in recreational mathematics circle.
7. **HARISH CHANDRA**: He is famously known for in finite dimensional group representation theory.
8. **SATYENDERANATH BOSE**: He is known for his collaboration with Albert Einstein. He is best known for his work on quantum mechanics in the early 1920s providing the foundation for bosc Einstein statistics and theory of Bose Einstein condensate.
9. **BHASKRA** : He was the one who declared any number divided by infinity and the sum of any number and infinity is also infinity and the sum of any number and infinity is also infinity. He is also famous for his book " Siddhaute Siromani."
10. **KARMARKAR**: Narendra Karmarkar is known for his Karmakar's algorithm. He is listed as a highly cited reseachers by institute for scientific information. Its really knowledgeable and helpful.

Disha

BSc. 2nd Sem. Roll.No.17105

Discovery of Inert Gaseous Elements

The discovery of the noble gases: Neon, Krypton, Argon and Radon later isolated helium observed in the spectrum of the sun and radon is another milestone in the history of chemistry. Scottish chemist Sir Willium Ramsay who discovered these gases was awarded the noble prize in chemistry in the year 1904. Helium, neon, argon, krypton, xenon and radon, also known as rare gases because scientists believed them incapable of reacting with other elements and the outermost shell of these electron is fully filled. And uses of noble gases is:- Helium is used in supersonic wind tunnels. Neon is used to make high voltage indicator. Argon is used for welding and also light bulbs. Krypton is used in some types of photographic plashes used in high speed photography. Xenon is used in instruments for radiation detection e.g. X-ray. This emitted radiation made radon useful in cancer therapy.

Harshit Thakur

B.Sc., 2nd Sem., Roll No. 17122



What is Chemistry

Chemistry is defined as the science of matter, different from physics, in terms of matter's chemical structure, reactivity, properties and reaction or transformation. It is the science of matter, its structure, chemical reactivity and properties, and the transformations it undergoes. It is often called "The central science" because it is concerned with the fundamental energy or forces that add matter together studies in physics and the molecular systems and characteristics of the complex organisms studies in biology.

Theories of chemical bonds, resulting from the scientific philosophy of chemistry, explains not just the chemical properties of different-forms of matter but also most of physics ones. Because of the diversity of matter, chemists are often engaged in the pursuit of studying how atoms interact to form molecules, and how molecule interact with each other. Consequently, chemistry includes the study of microscopic phenomena, such as clusters of atoms and their characteristics on the nanometer scale and microscopic phenomena, such as the interaction of proteins and DNA in complex solutions and the properties of new materials.

Rohit Barwal
B.Sc. IIIrd Sem.

Life is Just Like a Way

Life is just like a way.

Where have to move forward always.

Every small and big achievement

Or hurdles during this way is just like a stoppage on a corner of this way,

Where we stand and take rest for a while but never stop.

Because still our destination is too far from us.

Any achievement shouldn't be the last aim of the life.

Always keep on working hard and try to put your best efforts without thinking what you have achieved or lost through this way.

Because still our destination is too far from us.

Vinay Kumar Godsa

B.Sc. IInd Sem., Roll no.17119

Amazing facts

1. Dolphins sleep with one eye open.
2. A cat has 32 muscles in each ear.
3. The Mona Lisa has no eyebrows.
4. An ostrich eye is bigger than its brain.
5. Elephants are the only animals that cannot jump.

Priyanka
B.Sc. IInd Sem., Roll No.-161049

Oh! Yeh Chemistry

If you find chemistry bare.

Take a few drops of H_2SO_4

If you want to go to hall.

Take just a bottle of HCl

If you want to commit suicide,

Take a dose of potassium cyanide.

If you want to catch a hen.

Smell a little quantity of C_4H_{10}

Do not go to bed.

Otherwise every bit of chemistry.

Will go out of your head friends,

Do not try to get rid.

But try till night mid.

take it as a wish.

So that it becomes a sweet dish.

Priyanka
B.Sc. IInd Sem.
Roll No.-161049



HIMARI GANGA

Srinivasa Ramanujan (1887-1920)

The Great Scientist

Srinivasa Ramanujan, born December 22, 1887, Erode India- died April 26, 1920, Kumbakanam), Indian mathematician whose contributions to the theory of numbers include pioneering discoveries of the properties of the partition function.

When he was 15 years old, he obtained a copy of George schloobridge car's synopsis of elementary result in pure and applied mathematics 2 vol. (1880-86) This collection of thousands of theorems many presented with no material newer than 1860, aroused his genius. Having verified the result in car's book Ramanujan went beyond it, developing his own theorems and ideas. In 1903 he secured a scholarship to the university of Madras but lost it the following year because he neglected all other studies in pursuit of mathematics.

Ramanujan continued his work's without employment and living in the poorest circumstance. After marrying in 1909 he began a search for permanent employment that culminated in an interview with a government official, Ramachandra Rao Impressed by Ramanujan's mathematical process, Rao supported his research for a time, but Ramanujan unwilling to exist on charity, obtained a clerical post with the Madras part trust.

In 1911 Ramanujan published the first of his papers in the journal of the Indian mathematical society. His genius slowly gained recognition and in 1913 he began a correspondence with the British mathematics God Fery H. Hardy that led to a special scholarship from the university of Madras and a grant from trinity college, Cambridge. Overcoming his religious objections, Ramanujan traveled to England in 1914, where hardy tutored him and collaborated with his in some research.

Ramanujan's knowledge of mathematics (most of which he had worked out for himself) was startling. Although he was almost completely unaware of modern developments in mathematics, his mastery of continued fractions was unequaled by any living mathematician. He worked out the Riemann series, the elliptic integrals, hypergeometric series, the functional equations of the zeta function and his theory of divergent serious. On the other hand, he know nothing of doubly periodic functions, the classical theory of quadratic forms, or cauchy's theorem, and he had only the most nebulous idea of what constitutes a mathematical proof. Though brilliant, many of his theorems on the theory of prime numbers were wrong.

In England Ramanujan made further advances especially in the partition of number (the number of ways that a positive integer can be expressed as the sum of positive integers , e.g. 4 can be expressed as 4, 3+1, 2+2, 2+1+1, and 1+1+1+1) his papers were published in English and European journals, and in 1918 he was elected to the Royal society of London. In 1917 Ramanujan had contracted tuberculosis but his condition improved sufficiently for him to return to India in 1919. He died the following year, generally unknown to the world at larger but recognized by mathematians as a phenomenal genius, without peer since Leonhard Euler (1707-83) and Corl Jacobi (1804-51) Ramanujan left behind three notebooks and a sheaf of pages (also called the 'last notebook') containing many unpublished result that mathematicians continued to verify long after his death.

Sanjay Kumar
Class- B.Sc. IInd Sem.
Roll no.-17134



HIMARI GANGA

Maths Jokes

1. What happened to the plant in Math's class?
It grew square roots.
 2. What did the math book say to the other math book?
I've got too many problems.
 3. Who invented algebra?
A clever X-pert.
 4. Why was 6 afraid of 7?
Because 7 ate 9.
 5. If there were 10 copy cats in a boat and one jump out how many are left.
None, they were all copycats.
- Meaning of smart.
- S - Specific
 - M - Measurable
 - A - Attainable
 - R - Ballistic
 - T - Time-bond.

Nishant

B.Sc. IInd Sem., Roll No.-17106

Winners Versus Losers

The winners is always for part of the answer.
The loser is always past of the problem.
The winners says, " Let me do it for you."
The loser says, "That is not my job."
The winner sees an answer for every problem,
The loser sees a problem for every answer.
The winner says, "It may be difficult but it is possible",
The loser says, "It may be possible but it is too difficult."
A winner makes commitments,
A loser makes promises.
Winner seen the potential,
Loser see the post.
Winner makes it happen,
Losers let it happen.

Aman Mahant

B.Sc. IInd Sem., Roll No.-17125

Ozone Layer Depletion

Ozone layer depletion is one of the most serious problems forced by our planet earth. It is also one of the prime reasons which are leading to global warming. Ozone is a colourless gas which is found in the stratosphere of our upper atmosphere. The layer of ozone gas is what which protects us from the harmful ultraviolet radiations of the sun. The ozone layer absorbs these harmful radiations and prevents these rays from entering the earth's atmosphere. Ultraviolet radiations are high energy electromagnetic waves emitted by the sun which if enters the earth's atmosphere can lead to various environmental issues for all living organisms. Thanks to ozone layer which protects us from these harmful rays.

From the 1970s the depletion of the ozone layer started to capture the attention of the scientists environmentalists and the world community at large. There had been a lot on this topic over these years to find out all possible causes that lead to this problem.

Kapil

B.Sc. 2nd Sem., Roll No.-17208

HIMARI GANGA

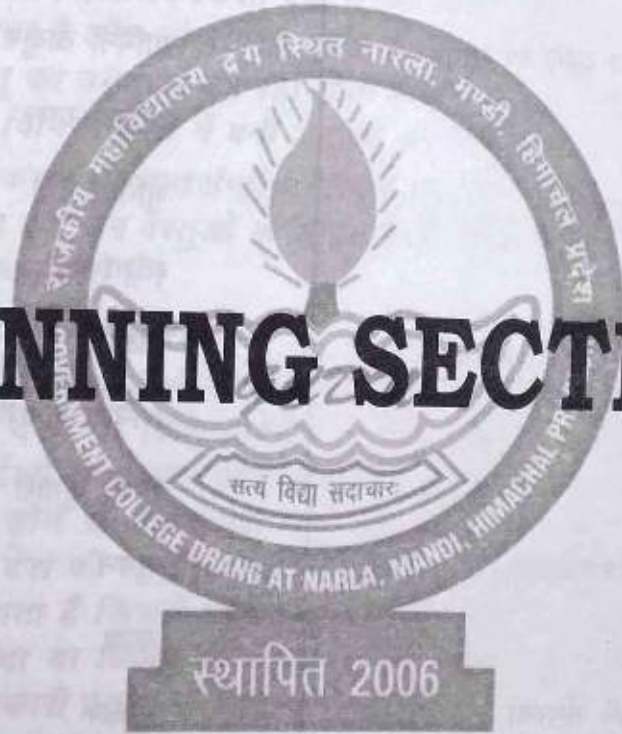


Himari Ganga

College Magazine
2016-17 & 2017-18



PLANNING SECTION



प्राध्यापक सम्पादक
मेहर चन्द

छात्र सम्पादिका
रीना कुमारी एवं
बी.ए. षष्ठ सत्र

छात्र सम्पादक
अंकित
बी.ए. षष्ठ सत्र

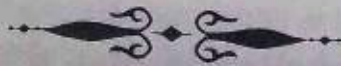
Govt. College Drang at Narla
Dist. Mandi (H.P.)



HIMARI GANGA

विषय सूची

क्र.स.	विषय	छात्र का नाम	पृष्ठ
1.	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार	रीना कुमारी	69
2.	भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र	ममता कुमारी	70
3.	हरित क्रान्ति	गंगा	71
4.	कृषि सब्सिडी	जया देवी	72
5.	कृषि सुधारों का भारतीय कृषि पर प्रभाव	यामिनी ठाकुर	73
6.	केन्द्रिय बैंक	अंकित राणा	74
7.	भारत में आर्थिक असमानताएं	सुनिता देवी	74-75
8.	मेक इन इण्डिया	आशा देवी	75
9.	विमुद्रीकरण	दीक्षा	76
10.	ग्रामीण ऋणग्रस्तता	अनिता कुमारी	77
11.	नीति आयोग	निशा कुमारी	78
12.	भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या	सुमन	79
13.	मनरेगा	माया	80
14.	भारत में बेरोजगारी की समस्या	पंकज	80





अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार दो देशों या राष्ट्रों के बीच होने वाला व्यापार है। जैसे भारत और अमेरिका के बीच होने वाला व्यापार। भारत से जो सामान अथवा वस्तुएं अमेरिका को भेजी जाएंगी उसे भारत का निर्यात कहा जाएगा और जो सामान या वस्तुएं अमेरिका से प्राप्त की जाएंगी उसे भारत का आयात कहा जाएगा।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का आधार :-

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार किए जाने का एक मुख्य कारण विभिन्न देशों में पाया जाने वाला लागतों का अन्तर है। यह दो प्रकार का हो सकता है— तुलनात्मक लागतों का अन्तर और निरपेक्ष लागत अन्तर। निरपेक्ष लागत अन्तर से अभिप्राय है कि एक देश किसी दूसरे देश की तुलना में किसी वस्तु को अधिक सस्ती कर सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में किसी एक विशेष साधन की अनुपस्थिति होती है। सभी देशों को उत्पादन करने के लिए उत्पादन के साधनों की आवश्यकता होती है परन्तु प्रत्येक देश के पास उत्पादन के सभी साधन मौजूद नहीं रहते। इसलिए किसी देश में जो साधन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है उससे बनी वस्तुओं का निर्यात किया जाता है और जो साधन दुर्लभ हैं उनसे बनी वस्तुओं का आयात किया जाता है। कोई देश कई बार किसी वस्तु का उत्पादन कर रहा होता है फिर भी वह उस वस्तु का आयात करता है। यह इसलिए किया जाता है ताकि विभिन्न देशों में बनी वस्तुओं का प्रयोग कर सके।

अन्तर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का मुख्य आधार है। अन्तर्राष्ट्रीय विशिष्टीकरण से अभिप्राय संसार के विभिन्न देश उन वस्तुओं के उत्पादन में विशिष्टीकरण प्राप्त करते हैं जिनके उत्पादन के लिए उनके पास विशेष साधन होते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का महत्व या लाभ :-

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से दोनों देशों को लाभ भी मिलता है और आपस में सम्बन्ध भी अच्छे होते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से सभी देशों के विशिष्टीकरण में वृद्धि होती है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में विभिन्न अल्पविकसित देश विकसित देशों से व्यापार करने लगते हैं। इससे आर्थिक विकास में वृद्धि होने लगती है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि होने से निवेश का स्तर बढ़ जाता है। जिससे उत्पादन भी बढ़ता है और रोजगार भी बढ़ता है। इससे देश की राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने लगती है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में विभिन्न देशों के बीच व्यापार होने लगता है जिससे सभी देशों में प्रतियोगिता की भावना पैदा होती है। जब किसी देश पर कोई प्राकृतिक आपदा या विपदा का प्रकोप पड़ता है तो अन्य देश उसकी सहायता करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से एकाधिकारी प्रवृत्ति भी समाप्त हो जाती है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की हानियाँ :-

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से हानियाँ भी होती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से राशिपातन भी होता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण विभिन्न देश अधिक लाभ कमाने के लिए अधिक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं परन्तु यदि विदेशों में एक दम माँग कम हो जाए तो अति उत्पादन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जिससे देश की अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण प्रत्येक देश दूसरे देशों पर निर्भर रहता है यदि किसी कारणवश उस देश में वस्तुओं का उत्पादन बन्द जाए तो इन देशों को इन वस्तुओं की दुर्लभता का सामना करना पड़ता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण कई बार ऐसी नशीली या विलासिता की वस्तुओं का आयात किया जाता है जिनका देश की अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अतः भले ही अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की हानियों को दिखाया गया हो फिर भी यह सत्य है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रत्येक देश के आर्थिक विकास का एक आवश्यक तत्व है।

रीना कुमारी

बी.ए. छठा समैस्टर, रोल न. 255



HIMARI GANGA

भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र

भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का बहुत ही तीव्र गति से विकास हो रहा है। आज सेवा क्षेत्र के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान अन्य क्षेत्रों से अधिक है। वर्ष 2014-15 में सेवा क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में 52.6 प्रतिशत योगदान था। भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्र—प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र व सेवा क्षेत्र परस्पर निर्भर है। ये क्षेत्र या तो दूसरे क्षेत्रों के उत्पादों को आगत के रूप में प्रयोग करते हैं या अपने अंतिम उत्पादों को अन्य क्षेत्रों को उनके आगतों के रूप में उपलब्ध करवाते हैं। प्राथमिक क्षेत्र के अंतिम उत्पाद द्वितीयक क्षेत्र के आगत बन जाते हैं अर्थात् प्राथमिक क्षेत्र को अपने उत्पाद बेचने के बाजार द्वितीयक क्षेत्र से मिलता है। दूसरी तरफ द्वितीयक क्षेत्र अपनी आगतों के लिए प्राथमिक क्षेत्र पर निर्भर होता है। इसी तरह सेवा क्षेत्र, प्राथमिक क्षेत्र व द्वितीयक क्षेत्र दोनों को सेवाएं उपलब्ध करवाता है। प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्र विभिन्न सेवाओं जैसे परिवहन, बैंकिंग, बीमा, संचार, स्टोरेज, व्यापार आदि के लिए तृतीयक क्षेत्र पर निर्भर होते हैं। इन सेवाओं के बिना प्राथमिक क्षेत्र व द्वितीयक क्षेत्र का विकास संभव ही नहीं है। इसी तरह सेवा क्षेत्र को अपनी सेवाओं के लिए बाजार प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्र में ही मिलता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवाओं में वे आर्थिक क्रियाएं शामिल हैं जिनके अंतिम उत्पाद भौतिक प्रकृति के नहीं हैं। प्रायः सेवा का उपभोग उसके सृजन के समय ही हो जाता है। सेवा की उपयोगिता आराम, सुलभता, मनोरंजन, उपचार व समय की बचत आदि के रूप में होती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र के विकास के कारण—

- 1 आय स्तर में वृद्धि के कारण इस समूह के लोग कुछ सेवाओं जैसे होटलों, मनोरंजन, आंतरिक सजावट, निजी स्कूलों और कोचिंग आदि की अधिक मांग करने लगे हैं।
- 2 महिलाओं के नौकरी व व्यवसायों में भागीदारी के कारण कार्यकारी महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है।
- 3 सूचना व तकनीकी सेवाओं के विकास से विभिन्न सेवाओं का बहुत विकास हुआ है। जैसे कॉल सेंटर, इंटरनेट कैफे, एटीएम बूथ एवं साफ्टवेयर विकास आदि।

भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की भूमिका या महत्त्व—

- 1 राष्ट्रीय आय में योगदान — पिछले कुछ वर्षों में सेवा क्षेत्र का राष्ट्रीय आय में योगदान अत्यधिक बढ़ा है।
- 2 आराम व सुविधा में वृद्धि — बहुत सी सेवाएं, जैसे— होटल, पर्यटन, मनोरंजन, भ्रमण, सेवाएं लोगों को आराम व सुविधा प्रदान करती हैं।
- 3 सेवा क्षेत्र में बहुत से लोग रोजगार प्राप्त करते हैं। जैसे— साफ्टवेयर, वायु परिवहन, मनोरंजन, पर्यटन, बी.पी.ओ. व शेयर-दलाल आदि। विकसित देशों में सेवा क्षेत्र का रोजगार सृजन में महत्त्वपूर्ण योगदान है। यू0 एस0 ए0 में सेवा क्षेत्र कुल कार्यकारी जनसंख्या के 81 प्रतिशत लोगों को रोजगार प्रदान करती है। इंग्लैंड में 79 प्रतिशत, फ्रांस में 72 प्रतिशत, जापान में 70 प्रतिशत, जबकि भारत में कुल कार्यकारी जनसंख्या के केवल 26.8 प्रतिशत को सेवा क्षेत्र में रोजगार मिल रहा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का विकास —

भारत में पिछले वर्षों में सेवा क्षेत्र का बहुत विकास हुआ है परन्तु सेवा क्षेत्र का उत्पादन मूल्य कृषि व उद्योगों के उत्पादन मूल्य से अधिक है।

- 1 भारत के सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का योगदान निरन्तर बढ़ रहा है। वर्ष 1950-51 में सेवा क्षेत्र का जी.डी.पी. में 29 प्रतिशत योगदान था।
- 2 रोजगार सृजन में सेवा क्षेत्र का योगदान बढ़ रहा है वर्ष 1970-71 में सेवा क्षेत्र का रोजगार सृजन में 16 प्रतिशत योगदान था। वर्ष 2011-12 में यह बढ़ कर 26.8 प्रतिशत हो गया।
- 3 कुछ क्षेत्रों में सेवा प्रदान करने वाली घरेलू इकाइयों के साथ —साथ सेवा उपलब्ध कराने वाली विदेशी इकाइयों ने भी भारत में सेवाएं उपलब्ध करवानी शुरू कर दी है। जैसे :- रिलायन्स, टाटा, एयरटेल व वोडाफोन आदि ने भारत में दूरसंचार सेवाएं उपलब्ध करवानी शुरू कर दी है।

ममता कुमारी
बी.ए. छठा सत्र, रोल न. 238



हरित क्रान्ति

भारत में 1967-68 वर्ष में हरित क्रान्ति की शुरुआत हुई। 1967-68 में अनाज के उत्पादन में 1966-67 की तुलना में लगभग 25 प्रतिशत वृद्धि हुई। अर्थशास्त्रियों ने अनाज के उत्पादन में होने वाली इस वृद्धि को हरित क्रान्ति का नाम दिया। हरित क्रान्ति का उद्देश्य कृषि उत्पादन व कृषि उत्पादकता दोनों को ही बढ़ाना है।

हरित क्रान्ति का अर्थ — हरित क्रान्ति से अभिप्राय कृषि उत्पादन में होने वाली उस भारी वृद्धि से है जो कृषि की नई नीति अपनाने के कारण हुई है। हरित क्रान्ति के जनक डॉ० नॉरमन ई० बरलॉग हैं तथा भारत में हरित क्रान्ति के जनक एम० एस० स्वामीनाथन हैं।

हरित क्रान्ति के कारण / हरित क्रान्ति में योगदान देने वाले तत्त्व—

- 1 **उन्नत बीज**— भारत में कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए अधिक उपज देने वाले उन्नत बीजों का प्रयोग अधिक महत्वपूर्ण है। यह प्रयोग 1966 में आरम्भ किया गया था। यह विशेष रूप से पांच फसलों गेहूँ, चावल, बाजरा, मक्का और ज्वार के लिए अपनाया गया।
- 2 **रासायनिक खाद**— रासायनिक खादों के उपयोग के फलस्वरूप भी अनाज के उत्पादन में काफी अधिक वृद्धि हुई है।
- 3 **सिंचाई**— सिंचाई के क्षेत्र में हुई वृद्धि का भी हरित क्रान्ति पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। वर्ष 2015-16 में देश में सिंचाई क्षमता में सुधार के लिए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना शुरु की गई है।
- 4 **बहु-फसलें**— सिंचाई की उचित व्यवस्था तथा कम समय में तैयार होने वाले बीजों के कारण एक खेत में एक साल में कई फसलें बोई जाने लगी। इस कारण उत्पादन में भी अत्यधिक वृद्धि हुई।
- 5 **आधुनिक कृषि यंत्र**— आधुनिक कृषि यंत्र जैसे— ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, पंपिंग सेट आदि का प्रयोग बहुत अधिक बढ़ गया। इनका प्रयोग बढ़ जाने के कारण उन्नत बीज और वर्ष में कई बार खेती सम्भव हो सकी है।
- 6 **कृषि अनुसंधान**— स्वतंत्रता के बाद कृषि से संबंधित विभिन्न समस्याओं पर काफी खोज की जा रही है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् इस विषय में काफी कार्य कर रहा है।
- 7 **विपणन सुविधाएं**— किसानों को पहले अपना उत्पादन अनियंत्रित मंडियों में बेचना पड़ता था जहां उन्हें अपनी फसल की उचित कीमत नहीं मिलती थी और इस कारण वे कृषि के विकास पर अधिक धन खर्च नहीं कर पाते थे। परंतु अब कृषि उत्पादन की बिक्री में काफी सुधार हो गया है।
- 8 **भू-संरक्षण**— हरित क्रान्ति का विस्तार करने के लिए भू-संरक्षण का कार्यक्रम लागू किया गया है। इसके दो उद्देश्य हैं एक तो मिट्टी के कटाव को रोकना तथा दूसरे उबड़-खाबड़ भूमि को समतल करके खेती योग्य बनाना। इसके फलस्वरूप कृषि के क्षेत्रफल का विस्तार हुआ है।

हरित क्रान्ति क्रांति के प्रभाव —

- 1 **उत्पादन में वृद्धि**— हरित क्रान्ति के फलस्वरूप 1967-68 और उसके बाद के वर्षों में फसलों के उत्पादन में बड़ी तीव्र गति से वृद्धि हुई है।
- 2 **खाद्यान्न के आयातों में कमी**— हरित क्रान्ति से भारत में खाद्यान्न के आयात पहले की अपेक्षा कम होने लगे हैं। इसके कारण भारत में आत्मनिर्भरता बढ़ी है।
- 3 **उद्योगों का विकास**— हरित क्रान्ति के कारण उद्योगों के विकास में सकारात्मक प्रभाव पड़ा। कृषि यंत्रों से जुड़े उद्योगों का अधिक विकास हुआ। ट्रैक्टर, श्रेशर आदि बनाने के बड़े-2 उद्योग स्थापित किये गये।
- 4 **कीमतों पर प्रभाव**— तीसरी योजना में कीमतों में और विशेष रूप से कृषि पदार्थों की कीमतों में बहुत तेजी से वृद्धि हुई परंतु हरित क्रान्ति के फलस्वरूप इस वृद्धि की गति कम हो गई है।
- 4 **आर्थिक विकास का आधार**— कृषि उत्पादन में होने वाली वृद्धि से देश के आर्थिक विकास में सहायता मिली है। हरित क्रान्ति से कृषि विकास को बढ़ावा मिला है। इससे औद्योगिक व सेवा क्षेत्र के विकास को भी बढ़ावा मिला है।

गंगा

बी.ए. छठा समैस्टर, रोल न० 230



HIMARI GANGA

कृषि सब्सिडी

कृषि सब्सिडी किसानों तथा व्यवसायों को दी जाने वाली सहायता होती है। सरकार यह सहायता किसानों की आय की प्रतिपूर्ति, कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिए तथा कृषि उत्पादन लागत को कम करने के लिए प्रदान करती है।

कृषि सब्सिडी मुख्यतः निम्न रूपों में दी जाती है।

- 1 कृषि उत्पादों की न्यूनतम कीमतों में वृद्धि करके।
- 2 कृषि आगतों जैसे बिजली, पानी, खाद, बीज, कृषि यंत्रों आदि पर सरकारी सहायता।
- 3 कृषि साख पर दी जाने वाली सहायता।
- 4 कृषि आय व कृषि आगतों पर करों में दी जाने वाली छूट।

अधिकांश अर्थशास्त्री दूसरी प्रकार की सब्सिडी को ही उतम प्रकार की आर्थिक सहायता का रूप मानते हैं। इसके कारण उत्पादन की लागतों में भी कमी आती है तथा किसानों में उत्पादन को बढ़ाने व प्रतियोगिता का विकास होता है। सन् 2009-10 में कुल सब्सिडी का बिल 1.41 लाख करोड़ था। 2014-15 में 2.60 लाख करोड़ रु० हो गया। सन् 2009-10 में जी०डी०पी० के प्रतिशत के रूप में 2.18 प्रतिशत थी। 2014-15 में यह कम होकर 2.02 प्रतिशत रह गई। सभी मदों में कृषि खाद्य सब्सिडी सबसे अधिक रही।

भारत में सब्सिडी करोड़ रु में

सब्सिडी	2009-10	2014-15
खाद्य Food	58433	115000
खाद Fertilizer	61264	72970
पैट्रोलियम Petroleum	14951	63427
मुख्य सब्सिडी Major subsidy	134658	251397
कुल सब्सिडी Total subsidy	141351	260658
जी.डी.पी. प्रतिशत में कुल सब्सिडी	2.18	2.02

Source : Economic survey, Govt. of India 2014-15

भारत में खाद्य सब्सिडी का बिल निरंतर बढ़ रहा है। पर प्रतिशत वार्षिक वृद्धि के रूप में कमी हो रही है।

खाद्य सब्सिडी वार्षिक वृद्धि प्रतिशत में

वर्ष	खाद्य सब्सिडी
2009-10	33.37
2011-12	15.00
2014-15	20.15

2009-10 से 2014-15 तक खाद्य सब्सिडी में वार्षिक दर लगभग 2 गुना कम हो गई है इस प्रकार 5 वर्षों के दौरान प्रतिशत वार्षिक वृद्धि तो कम हुई परंतु कुल खाद्य सब्सिडी काफी बढ़ गई।

कृषि उत्पादकों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से दी जाने वाली आर्थिक सहायता कृषि सब्सिडी कहलाती है। इस प्रकार की सहायता कृषि में उत्पादन को बढ़ाने, उत्पादकों के हितों की रक्षा तथा उत्पादनों की कीमतें कम रखने के लिए प्रदान की जाती है।

- 1 कृषि उत्पादकों को नकदी के रूप में दी जाने वाली सब्सिडी नकद सब्सिडी कहलाती है। किसानों को खाद, भोजन आगतों को कम मूल्य पर उपलब्ध कराना आदि इसमें शामिल है।
- 2 किसानों को सस्ती ब्याज की दर पर ऋण उपलब्ध करवाना साख सब्सिडी कहलाती है।
- 3 कृषि उत्पादकों को करों में छूट जैसे कृषि आय को कर मुक्त करना तथा कृषि आगतों पर कर छूट देना आदि कर सब्सिडी कहलाती है।
- 4 वस्तुओं के रूप में सब्सिडी जैसे - बीज, औजार, खाद आदि प्रदान करना वस्तुओं के रूप में सब्सिडी कहलाती है।
- 5 सरकार या इसकी कोई संस्था किसानों के उत्पादन को प्रचलित मूल्यों से अधिक पर स्वयं खरीद लेती है। इसे खरीद पर सब्सिडी कहते हैं।

जया देवी

बी.ए. छठा समैस्टर, रोल न० 269



कृषि सुधारों का भारतीय कृषि पर प्रभाव

भूमिका - भूमि सुधार का आशय उन सुधारों से है जो कृषि की उत्पादकता को बढ़ाते हैं। जैसे:- भूमि ऋण, प्रदत्त ऋण, विपणन, बिचौलियों का उन्मूलन इत्यादि। कृषि सुधारों का संबंध जमींदारों व भूस्वामियों से हैं।

कृषि सुधारों के उद्देश्य-

योजना आयोग के अनुसार, "भूमि सुधार का उद्देश्य सभी बाधाओं को दूर करके कृषि की उत्पादकता को बढ़ाना व सभी प्रकार के शोषण और सामाजिक अन्याय को खत्म किया जाना है ताकि सभी कृषक वर्गों को ऋण सुरक्षा व सामान्य अवसर दिये जा सकें"।

⇒ कृषि सुधार में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करके किसानों को कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाए।

⇒ इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक कल्याण को बढ़ाना, आय का समान वितरण करना, जमींदारी प्रथा का उन्मूलन करके काश्तकारों को जमीन सौंपना है।

⇒ किसानों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाना भी भूमि सुधार का प्रमुख उद्देश्य है।

भारत में 1947 में निम्नलिखित कृषि सुधार आरम्भ किए गए-

1. जमींदारी का उन्मूलन
2. काश्तकारी सुधार
3. जोतों की अधिकतम सीमा का निर्धारण
4. जोतों की चकबंदी
5. सहकारी खेती
6. नियमित भूमि आकलन
7. भू-दान आंदोलन।

भारत में कृषि सुधारों का प्रभाव:- भारत में भू-सुधार का काम बड़े जोश और उत्साह के साथ आरम्भ किया गया परंतु जल्दी ही यह धीमा पड़ गया। इन सुधारों की प्रगति के लिए, संयुक्त राष्ट्र की प्रकाशित रिपोर्ट में यह माना गया है कि "भू-सुधार से संबंधित कानूनों द्वारा बहुत बड़ी संख्या में किसान प्रभावित हुए हैं तथा भूमि के बड़े हिस्से को सम्मिलित करते हैं परंतु ये भूमि सुधार के संबंध में बहुत असमानता है।"

भारत के कृषि सुधारों के उपायों की प्रगति इस प्रकार है:-

1. **जमींदारी की समाप्ति-** जमींदारी की समाप्ति से जमींदारों के द्वारा किसानों के शोषण का अंत हो गया है। अब किसान सरकार से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। काश्तकारों को भूमि के स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो गया है।

2. **काश्तकारी सुधार-** सरकार ने भू-स्वामियों द्वारा काश्तकारों से लिए जाने वाले अधिकतम किरायों को निश्चित कर दिया है। यह कुल उत्पाद के 25 प्रतिशत से 33.33 प्रतिशत के मध्य निश्चित हुआ है। काश्तकारों को यह आश्वासन प्रदान किया जाता है कि वे लम्बे समय तक कृषि कर सकते हैं। कुछ दशाओं में उन्हें स्वामित्व अधिकार भी दान किए गए हैं।

3. **भू-जोतों की चकबंदी-** विभिन्न क्षेत्रों में भू-जोतों की अधिकतम सीमा का निर्धारण कर दिया गया है तथा निर्धारित सीमा से अधिक भूमि होने पर भू-स्वामी को सरकार द्वारा क्षतिपूर्ति के लिए भुगतान करने के पश्चात् भूमि ले ली जाती है। इस भूमि को भूमिहीन कृषि श्रमिकों तथा छोटे किसानों के मध्य वितरित कर दिया जाता है।

4. **जोतों का एकीकरण** - किसानों की बिखरी हुई जोतों को उनके बदले एक स्थान पर भूमि प्रदान करके एकीकरण कर दिया गया है। यह किसानों को ट्यूबवैल लगाने तथा कृषि के आधुनिक यंत्रों को प्रयोग करना आसान रेंगे। यह पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश में बहुत सफल है। भारत में अभी तक 1, 6,33 हेक्टर भूमि का एकीकरण किया जा चुका है।

5. **सहकारी खेती** - भूमि सुधार सहकारी कृषि को प्रोत्साहित करते हैं। सहकारी कृषि द्वारा बड़े पैमाने की कृषि लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं। भारत में 98,000 सरकारी कृषि समितियां बनी हुई हैं।

6. **भू-लेखों का कम्प्यूटीकरण** - सभी 640 जिलों में भूमि लेखों का कम्प्यूटी किया जा चुका है।

7. **भू-दान आन्दोलन** - इस आन्दोलन में, बड़े भू-स्वामियों को भूमिहीन कृषि श्रमिकों को भूमिदान करने के लिए सहित किया जाता है। इस आन्दोलन के आरम्भिक वर्षों 1951-1960 में यह देश के कुछ क्षेत्रों में सफल रहा है।

यामिनी ठाकुर

बी.ए. छठा सत्र, रोल न0 338



केंद्रीय बैंक

केंद्रीय बैंक देश का सर्वोच्च बैंक है और इसलिए देश की मौद्रिक तथा बैंकिंग प्रणाली में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। आर्थिक स्थिरता के अतिरिक्त केंद्रीय बैंक के पास संवृद्धि तथा विकास की प्रक्रिया में योगदान देने की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके पास नोट जारी करने का एकाधिकार होता है। यह अन्य सभी बैंकों को नियंत्रित करता है तथा यह सरकार के बैंकर का भी कार्य करता है।

केंद्रीय बैंक का मुख्य सिद्धान्त यह होता है कि इसे जनता के हित तथा संपूर्ण देश के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए। भारत में रिजर्व बैंक, इंग्लैंड में बैंक ऑफ इंग्लैंड तथा अमेरिका में फेडरल रिजर्व सिस्टम तथा केन्द्रीय बैंक है। यद्यपि संसार का सबसे पहला केंद्रीय बैंक 1668 में स्वीडन में स्थापित हुआ था परन्तु वास्तव में केन्द्रीय बैंक का आरम्भ सन् 1694 में स्थापित बैंक ऑफ इंग्लैंड की स्थापना के बाद हुआ है। वेरा स्मिथ के अनुसार "केन्द्रीय बैंक की मुख्य परिभाषा वह बैंकिंग प्रणाली है जिसके अन्तर्गत किसी एक बैंक को नोट निर्गमन का पूर्ण अथवा अवशेष अधिकार प्राप्त होता है।" केन्द्रीय बैंक का मुख्य उद्देश्य जनता की सेवा होता है जबकि व्यापारिक बैंकों का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है।

केन्द्रीय बैंक एक सरकारी संस्था है जबकि व्यापारिक बैंकों का स्वामित्व गैर-सरकारी व सरकारी भी हो सकता है। केन्द्रीय बैंक देश की बैंकिंग प्रणाली का नियंत्रण करता है। व्यापारिक बैंक केंद्रीय बैंक के नियंत्रण में कार्य करते हैं। केन्द्रीय बैंक को नोट छापने का एकाधिकार प्राप्त होता है। केंद्रीय बैंक सभी देशों में सरकार के बैंकर, एजेंट एवं वित्तिय परामर्श दाता के रूप में कार्य करते हैं। केन्द्रीय बैंक देश के अन्य बैंकों के लिए बैंकर का कार्य करता है। केन्द्रीय बैंक का अन्य बैंकों के साथ लगभग वही संबंध होता है जो एक साधारण बैंक का अपने ग्राहकों के साथ होता है। देश के अन्य बैंकों के लिए केन्द्रीय बैंक अंतिम ऋणदाता के रूप में भी कार्य करता है। केन्द्रीय बैंक राष्ट्र के विदेशी मुद्रा कोषों के संरक्षक के रूप में भी कार्य करता है।

वास्तव में केन्द्रीय बैंकों का सबसे महत्वपूर्ण कार्य व्यापारिक बैंकों की साख संबंधी क्रियाओं का नियंत्रण करना है। केन्द्रीय बैंक द्वारा साख नियंत्रण की विधियों को प्रायः मात्रात्मक तथा गुणात्मक में वर्गीकृत किया जाता है। मात्रात्मक नियंत्रणों का मुख्य उद्देश्य बैंक साख की कुल मात्रा तथा ब्याज दर का नियंत्रण करना होता है। इनके अन्तर्गत बैंक दर, खुले बाजार की क्रियाएं, नकद आरक्षित अनुपात तथा वैज्ञानिक तरलता अनुपात को शामिल किया जाता है। गुणात्मक साख नियंत्रण वह साख है जो कुछ विशेष उद्देश्यों के लिए दी जाने वाली तथा विशेष बैंकों द्वारा दी गई साख को नियमित करता है। इसके अंतर्गत प्रत्यक्ष कार्यवाही, उपभोक्ता साख पर नियंत्रण, नैतिक प्रभाव, साख का प्रचार तथा ऋणों की सीमांत आवश्यकता को शामिल किया जाता है।

अंकित राणा

बी.ए. छठा समैस्टर, रोल नं० 15351

भारत में आर्थिक असमानताएं

आय व संपत्ति के असमान वितरण से अभिप्राय अर्थव्यवस्था की उस परिस्थिति से है जिसमें राष्ट्र के कुछ लोगों की आय राष्ट्र की औसत आय से बहुत अधिक तथा अधिकांश लोगों की आय औसत आय से बहुत कम होती है। भारत में आय तथा संपत्ति की असमानताएं निरन्तर बढ़ती जा रही हैं। भारत में ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में आय की असमानता पाई जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति आय शहरी क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति की आय आधी के करीब है परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में धनी तथा निर्धन वर्ग के बीच अंतर शहरी क्षेत्रों से बहुत कम है। भारत में आय की असमानता का अनुमान उन लोगों की संख्या से भी लगाया जा सकता है जो निर्धनता रेखा से नीचे रहते हैं। कृषि भू-संपत्ति से संबंधित असमानताएं और अधिक हैं। देश के कुछ राज्यों जैसे :- गोवा, हरियाणा, महाराष्ट्र, तमिलनाडू, गुजरात तथा पंजाब आदि के आर्थिक विकास की दर एवं प्रति व्यक्ति आय बहुत अधिक है। बिहार उत्तरप्रदेश, झारखंड तथा उड़ीसा आदि के आर्थिक विकास की दर एवं प्रति व्यक्ति आय काफी कम है। अब तक का योजना काल यह व्यक्त करता है कि गोवा, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात पंजाब तथा केरल अब भी शिखर पर हैं क्योंकि इन राज्यों में प्रति व्यक्ति आय सारे भारत की औसत प्रति व्यक्ति आय से अधिक है।

भारत में प्रचलित उतराधिकार के नियमों के फलस्वरूप भी आय तथा संपत्ति के वितरण की असमानता में वृद्धि हुई है। उतराधिकार के नियमों ने भारत में आय तथा संपत्ति के वितरण की असमानता को स्थायी बना लिया है। व्यावसायिक प्रशिक्षण में असमानता भी आय की असमानता का एक कारण है। कीमतों के बढ़ने का धनी वर्ग की तुलना में निर्धन वर्ग पर अधिक बुरा प्रभाव



स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में भारी मात्रा में कर लगाए गए हैं। बिक्री कर, मूल्य वृद्धि कर आदि में काफी वृद्धि होने से अर्थव्यवस्था की असमानता में अप्रत्यक्ष रूप में वृद्धि हुई है। भ्रष्टाचार और तस्करी से काला धन उत्पन्न होता है। इनसे देश में आय व संपत्ति के वितरण की असमानताओं में वृद्धि हुई इसके साथ-साथ बेरोजगारी तथा अल्परोजगार भारत में आय की असमानता के प्रमुख तत्व हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात् से ही सरकार प्रयत्न कर रही है कि देश में आय तथा संपत्ति की असमानता को कम किया जाए। सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र का तेजी से विकास करने की नीति को अपनाया है। पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में लघु तथा कुटीर उद्योगों के विकास को प्रोत्साहन देने की नीति को अपनाया गया। देश की बेरोजगार जनता को रोजगार प्रदान करके भी आय असमानता को कम किया जा सकता है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली द्वारा निर्धन वर्ग को आवश्यकताओं की वस्तुएँ कम कीमत पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई है। सरकार की प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कर नीतियों का उद्देश्य आय की असमानता को कम करना है। भारत में अभी आय तथा संपत्ति के वितरण में बहुत अधिक असमानताएं हैं। भारत सरकार देश में पाई जाने वाली आय तथा संपत्ति की असमानता को कम करने के लिए प्रयत्नशील है। कई प्रकार की योजनाओं में भी आय तथा संपत्ति के वितरण की असमानता का कम करने पर जोर दिया गया है।

सुनिता देवी

बी.ए. द्वितीय समैस्टर, रोल नं० 17075

मेक इन इंडिया

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया गया मेक इन इंडिया अभियान एक नयी योजना है जिसके तहत भारत में व्यापार की इच्छा रखने वाले पूरे विश्व भर के बड़े व्यापारिक निवेशकों को भारत में विभिन्न व्यवसायों में पैसा लगाने के लिए एक अवसर उपलब्ध कराया जा रहा है। भारत में बने हुए उत्पादों के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर घरेलू कंपनी के साथ ही बहुदेशीय कंपनियों को प्रसन्न करने के लिए भारतीय सरकार द्वारा ये एक शुरुआती अभियान चलाया जा रहा है। भारत में रोजगार लाने के लिए प्रधानमंत्री के द्वारा किया गया ये एक प्रयास है। इस कार्यक्रम की शुरुआत नयी दिल्ली के विज्ञान सदन में प्रधानमंत्री के द्वारा 25 सितम्बर, 2014 को हुई। मंगल मिशन के एक दिन बाद इस अभियान की शुरुआत की गई थी जब भारत के प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी यू0एस0ए0 के अपने पहले दौर पर जाने वाले थे। इस अभियान को शुरू करने का उद्देश्य भारत को विश्व स्तर के उत्पादन का पावर हाऊस बनाना है जो भारतीय अर्थव्यवस्था के बड़े मुद्दे का समाधान करने में मदद करेगी। इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले 25 क्षेत्रों में बदलाव लाना है। योजन के तहत इसमें रोजगार बढ़ेंगे जिससे देश में बेरोजगारी की समस्या दूर होगी। साथ ही इन क्षेत्रों में कौशल विकास होगा जिससे देश विदेश में सभी बड़े निवेशकों का ध्यान हमारी ओर केन्द्रित होगा।

मेक इन इंडिया के मुख्य उद्देश्य—

- ज्यादा से ज्यादा सामान भारत में बने जिससे सामान की कीमत कम होगी और बाहर निर्यात होने से देश की अर्थव्यवस्था को फायदा होगा।
- देश में रोजगार बढ़ेगा, गरीबी कम होगी तथा उच्च गुणवत्ता का सामान कम कीमत पर मिलेगा।
- दूसरे देश के निवेशक हमारे यहाँ आकर पैसा लगाएंगे, जिससे देश में बाहर से पैसा आएगा।
- साथ ही देश का नाम दुनिया में प्रसिद्ध होगा।
- देश के नौजवानों को अपनी सोच सबको बताने का मौका मिलेगा।
- देश के नौजवान विदेश में जाकर काम करने की जगह यहीं रहकर काम करना पसंद करेंगे।

आशा देवी

बी.ए. चौथा समैस्टर

रोल नं० 160016





HIMARI GANGA

विमुद्रीकरण

विमुद्रीकरण का अर्थ:—

जब सरकार पुरानी मुद्रा को कानूनी तौर पर बन्द कर देती है और नई मुद्रा की घोषणा करती है तो इसे विमुद्रीकरण कहते हैं। इसके बाद पुरानी मुद्रा अथवा नोटों की कोई कीमत नहीं रह जाती। हालांकि सरकार द्वारा पुराने नोटों को बैंकों में नई मुद्रा से बदलने के लिए समय दिया जाता है ताकि वे अमान्य हो चुके अपने पुराने नोटों को बदल सकें।

8 नवम्बर, 2016 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में 500 और 1000 ₹ के नोट को बंद करने की घोषणा की अर्थात् विमुद्रीकरण की घोषणा की। इसके बाद सरकार 500 और 2000 ₹ के नए नोट भी बाजार में लेकर आई। आर.बी. आई. के अनुसार 31 मार्च, 2016 तक भारत में 16.42 लाख रुपये मूल्य के नोट बाजार में थे जिसमें से करीब 14.18 लाख ₹ 500 और 1000 के नोटों के रूप में थे। 1938 में गठित भारतीय रिजर्व बैंक ने अभी तक 10 हजार रुपये से अधिक का नोट जारी नहीं किया।

विमुद्रीकरण क्यों:—

काला धन भ्रष्टाचार, नकली नोट और आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए सरकारें विमुद्रीकरण का फैसला लेती हैं। अवैध गतिविधियों में संलग्न लोग नोटों को अपने पास ही रखते हैं ऐसे में विमुद्रीकरण से सीधे उन पर चोट होती है। कई बार नगद लेन-देन को हतोत्साहित करने के लिए भी नोटबंदी की जाती है। केन्द्र सरकार को भी उम्मीद है कि नोटबंदी से काले धन, नकली नोट और आतंकवाद पर अंकुश लगेगा। हालांकि नोट बंदी के चलते आम आदमी को भी काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। केन्द्र सरकार अपने फैसले से नगद लेन-देन को भी हतोत्साहित करने की कोशिश कर रही है।

कब-कब बदले गए नोट -

सन् 1954 से 1000 ₹ का नोट पहली बार जारी हुआ। सन् 1978 में 1000 का नोट बंद किया गया। सन् 2000 में दूसरी बार 1000 ₹ का नोट जारी हुआ। 500 ₹ का नोट सन् 1937 में पहली बार जारी हुआ तथा सन् 2005 में सुरक्षा दृष्टि से नोट में कुछ बदलाव किए। सन् 1938 में पहली बार रिजर्व बैंक ने 10,000 का नोट भारत में छापा था। 1938 में पहली बार आर.बी. आई. ने पेपर करेंसी छापी वह पांच का नोट था। इसी साल 10 ₹ 100 ₹ के नोट भी छापे गए। सन् 1954 में एक बार फिर से 1000 ₹ का नोट व 10,000 रुपये के नोट छापे गए। सन् 2016 में एक बार फिर 500 ₹ व 1000 ₹ पर रोक लगी। तत्पश्चात् 2016-17 में जारी हुआ 500 और 2000 का नोट।

विमुद्रीकरण के फायदे:—

- काले धन पर करारा प्रहार।
- आतंकवाद, नक्सलवाद और आपराधिक गतिविधियों पर चोट।
- टैक्स क्लेक्शन में बढ़ोतरी।
- अर्थव्यवस्था में वृद्धि।
- सस्ते होंगे ब्याज दर।
- लोक कल्याणकारी योजनाओं पर खर्च।

दीक्षा

बी.ए. चौथा समैस्टर
रोल नं 1600074



ग्रामीण ऋणग्रस्तता

भूमिका - भारत में अधिकतर लोग गाँव में रहते हैं तथा उनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। उन्हें कृषि तथा गैर कृषि व्यवसायों के लिए ऋण लेना पड़ता है इसलिए ग्रामीण वित्त का विशेष महत्त्व है। वास्तव में आज कृषि क्षेत्र में पूँजी की आवश्यकता पहले के अपेक्षा अधिक हो गई है। भारत जैसे विकासशील व कृषि आधारित देशों में छोटे व सीमांत किसानों के पास आर्थिक स्रोतों का अभाव बन रहा है। इन परिस्थितियों में कृषि के विकास के लिए ग्रामीण वित्त का महत्त्व और भी बढ़ जाता है अतः कृषि में विकास दर को बढ़ाने के लिए ग्रामीण वित्त एक महत्त्वपूर्ण साधन होता है।

ग्रामीण ऋणग्रस्तता का अर्थ :-

(Darling) डार्लिंग के अनुसार, "भारतीय किसान ऋण में जन्म लेता है, और ऋण में ही मर जाता है।"

भारत में ऋणग्रस्तता का आकार

ग्रामीण ऋणग्रस्तता के सम्बन्ध में विभिन्न एजेन्सियों द्वारा विभिन्न सर्वेक्षण किए गए हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा - भारतीय रिजर्व बैंक ने ग्रामीण ऋण पर तीन सर्वेक्षण किए- (1.) 1951 में (2.) 1961 में (3.) 1971 में।

राष्ट्रीय सैम्पल सर्वेक्षण संस्था (NSSO) द्वारा - इस संस्था ने दो भारतीय ऋण और निवेश सर्वेक्षण किए। (1) 1981-82 (2) 1991-92 में।

नवीनतम सर्वेक्षण-2003 में NSSO द्वारा किया गया। राष्ट्रीय सैम्पल सर्वेक्षण संस्था द्वारा 59 वें दौर की 2003 की रिपोर्ट के अनुसार किसानों के 49 प्रतिशत परिवार ऋणग्रस्त थे।

कुल ऋणी किसानों में से 61 प्रतिशत के पास एक हेक्टेयर जोत से भी कम भूमि थी। विभिन्न एजेन्सियों के कारण ऋणग्रस्तता :- ऋण के लिए दो प्रकार की एजेन्सियाँ हैं- 1) संस्थागत 2) गैर-संस्थागत एजेन्सियाँ।

संस्थागत एजेन्सियाँ- सन् 2014-15 में संस्थागत एजेन्सियों ने ग्रामीण परिवारों के ऋणों में 39 प्रतिशत का योगदान दिया। इनमें मुख्य हिस्सा सहकारी समितियों एवं व्यापारिक बैंकों का था।

गैर-संस्थागत एजेन्सियाँ- सन् 2014-15 में गैर-संस्थागत साधनों का योगदान 61 प्रतिशत था। इसमें देशी बैंकर, साहूकारों, व्यापारियों तथा सम्बन्धियों का योगदान था।

भारत में ग्रामीण ऋणग्रस्तता के कारण-

- | | | | |
|------------------------------|------------------------|----------------|-----------------------|
| 1. निर्धनता | 2. अनुत्पादक व्यय | 3. मुकदमेंबाजी | 4. भूमि पर सुधार करना |
| 5. उत्तराधिकार से प्राप्त ऋण | 6. दोषपूर्ण कृषि विपणन | 7. निरक्षरता। | |

ग्रामीण ऋणग्रस्तता की समस्याओं का समाधान :-

ग्रामीण ऋणग्रस्तता की समस्याओं का समाधान इस प्रकार किया सकता है:-

- पुराने ऋणों का समाधान करना-** साहूकार ऊँची ब्याज दर वसूल करते हैं। कभी-2 ब्याज दर मूलधन राशि से भी अधिक हो जाती है। इसके समाधान के लिए कुछ कदम उठाये जा सकते हैं जैसे :- गैर-संस्थागत ऋण की माफी- कमजोर वर्ग जैसे भूमिहीन श्रमिक और ग्रामीण कारीगरों के गैर-संस्थागत ऋण माफ कर दिए जाएं।
- पुराने ऋणों को कम करना-** कुछ राज्यों में पैतृक ऋणों को कम करने के लिए कानून पास किए हैं परंतु किसान इसका लाभ नहीं उठा सकते क्योंकि वे साहूकारों से डरते हैं।
- ग्रामीण साख के लिए सरकारी एजेन्सियों का विस्तार करना-** किसानों की साख आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नई सरकारी एजेन्सियाँ स्थापित की जानी चाहिए। इसका मुख्य उद्देश्य साहूकारों पर किसानों की निर्भरता को कम करना है।
- नए ऋण पर नियन्त्रण** - नए ऋण नियन्त्रित करने की आवश्यकता है। इसके लिए मुख्य सुझाव हैं :-
 - अनुत्पादक ऋणों पर रोक**- ऋण दो प्रकार के होते हैं। क) उत्पादक ख) अनुत्पादक
 - बचतों को प्रोत्साहन देना**- अनुत्पादक ऋणों को रोकने के लिए किसानों को बचत के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इस सम्बन्ध में सहकारी समितियाँ काफी सहायता कर सकती हैं।
 - साहूकारों की गतिविधियों पर नियन्त्रण करना**- इस उद्देश्य के लिए बहुत से राज्यों ने किसानों को अपनी भूमि साहूकारों को बेचने से रोकने के लिए कानून पास किए हैं।

अनिता कुमारी
बी.ए. चतुर्थ समैस्टर



HIMARI GANGA

नीति आयोग

सरकार ने योजना आयोग को एक नयी संस्था 'नीति आयोग' से प्रतिस्थापित किया है इसका कार्य 'भारत रूपान्तरण' के लिए योजनाओं व नीति निर्माण संबन्धित विभिन्न मुद्दों पर तकनीकी सलाह देना है। यह आयोग राज्यों की सलाह व भागीदारी से राष्ट्रीय उद्देश्य, राष्ट्रीय एजेंडा व प्राथमिकताएँ निर्धारित करेगा। राज्य सरकारें अपने राज्यों की आवश्यकताओं, संसाधनों, प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए अपने राज्यों के लिए आर्थिक योजनाएँ बनाएंगी। नीति आयोग राज्य सरकारों द्वारा योजनाएं बनाने में उनका मार्गदर्शन करेगा तथा उन्हें तकनीकी व रचनात्मक सलाह देगा। नीति आयोग के कार्यक्रम के अंतर्गत राज्यों को आर्थिक नीतियाँ व आर्थिक योजनाएं बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका दी गई है। इससे सरकारी संघीय व्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा। केन्द्र व राज्यों के मध्य संबंधों में सुधार होगा।

योजना आयोग की स्थापना— वर्ष 1950 में की गई थी परन्तु अब 65 वर्ष बीतने के बाद भारत एक अल्पविकसित देश न होकर विश्व में एक 'तीव्र गति' से विकसित होने वाली अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है। अतः अब भारत में मुख्य शासनिक संस्थाओं के कार्यकरण में कुछ परिवर्तन व सुधार लाना अनिवार्य हो गया है। अतः भारत की बदलती स्थितियों को ध्यान में रखते हुए 65 वर्ष पहले बने योजना आयोग को एक नई संस्था 'नीति आयोग' से प्रतिस्थापित किया गया है। योजना आयोग केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों के मध्य वित्तीय संसाधनों का आंबटन करता था परन्तु नीति आयोग वित्तीय संसाधनों का केन्द्र व राज्यों में आंबटन नहीं करेगा। यह कार्य वित्त मंत्रालय द्वारा किया जाएगा। नीति आयोग का मुख्य कार्य केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों को नीति निर्माण व आर्थिक योजनाएं बनाने में तकनीकी सलाह देना है। योजना आयोग के कार्यकरण के अन्तर्गत राज्यों को आर्थिक योजनाएं बनाने में कम स्वतन्त्रता व कम शक्तियां थी। उन्हें राज्य के लिए आर्थिक योजनाएं बनाने के लिए अधिक शक्तियां दी गई हैं। वह अपने राज्यों की समस्याओं, आवश्यकताओं, प्राथमिकताओं व संसाधनों को ध्यान में रखते हुए आर्थिक योजनाएं बनाने के लिए अधिक स्वतंत्र हों। नयी व्यवस्था में राज्यों को आर्थिक योजनाएं बनाने में अधिक अधिकार व स्वतंत्रता दी गई है। इससे केन्द्र व राज्यों के मध्य संबंधों में सुधार होगा। आर्थिक संसाधनों का कुशलतम उपयोग होगा। विकास नीति में तीव्रता आएगी तथा राज्यों की विकास संबंधी समस्याओं का बेहतर समाधान हो पाएगा।

नीति आयोग सरकार की मुख्य विकासात्मक परियोजनाओं व कार्यक्रमों जैसे— 'मेक इन इंडिया' 'डिजिटल इंडिया' 'स्वच्छ भारत अभियान' आदि के क्रियान्वयन की भी निगरानी करेगा। ताकि इन विकासात्मक परियोजनाओं की कमियों को जाना जा सके तथा उचित समय पर इनमें सुधार किया जा सके। यह आयोग समाज के ऐसे वर्ग, जो अर्थिक विकास से अधिक लाभन्वित नहीं हुए हैं उनके हितों की सुरक्षा की ओर भी विशेष ध्यान देगा।

निशा कुमारी

बी.ए. द्वितीय समैस्टर, रोल न0 17039



भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की आबादी 1,210,193, 422 है। जिसका अर्थ है कि भारत ने एक अरब के आंकड़े को पार कर लिया है। यह चीन के बाद दुनिया का सबसे बड़ा ज्यादा आबादी वाला देश है। विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि सन् 2025 तक भारत चीन को भी पछाड़ देगा तथा विश्व का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बन जाएगा। इस तथ्य के बावजूद कि यहां जनसंख्या नीतियां, परिवार नियोजन और कल्याण कार्यक्रम सरकार ने शुरू किए हैं और प्रजनन दर में लगातार कमी आई है। आबादी का वास्तविक स्थिरीकरण केवल 2050 तक ही हो पायेगा।

भारत में आबादी बढ़ने के प्रमुख कारण हैं :-

जन्म दर का मृत्यु दर से अधिक होना :-

हमने मृत्यु दर को सफलतापूर्वक कम कर लिया है पर यही बात जन्म दर के बारे में नहीं कही जा सकती। विभिन्न जनसंख्या नीतियों और अन्य उपायों से प्रजनन दर कम तो हुई पर फिर भी यह दूसरे देशों के मुकाबले बहुत अधिक है।

शादी-विवाह की अवधारणा :-

वैसे तो कानूनी तौर पर लड़की की शादी की उम्र 18 साल है। लेकिन जल्दी शादी की अवधारणा भारत में बहुत प्रचलित है और जल्दी शादी करने से गर्भधारण करने की अवधि भी जल्दी ही होती है। इसके अलावा भारत में शादी एक पवित्र कर्तव्य और सार्वभौमिक अभ्यास माना जाता है। यहां लगभग सभी महिलाओं की शादी प्रजनन क्षमता की आयु में आते ही हो जाती है।

गरीबी और निरक्षता-

आबादी के तेजी से बढ़ने का एक अन्य कारण गरीबी भी है। गरीब परिवारों में एक धारणा है कि परिवार में जितने ज्यादा सदस्य होंगे उतने ज्यादा लोग कामने वाले होंगे। कुछ लोग यह मानते हैं कि बुढ़ापे में देखभाल करने के लिए भी बच्चों का होना जरूरी है। यह एक अजीब बात है कि भारत अब भी गर्भ निरोधकों और जन्म नियंत्रण विधियों के इस्तेमाल में पीछे है। कई लोग इस बारे में बात करने के लिए भी तैयार नहीं होते हैं या फिर इससे पूरी तरह अनजान हैं। इसलिए निरक्षता भी आबादी बढ़ने का एक अन्य कारण है।

पुराने सांस्कृतिक आदर्श-

भारत में बेटे परिवार में पैसे कमाने वाले माने जाते हैं। इस दकियानूसी सोच के चलते माता-पिता पर बेटा पैदा करने का दबाव बढ़ जाता है। जितने ज्यादा बेटे हों उतना और अच्छा।

अवैध प्रवासी-

सबसे आखिर में हम इस तथ्य को नहीं नकार सकते कि बांग्लादेश, नेपाल से अवैध प्रवासियों की लगातार वृद्धि से जनसंख्या घनत्व में बढ़ोतरी हुई है।

अधिक आबादी के प्रभाव-

आबादी के 67 साल के बाद भी बढ़ती आबादी के कारण देश का परिदृश्य कुछ खास अच्छा नहीं है। ज्यादा आबादी के कुछ खास प्रभाव इस प्रकार से हैं:-

1. **बेरोजगारी** - भारत जैसे देश में इतनी ज्यादा आबादी के लिए रोजगार पैदा करना बहुत मुश्किल है। अनपढ़ लोगों की जनसंख्या हर साल बढ़ रही है। इसलिए बेरोजगार दर लगातार बढ़ती जा रही है।
2. **जनशक्ति का उपयोग** - भारत में बेरोजगारी की बढ़ती संख्या के चलते आर्थिक मंदी, व्यापार विकास और विस्तार गतिविधियां धीमी होती हैं।
3. **संसाधनों का उपयोग** - भूमि क्षेत्र, जल संसाधन और जंगल सभी का बहुत शोषण हुआ है। संसाधनों में कमी भी आई है।

जनसंख्या नियंत्रण के लिए कदम-

भारत सरकार, नेताओं और नीति निर्माताओं को एक मजबूत जनसंख्या नीति अपनाने के लिए पहल करनी चाहिए। जिससे देश की आर्थिक विकास दर व बढ़ती आबादी की गति पर नियंत्रण पाने के साथ तालमेल बिठाया जा सके। आबादी पर नियंत्रण पाने के लिए जो बड़े कदम उठाए जा चुके हैं, उन्हें और जोर देकर लागू करने की जरूरत है। महिलाओं - बच्चों के कल्याण और इनकी स्थिति बेहतर करना, शिक्षा के प्रसार, गर्भ निरोधक और परिवार नियोजन के तरीके, पुरुष नसबंदी को बढ़ावा और बच्चों के जन्म में अंतर, गरीबों में गर्भनिरोधक और कंडोम का मुफ्त वितरण, महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा तथा गरीबों के लिए ज्यादा स्वास्थ्य सेवा आदि कुछ ऐसे कदम हैं जो आबादी को काबू करने में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं।

सुमन

बी.ए. द्वितीय समैस्टर

NO 17007



HIMARI GANGA

मनरेगा

यह कानून हर वित्तीय वर्ष में इच्छुक ग्रामीण परिवार के किसी भी अकुशल वयस्क को सार्वजनिक कार्य में वैधानिक न्यूनतम भत्ते पर काम करने के लिए 100 दिनों के रोजगार की गारंटी देता है। 2 फरवरी, 2006 में मनरेगा बना और अक्टूबर 2009 में इसका नाम बदलकर मनरेगा रख दिया गया। मनरेगा के शुरुआती वर्ष सफलता के कहे जा सकते हैं हालांकि उस पर भी मतभेद है लेकिन समय बीतने के साथ यह योजना विफल होती चली गई। 2010-11 में मनरेगा बजट में जहां चालीस सौ करोड़ रुपये आबंटित था, वह 2013-14 में घटाकर 33,000 करोड़ रुपये कर दिया गया। वह भी जब प्रति व्यक्ति दैनिक मजदूरी उन दिनों 100 रुपये मात्र थी, जो अब बढ़कर 175 रुपये हो गई है। एक तरह का कार्य दिवस की संख्या कुछ क्षेत्रों में बढ़ाकर 100-150 दिन कर दी गई है। मनरेगा के लागू होने के बाद अभियान चलाकर देशभर में जॉब कार्ड बनाए गए। राजस्थान में 2006-2007 में तत्कालीन राज्य सरकार ने इस योजना के तहत सालाना क्रमशः 4500-5000 करोड़ रुपये का भुगतान किया। उत्तर प्रदेश में पिछले तीन साल में इस योजना के तहत तकरीबन 5000 करोड़ रुपये का भुगतान बगैर काम कराए किया गया।

मनरेगा के तहत गरीबों के घर में शौचालय निर्माण में मजदूरी देने का भी प्रावधान किया है ताकि महिलाओं की भागीदारी को बढ़-चढ़कर दिखाया जा सके। देश की सभी ग्राम पंचायतों में भले ही मनरेगा के तहत गरीबों को मजदूरी मिले, मनरेगा भवन जरूर बन गए हैं। मनरेगा में महिलाओं एवं पुरुषों को समान लक्ष्य दिया जाता है। रोजगार गारंटी योजना की शुरुआत में ही यह कहा गया था कि यूपीए सरकार न्यूनतम सौ दिन का रोजगार देगी। इसमें हर लाभार्थी को दिए जाने वाले काम और मजदूरी का हिसाब रखा जाता है। जैसे ही किसी व्यक्ति को सौ दिन का रोजगार मिल जाता है और वह उससे अधिक काम की मांग करता है तो उसे काम नहीं दिया जाता है। इस तरह से किसी लाभार्थी को सौ दिन से अधिक का रोजगार नहीं मिल पाता।

ग्रामीण विकास मंत्रालय के आंकड़ों पर गौर करे तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जहां 2009-10 में 284 करोड़ कार्य दिवस की मजदूरी दी गई थी, वह 2010-11 में घटाकर 257 करोड़ दिन पर आ गई। देश के संविधान में मौलिक अधिकारों की बात की गई है। जिसमें लैंगिक भेदभाव पर रोक है। सच तो यह है कि तमाम दूसरी खामियों के साथ रोजगार गारंटी योजना लैंगिक भेदभाव की बुनियाद पर खड़ी है।

माया

बी.ए. द्वितीय समैस्टर, रोल नं० 17074

भारत में बेरोजगारी की समस्या

आज बेरोजगारी की समस्या विकसित एवं अल्पविकसित दोनों प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं की प्रमुख समस्या बनती जा रही है। भारत जैसी अल्पविकसित अर्थव्यवस्था में तो यह विस्फोटक रूप धारण किए हुए है। भारत में इसका प्रमुख कारण जनसंख्या वृद्धि, पूँजी की कमी आदि है। यह समस्या आधुनिक समय में युवा वर्ग के लिए घोर निराशा का कारण बनी हुई है। भारत में 12 करोड़ लोग बेरोजगार हैं। इनमें पढ़े-लिखे युवाओं की तादाद ही सबसे ज्यादा है। बेरोजगारों में 25 फीसदी 20 से 24 आयु वर्ग के हैं, जबकि 25 से 29 वर्ग की उम्र वाले युवाओं की तादाद 17 फीसदी है। 20 साल से ज्यादा उम्र के 14.30 करोड़ युवाओं को नौकरी की तलाश है।

शिक्षा और बेरोजगारी का भी गहरा संबंध है। आज भी भारत की जनसंख्या काफी बड़े अनुपात में अशिक्षित है, तो अशिक्षा के चलते बेरोजगारी का आना स्वाभाविक बात है परन्तु आजकल अशिक्षा के साथ-साथ एक बहुत बड़ी समस्या है हर छात्र के द्वारा एक ही तरह की शिक्षा को चुना जाना।

बेरोजगारी की समस्या जटिल अवश्य है किंतु इसका हल किया जा सकता है क्योंकि कुछ समस्याएं ऐसी होती हैं जो स्वयं मनुष्यों द्वारा उत्पन्न की जाती हैं और जिन्हें दूर भी मनुष्य ही कर सकता है। देश में योजनाओं को ठीक से लागू किया जाये। तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा को शिक्षा का आधार बनाया जाए। आवश्यकता इस बात की है इस समस्या को दूर करने के लिए हम सभी सरकार का सहयोग दें।

पंकज

बी.ए. द्वितीय समैस्टर, रोल नं० 17028

HIMARI GANGA

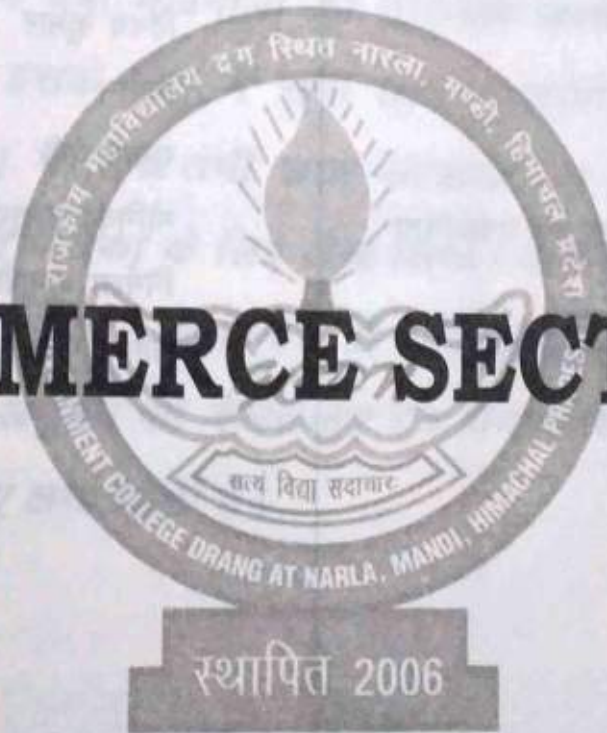


Himari Ganga

College Magazine
2016-17 & 2017-18



COMMERCE SECTION



Teacher Editor
Prof. Ravinder Kumar

Student Editor
Kritika Thakur
B.Com IInd Sem
R.N. 17310

Govt. College Drang at Narla
Dist. Mandi (H.P.)



HIMARI GANGA

विषय सूची

क्र.स.	विषय	छात्र का नाम	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	कृतिका ठाकुर	83
2.	बजट 2018	कृतिका ठाकुर	84
3.	डिजिटल इंडिया	नीलम कुमारी	85
4.	स्टार्ट अप इंडिया स्टैंडअप इंडिया	अनीता देवी	86
5.	बेरोजगारी	तुलसी देवी	86
6.	काला धन	वैशाली पटियाल	87
7.	ईलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स	विनय कुमार	87
8.	भ्रष्टाचार	नितिन	88
9.	कैशलेस इंडिया	सुषमा देवी	89
10.	हमारे जीवन में कम्प्यूटर की उपयोगिता	मोनिका ठाकुर	90
11.	मेक इन इंडिया	निर्मला कुमारी	91
12.	रुपये को मिला नया प्रतीक चिन्ह	नेहा कुमारी	92



सम्पादकीय

मैं कृतिका ठाकुर अपने आपको सौभाग्यशाली समझती हूँ कि मुझे महाविद्यालय की पत्रिका के प्रकाशन में छात्रा-सम्पादक के रूप में कार्य करने का गौरव प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम मैं प्राचार्य की आभारी हूँ जिन्होंने हम विद्यार्थियों के मन में दबी भावनाओं को उजागर करने के लिए पत्रिका का मंच प्रदान किया। इसके लिए मैं सभी छात्र-छात्राओं की ओर से उनका धन्यवाद करती हूँ। मैं उन सभी छात्र-छात्राओं का आभार प्रकट करना चाहूँगी जिन्होंने इस पत्रिका के लिए लेख लिखे। यद्यपि उनकी सभी रचनाएं प्रशंसनीय, ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजन से परिपूर्ण हैं। हम विद्यार्थियों की अल्पबुद्धि और कम अनुभव को देखते हुए हम पाठकों से उनकी रचनाओं के स्रोत व स्तर के लिए क्षमा प्रार्थी हैं।

कृतिका ठाकुर
छात्र-सम्पादिका





बजट 2018

केन्द्र सरकार का बहुप्रतीक्षित बजट आ गया है लेकिन बाद में मध्यम वर्ग में मिली-जुली प्रतिक्रिया देखने को मिली है। विशेषकर इसे गाँव और किसानों का बजट मान रहे हैं। आइए जानते हैं बजट की 10 बड़ी बातें :-

आयकर स्लैब :- मध्यम वर्ग खासकर नौकरीपेशा वर्ग को इस बार उम्मीद थी कि आयकर सीमा ढाई लाख से बढ़ाकर तीन या साढ़े तीन लाख की जा सकती है लेकिन इस बार स्लैब में कुछ भी बदलाव नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त स्टैंडर्ड डिडक्शन की फिर से एक दशक के बाद शुरुआत की गयी जिसमें आयकरदाता के 40,000 रुपये उसके मूल वेतन से घट जायेंगे। सरकार ने म्युचुअल फंड पर भी 10 प्रतिशत टैक्स थोप दिया। ऐसा करके सरकार ने उनकी बचत का एक रास्ता और बंद कर दिया।

स्वास्थ्य :- स्वास्थ्य क्षेत्र में भी सरकार ने बड़ी घोषणाएं की हैं। इसके तहत 5 लाख नए स्वास्थ्य केन्द्र लोगों के घरों के पास बनाए जाएंगे। आयुष्मान योजना के तहत सरकार 50 करोड़ लोगों के ईलाज का खर्च उठाएगी। इस योजना में देश के 10 करोड़ लोगों को 5 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा का लाभ मिलेगा।

किसान :- बजट में सरकार ने किसानों को खुश करने की पूरी कोशिश की है। जेटली ने कहा कि फसल को कलस्टर मॉडल पर विकसित करेंगे। सभी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य दिया जाएगा। ऑपरेशन ग्रीन की स्थापना के साथ ही इसके लिए 500 करोड़ रुपये देने का प्रस्ताव किया गया है। आलू, प्याज, टमाटर के लिए भी ऑपरेशन ग्रीन लागू होगा। सरकार ने 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य रखा है, साथ ही खेती के कर्ज के लिए 11 लाख करोड़ रुपये का प्रस्ताव किया। मछली और पशुपालन के लिए 2 नए फंड पर 10 हजार करोड़ रुपये खर्च होंगे। मण्डी व्यवस्था में सुधार के लिए भी 2 हजार करोड़ का प्रस्ताव रखा गया है।

महिलाएं :- सरकार ने गरीब महिलाओं का भी खास ध्यान रखा है। उज्ज्वला योजना के तहत सरकार ने 5 करोड़ गरीब महिलाओं तक मुफ्त गैस कनेक्शन पहुँचाने का लक्ष्य रखा था इस योजना की लोकप्रियता को देखते हुए इस लक्ष्य को बढ़ाकर 8 करोड़ गरीब महिलाओं को मुफ्त कनेक्शन पहुँचाने का लक्ष्य रखा है।

युवा :- वित्तमन्त्री ने युवा वर्ग को लुभाने की भी पूरी कोशिश की है। बजट में 70 लाख नई नौकरियों पैदा करने की घोषणा की गई है। फिलहाल वित्तमन्त्री ने कहा कि सरकार ज्यादा से ज्यादा रोजगार के अवसर पैदा करना चाहती है। नए कर्मचारियों के लिए ईपीएफ में सरकार की ओर से 12 फीसदी योगदान देने की भी घोषणा की गई है।

शिक्षा :- बजट में बच्चों की शिक्षा पर लगभग 96 हजार करोड़ रुपये का खर्च का प्रावधान किया गया है। वित्तमन्त्री जेटली ने बजट में डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने का सबसे बड़ा हथियार सिद्ध होगा। स्कूल-कॉलेजों में ब्लैकबोर्ड से डिजिटल बोर्ड की तरफ बढ़ेंगे। देश में 24 लाख बच्चों को स्कूल भेजने का लक्ष्य रखा है।

शेयर बाजार :- 31 जनवरी के बाद शेयर बाजार में निवेश करने वालों को 10 प्रतिशत टैक्स देना होगा। अब निवेशकों को म्युचुअल फंड की कमाई पर भी 10 प्रतिशत टैक्स देना होगा। सरकार ने यह भी ऐलान किया कि कुल 14 सरकारी कंपनियां शेयर बाजार में जुड़ेगी और बाजार से 80 हजार करोड़ रुपये जुटाएगी।

रेलवे :- वित्तमन्त्री ने भारतीय रेलवे के लिए 1.48 लाख करोड़ रुपये का पूंजीगत व्यय करने की घोषणा की। उन्होंने रेलवे में 18000 मि.मी. लाइनों के दोहरीकरण के लक्ष्य का प्रस्ताव किया। वित्तमन्त्री ने बताया कि 36,000 कि.मी. रेल पटरियों के नवीनीकरण का भी लक्ष्य रखा गया है जबकि अगले दो सालों में ब्राड गेज मार्गों पर 4267 मानव रहित रेलवे क्रॉसिंग को भी समाप्त किया जाएगा। सभी ट्रेनों में तेजी के साथ वाई-फाई और सी.सी.टी.वी. नेटवर्क मुहैया कराया जाएगा। इसके साथ ही 25,000 से अधिक यात्रियों की आवाजाही वाले स्टेशनों पर एस्केलेटर की सुविधा मुहैया कराई जाएगी।

HIMARI GANGA



गरीब :- माननीय वित्तमन्त्री महोदय ने अपने बजट में गरीबों के लिए कई बड़े ऐलान किए हैं। वित्तमन्त्री ने बताया कि उज्ज्वला योजना के तहत 8 करोड़ गरीब महिलाओं को मुफ्त कनेक्शन पहुँचाने का लक्ष्य रखा है। वित्तमन्त्री जेटली ने कहा कि उनकी सरकार का लक्ष्य 2022 तक हर गरीब को घर देने का लक्ष्य है। उन्होंने बताया कि इसके तहत उनकी सरकार ने शहरी क्षेत्रों में 37 लाख मकान बनाने की योजना को मंजूरी दे दी है। उन्होंने 10 करोड़ लोगों को 5 लाख रुपये की मेडिकल सुविधा भी देने की घोषणा की है।

उद्योग जगत :- बजट में छोटे उद्योगों के लिए 3794 करोड़ रुपये का ऐलान किया। 250 करोड़ टर्नओवर वाली कंपनी को अब कॉरपोरेट टैक्स में भारी छूट दी गई है। उन्हें अब 30 के स्थान पर 25 फीसदी कॉरपोरेट टैक्स ही देना पड़ेगा। पहले यह राहत 50 करोड़ रुपये तक टर्नओवर वाली कंपनियों को ही थी।

कृतिका ठाकुर
बी.कॉम. द्वितीय सत्र
रोल नं. - 17310

डिजिटल इंडिया

भारत को एक सम्पूर्ण डिजिटल देश में बदलने के लिए 1 जुलाई 2015 को भारत सरकार के द्वारा डिजिटल इंडिया अभियान की शुरुआत की गई। सरकारी विभागों और प्रमुख कंपनियों (राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर) के एकीकरण के द्वारा डिजिटल रूप से सशक्त भारतीय समाज के लिए ये एक योजनागत पहल है। भारतीय नागरिकों के लिए आसान पहुँच पर सभी सरकारी सेवा उपलब्ध कराने के लिए इस देश का डिजीटलाइजेशन करना जरूरी है। इस कार्यक्रम के तीन मुख्य क्षेत्र हैं :-

- भारतीय लोगों के लिए जनोपयोगी सेवा की तरह पूरे देश में डिजिटल संरचना हो क्योंकि ये तेजगति की इंटरनेट पहुँच उपलब्ध करायेगा जिससे सभी की सरकारी सेवा तक आसान और तेज पहुँच हो जाएगी। ये नागरिकों को जीवन पर्यन्त ऑनलाईन और प्रामाणिक रूप से डिजिटल पहचान उपलब्ध करायेगा। ये किसी भी ऑनलाईन सेवा जैसे बैंक खाता संभालना, वित्त प्रबन्ध सुरक्षित और सुनिश्चित साईबर स्पेस शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा आदि के लिए बेहद कारगर साबित होगा।
- सुशासन की अत्यधिक मांग और ऑनलाईन सेवा डिजीटलाइजेशन के द्वारा वास्तविक समय में सभी सेवाओं को उपलब्ध करायेगा। डिजिटल रूप में बदली हुई सेवा भी वित्तिय लेन-देन को आसान, इलेक्ट्रॉनिक और बिना नकद के बनाने के द्वारा ऑनलाईन व्यापार करने के लिए लोगों को बढ़ावा देगी।
- भारतीय लोगों को डिजिटल संसाधनों की वैश्विक पहुँच के द्वारा डिजिटल साक्षरता को वास्तव में मुमकिन बनाएगी। ऑन लाईन प्रमाण पत्र या जरूरी दस्तावेज को जमा करने के लिए ये लोगों को सक्षम बनायेगी न कि स्कूल, कॉलेज कार्यालय या किसी संस्थान में भौतिक रूप से प्रस्तुति की जरूरत होगी। इस पहल के निम्न लक्ष्यों को सुनिश्चित करने के लिए भारतीय सरकार के द्वारा डिजिटल इंडिया कार्यक्रम को लागू किया गया है।
- ब्रॉडबैंड हाईवे सुनिश्चित करना।
- मोबाईल फोन के लिए वैश्विक पहुँच को सुनिश्चित करना।
- डिजीटलाइजेशन के माध्यम से सरकार में सुधार के द्वारा ई-गवर्नेंस लाना।
- सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलिवरी के द्वारा ई-क्रांति लाना तथा सभी को ऑनलाइन सूचना उपलब्ध करवाना।
- ज्यादा आईटी नौकरियों को सुनिश्चित करना।

Neelam Kumari
B.Com IV Sem.
Roll No.163005



HIMARI GANGA

स्टार्ट अप इंडिया स्टैंडअप इंडिया

स्टार्टअप इंडिया स्टैंडअप इंडिया एक पहल है जो 16 जनवरी, 2016 को शुरू की गई। इस योजना की घोषणा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा उनके स्वतन्त्रता दिवस 2015 के भाषण में की गयी थी। ये कार्यक्रम सरकार की तरफ से युवाओं के लिए एक उपहार है। ये उन्हें नया व्यवसाय या नवाचार परियोजनाओं को स्थापित करने में मदद करेगा। इस तरह देश के सभी युवाओं को प्रोत्साहित किया जायेगा और उनके अभिनव विचारों को रोजगार का सृजन करने के लिए प्रयोग किया जाएगा। ये देश के आर्थिक विकास और युवाओं के कैरियर के विकास में बहुत सहायक सिद्ध होगा।

इस पहल को सफल करने के लिए ऑनलाईन कनेक्टिविटी के माध्यम से भारत के लगभग सभी उच्च शिक्षण संस्थानों की भागीदारी के प्रयासों की आवश्यकता है। इस कार्यक्रम से भारत को दुनिया की स्टार्टअप राजधानी बनने में सहायता मिलेगी। स्टार्टअप इंडिया के शुरू किये जाने के साथ ही इस योजना की पूरी कार्यविधि पेश की जाएगी। एक उच्च स्तरीय अंतर मंत्रालयी समूह की स्थापना के द्वारा एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की योजना बनायी गई है, जो नवाचार की देखरेख के साथ स्टार्टअप प्रस्तावों के मूल्यांकन से ये सुनिश्चित करने के लिए वे प्रोत्साहन के योग्य हैं या नहीं।

ये पहल स्टार्टअप को नये कारोबार की शुरुआत में सहायता करने में सरकार की ओर से किया गया एक प्रभावी प्रयास है विशेष रूप से नये विचारों को रखने वालों के लिए। ये छोटे और बड़े स्तर के उद्यमियों के स्तर को सुधारने में मदद करने के साथ ही दूसरों के लिए रोजगार के नये अवसरों का निर्माण करेगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सभी बैंकों से कम से कम एक दलित और एक महिला उद्यमी को अपना व्यवसाय खोलने के लिए प्रोत्साहित करने का अनुरोध किया है। भारत में नये विचारों के साथ प्रतिभा सम्पन्न और कुशल युवाओं की कोई कमी नहीं है, हालांकि उन्हें आगे बढ़ने के लिए कुछ प्रभावी समर्थन की आवश्यकता है। सभी आईआईटी, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों, आईआईएम, एनआईटी और भारत के अन्य संस्थानों को सीधे इस अभियान के सफल प्रक्षेपण के लिए एक दूसरे से जोड़ा जाएगा।

Anita Devi
B.Com IV Sem.
Roll No.163007

बेरोजगारी

जो लोग काम करना चाहते हैं और ईमानदारी से नौकरी की तलाश कर रहे हैं लेकिन किसी कारणवश उन्हें नौकरी नहीं मिल पा रही है, उन्हें बेरोजगार कहा जाता है। इसमें उन लोगों को शामिल नहीं किया जाता है जो स्वेच्छा से बेरोजगार है और जो शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य समस्या के कारण नौकरी करने में असमर्थ हैं।

ऐसे कई कारक हैं जो देश में बेरोजगारी की समस्या का कारण बनते हैं इसमें मुख्य है : मंदा औद्योगिक विकास, जनसंख्या में तीव्र वृद्धि, सैद्धांतिक शिक्षा पर केन्द्रित रहना, कुटीर उद्योग में गिरावट, कृषि मजदूरों के लिए वैकल्पिक रोजगार के अवसरों की कमी, तकनीकी उन्नति न होना।

बेरोजगारी केवल व्यक्तियों को ही प्रभावित नहीं करती बल्कि देश के विकास की दर को भी प्रभावित करती है। इसका देश के सामाजिक और आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, बेरोजगारी के कुछ परिणाम यहाँ पर दिए गए हैं :-

- ❖ अपराध दर में वृद्धि
- ❖ कौशल और हुनर का नुकसान
- ❖ राजनैतिक अस्थिरता
- ❖ मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे
- ❖ धीमा आर्थिक विकास

हैरानी की बात यह है कि समाज में नकारात्मक नतीजों के बावजूद बेरोजगारी भारत में सबसे ज्यादा अनदेखी समस्याओं में से एक है। सरकार ने समस्या को नियंत्रित करने के लिए कुछ कदम उठाए हैं; हालांकि ये कदम पर्याप्त प्रभावी नहीं है। सरकार के लिए इस समस्या को नियंत्रित करने हेतु कार्यक्रमों को शुरू करना ही काफी नहीं है बल्कि उनकी प्रभावशीलता पर भी ध्यान देना जरूरी है और यदि आवश्यकता पड़े तो उन्हें संशोधित करने का कदम भी उठाना चाहिए।

Tulsi Devi
B.Com IV Sem.
Roll No.163011



काला धन

काला धन मूल रूप से काला बाजार में अर्जित धन है। यह वह राशि है जो सरकार से छिपाई गई है ताकि टैक्स अदायगी से बचा जा सके। काले धन के संचय से समाज में कई नकारात्मक नतीजे देखने को मिलते हैं जिनमें आर्थिक और सामाजिक असमानता प्रमुख है।

काले धन के स्रोत :

अब यह सवाल है कि जब काले धन के इतने नकारात्मक प्रभाव हैं तो सरकार इस समस्या का उन्मूलन करने के लिए कदम क्यों नहीं उठा रही है? सरकार काले धन से देश को मुक्त करने के प्रयास कर रही है लेकिन इस बीमारी के स्रोत से घुटकारा पाने के लिए अपनाई गई नीतियों की तुलना में काला धन संग्रह करने वालों द्वारा अपनाये जाने वाले हथकण्डे अधिक मजबूत हैं।

यह कहने की जरूरत नहीं कि आयकर, राज्यकर, निगमकर, उत्पाद शुल्क और सीमा शुल्क सहित विभिन्न प्रकार के करों की चोरी काले धन को पैदा करने की कुँजी है। यहाँ काले धन के विभिन्न स्रोतों पर नज़र डाली गई है :-

1. **निर्यात के माध्यम से काली आय :** बहुत सारा काला धन उन व्यवसायों द्वारा उत्पन्न होता है जो अपने सामान को निर्यात करते हैं।
2. **ब्लैक मार्केट :** ब्लैक मार्केट काले धन का एक अन्य स्रोत है।
3. **शेयर बाजार :** शेयर मार्केट ट्रेड के माध्यम से बहुत अधिक लाभ उत्पन्न होता है। इस तरह का बेहिसाब लाभ काले धन के संग्रह को बढ़ावा देता है।
4. **अवैध कमीशन :** कई सरकारी अधिकारी सामान्य सेवाओं के लिए अवैध कमीशन लेते हैं। इस माध्यम से अर्जित आय काले धन को बढ़ावा देती है।
5. **रिश्वत :** सरकार और निजी क्षेत्र के विभिन्न स्तरों पर रिश्वतखोरी चलती है जो प्रत्यक्ष रूप से काले धन को बढ़ावा देती है।
6. **घोटाले :-** राजनेताओं और सत्ता में रहने वाले अन्य लोगों द्वारा किए गए घोटाले निःसंदेह काले धन का एक प्रमुख स्रोत है।

निष्कर्ष :- दशकों से काले धन की समस्या हमारे समाज में कायम रही है। यह सही समय है कि सरकार को इस बुराई के चुंगल से देश को मुक्त करने के लिए सफल योजना के लिए काम करना चाहिए।

Vaishali Patiyal
B.Com VI Sem.
Roll No.151022

ई-कॉमर्स या इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स

ई आपने कई बार सुना होगा। कॉमर्स यह शब्द आपको शायद नहीं मालूम। आज के समय में हर दूसरा व्यक्ति ई-कॉमर्स का उपयोग कर रहा है। आज भारत में ई-कॉमर्स विषय के साथ शानदार कैरियर बनाया जा सकता है, लेकिन इससे पहले इसके बारे में जानना जरूरी है -

चलिये पहले आपसे पूछ लेते हैं कि आप इंटरनेट पर क्या-क्या करते हैं, तब बाद में बतायेंगे कि क्या होता है ई-कॉमर्स-

- ❖ क्या आप इंटरनेट बैंकिंग करते हैं?
- ❖ क्या आप ऑनलाइन रीचार्ज करते हैं?
- ❖ क्या आप इंटरनेट पर विज्ञापन देखते हैं?
- ❖ क्या आप इंटरनेट से सॉफ्टवेयर डाउनलोड करते हैं?
- ❖ क्या आप ऑनलाइन शॉपिंग करते हैं,
- ❖ क्या आप ऑनलाइन मैगजीन पढ़ते हैं?
- ❖ क्या आप ऑनलाइन टैक्सी बुक करते हैं?



HIMARI GANGA

- ❖ क्या आप OLX और क्विकर पर पुराना सामान बेचते हैं? ❖ क्या आप ऑनलाइन खाना ऑर्डर करते हैं?

अगर आप इनमें से एक भी काम करते हैं तो आप भी ई-कॉमर्स का प्रयोग करते हैं। जी हाँ इंटरनेट के जरिये व्यापार करना ही ई-कॉमर्स कहलाता है, चाहे वह सामाना खरीदना या बेचना। इसके साथ-साथ इंटरनेट पर गेम्स, वीडियो, ई-बुक्स, सर्च, डोमेन नेम सर्विस, ई-लर्निंग या ई-शिक्षा भी ई-कॉमर्स के अन्तर्गत आता है। यानि ऐसे सभी क्षेत्र जिनके माध्यम से ग्राहकों को सुविधायें देकर उनसे आर्थिकी लाभ लिया जाता है और ऐसे क्षेत्र भी जिसमें सीधे धन का आदान-प्रदान न कर विज्ञापन के माध्यम से आर्थिक लाभ मिल सकता है, ई-कॉमर्स के अन्तर्गत आते हैं। आज इंटरनेट के माध्यम से ई-कॉमर्स का उपयोग करते हैं इसीलिए जिन बेवसाइट का इस्तेमाल आप इस दौरान करते हैं वह ई-कॉमर्स बेवसाइट कहलाती है।

आज के दौर में गूगल और फेसबुक विज्ञापन के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बन गये हैं। लोगों की रुचि आज ऑनलाईन शॉपिंग में बढ़ रही है यहाँ तक लोग किराना का सामान, कपड़े, गहने, फर्नीचर यहाँ तक कि खाना और सब्जी तक इंटरनेट से मंगा रहे हैं। इसी बजह से भारत में नई-नई बेवसाइट ई-कॉमर्स के क्षेत्र में आगे आ रही है। इसीलिए ई-कॉमर्स में कैरियर के अवसर बढ़ते जा रहे हैं।

Vinay Kumar
B.Com IV Sem.
Roll No.163019

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार समाज में तेजी से फैलने वाली बीमारी है जिसने बुरे लोगों के दिमाग में अपनी जड़े जमा ली है। कोई भी जन्म से भ्रष्ट नहीं होता बल्कि अपनी गलत सोच और लालच के चलते धीरे-धीरे वो इसका आदि हो जाता है। यदि कोई परेशानी, बीमारी आदि कुछ आए तो हमें धैर्य और भरोसे के साथ उसका सामना करना चाहिए और विपरीत परिस्थितियों में भी बुरा काम नहीं करना चाहिए। किसी के एक गलत कदम से कई जीवन प्रभावित होते हैं। हम अकेले का ही अस्तित्व नहीं है इस धरती पर, हमारे जैसे कई और भी हैं। इसीलिए हमें दूसरों के बारे में भी सोचना चाहिए और सकारात्मक विचार के साथ जीवन को शांति और खुशी से जीना चाहिए।

आज के दिनों में, समाज में बराबरी के साथ ही आमजन के बीच में जागरुकता लाने के लिए नियम कानून के अनुसार भारत सरकार ने गरीबों के लिए कई सारी सुविधाएं उलब्ध कराई है जबकि सरकारी सुविधाएं गरीबों की पहुँच से दूर होती जा रही है क्योंकि अधिकारी अन्दर ही अन्दर गठजोड़ बना कर गरीबों को मिलने वाली सुविधाओं का बंदरबॉट कर रहे हैं। अपनी जेबों को भरने के लिए वह गरीबों का पेट काट रहे हैं।

समाज में भ्रष्टाचार के कई कारण हैं। आज के दिनों में राजनीतिज्ञ सिर्फ अपने फायदे की नीति बनाते हैं न कि राष्ट्रहित के लिए। वे केवल अपने को प्रसिद्ध करना चाहते हैं जिससे उनका फायदा होता रहे, उन्हें जनता के हितों और जरूरतों की कोई परवाह नहीं। आज इंसानियत का नैतिक पतन हो रहा है और सामाजिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। भरोसे और ईमानदारी में आयी इस गिरावट की वजह से ही भ्रष्टाचार अपने पाँव पसार रहा है।

भ्रष्टाचार को सहने की क्षमता आम जनता के बीच बढ़ चुकी है। इसकी खिलाफत करने के लिए समाज में कोई मजबूत लोक मंच नहीं है, ग्रामीण क्षेत्रों में फैली अशिक्षा, कमजोर आर्थिक ढांचा आदि कई कारण भी जिम्मेदार हैं, भ्रष्टाचार के लिए। सरकारी कर्मचारियों का कम वेतनमान उन्हें भ्रष्टाचार की ओर उन्मुख करता है। सरकार के जटिल कानून प्रक्रिया लोगों को सरकारी मदद से दूर ले जाती है। चुनाव के दौरान तो ये अपने चरम पर होते हैं। चालाक नेता हमेशा गरीब और अनपढ़ों को ख्याली पुलाव में उलझाकर उनका वोट पा लेते हैं। उसके बाद फिर चंपत हो जाते हैं।

Nitin
B.Com IV Sem.
Roll No.163003



नकदी रहित भारत (कैशलेस इंडिया)

केन्द्र की राजग सरकार द्वारा उच्च मूल्य वाली मुद्रा के विमुद्रीकरण के परिणामस्वरूप नकदी रहित या कैशलेस भारत की संकल्पना का महत्त्व बढ़ गया है। नवम्बर 8, 2016 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अचानक 500 एवं 1000 रुपये के नोटों के विमुद्रीकरण की घोषणा की तो चारों तरफ अफरा-तफरी मच गई और पूरे देश में हर जगह बैंकों के काउंटरों पर अपने पुराने नोट बदलकर नए नोट पाने के लिए लोगों की कतारें लग गईं।

बहरहाल इस तरह से देश में एक नई क्रान्ति जिसे "नकदी रहित भारत" या "कैशलेस भारत" की संज्ञा दी गई, का आगाज हो गया और इस क्रान्ति ने लोगों को नकदी में लेन-देन करने की अपनी मानसिकता में बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया। इस कदम द्वारा धीरे-धीरे लोगों की नकदी पर आश्रित रहने की प्रवृत्ति में कमी आ रही है और देश में नकदी रहित लेन-देन की प्रक्रिया का विकास हो चुका है।

नकदी रहित भारत का महत्त्व

- ★ बिना नकदी के लेन-देन की सुविधा, नकदी लाने और ले जाने से जुड़ी हुई सभी परेशानियों से राहत पहुँचाता है।
- ★ यह वर्तमान दौर में दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने जैसा है क्योंकि पूरे विश्व में कई देशों में लेन-देन इलेक्ट्रॉनिक ट्रांजेक्शन के द्वारा ही होता है और इसके लिए नकदी की जरूरत नहीं रह गई है।
- ★ डिजिटल ट्रांजेक्शन आपको अपने खर्चों को एक बार में ही सरसरी तौर पर देखकर हिसाब लगाने की सुविधा प्रदान करता है जिससे आप अपने बजट को आसानी से नियंत्रित कर सकते हैं।
- ★ बिना नकदी के किए लेन-देन की जांच आसानी से की जा सकती है इसलिए इन पर आवश्यक करों का भुगतान अनिवार्य हो जाता है जिससे काले धन की समस्या से मुक्ति मिलती है।
- ★ कैशलेस मोड के माध्यम से कर संग्रह आसान हो जाता है और आर्थिक विकास की गति तेज हो जाती है क्योंकि सरकार द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार सृजन, बुनियादी ढांचे के विकास एवं लोगों के समग्र कल्याण पर खर्च करना आसान हो जाता है।
- ★ करों के संग्रह में वृद्धि होने की वजह से कर वसूली के ढांचे में करों की दरें कम हो जाती हैं।
- ★ गरीबों एवं जरूरतमंदों को इस माध्यम से मौद्रिक लाभ सीधे उनके बैंक खातों में हस्तांतरित करने की सुविधा मिलती है जिससे बेईमान दलालों द्वारा गरीब शोषित होने से बच जाते हैं।
- ★ बिना नकद लेन-देन के द्वारा हवाला चैनलों के माध्यम से काले धन का आपराधिक एवं आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा देने में किये जा रहे इस्तेमाल पर रोक लगती है।
- ★ इस सुविधा की वजह से सरकार द्वारा करेंसी नोटों के मुद्रण एवं प्रचलन के लागत में पर्याप्त बचत होती है।
- ★ बैंकों में भारी मात्रा में नकदी जमा रहने की वजह से ब्याज दरों को कम करने में मदद मिलती है और साथ ही बैंक इस नकदी का इस्तेमाल उत्पादक कार्यों में करने में समर्थ हो जाते हैं।

निष्कर्ष : कैशलेस या लेन-देन के लिए नकदी रहित अर्थव्यवस्था (कैशलेस इकॉनमी) अवधारणा डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का एक हिस्सा है और इसकी दृष्टि भारत को एक ऐसे समाज में बदलने पर केन्द्रित है जो डिजिटल रूप से सक्षम हो एवं जहां बिना नकद लेन-देन के कई सशक्त तरीके विकसित हो चुके हों। नतीजतन, क्रेडिट और डेबिट कार्ड, मोबाइल, वॉलेट्स, बैंकों के प्री-पेड कार्ड्स, युपी आई, यूएसएसडी, इंटरनेट बैंकिंग आदि जैसे डिजिटल माध्यमों के द्वारा, निकट भविष्य में भारत पूरी तरह से कैशलेस या नकदी रहित होने की तरफ अग्रसर है।

Sushma Devi
Class B.Com VI Sem.
Roll No.151007



HIMARI GANGA

“हमारे जीवन में कम्प्यूटर की उपयोगिता

एक समय था, जब लोगों के पास गणना करने के लिए कुछ भी नहीं था। वे लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़ों का इस्तेमाल करते थे, दानेदार वस्तुओं का भी उपयोग करते थे। दिन महीने याद रखने के लिए दीवारों पर चिन्ह बना लिया करते थे।

सन् 1833 में एक मशीन तैयार की गई, जिसे चार्ल्स बैबेज ने तैयार किया था। उसका नाम 'डिफरेंस मशीन' रखा गया था। उस मशीन में कई पहिए लगे हुए थे। उन पहियों को घुमाने से गणितीय प्रश्नों के हल मिलते थे। उस मशीन में एक बहुत बड़ा दोष था, जिसके चलते वह अधिक सफल नहीं रही। दोष यह था कि उस मशीन से एक ही काम लिया जा सकता था।

चार्ल्स बैबेज ने एक नए प्रकार की मशीन तैयार करने का निर्णय लिया। चार्ल्स बैबेज ने अपने प्रयासों के चलते एक नए प्रकार की मशीन बना ली। उस मशीन में 'प्रोग्राम' बनाकर प्रश्नों का हल किया जा सकता था। उस मशीन का नाम 'एनालिटिकल इंजन' रखा गया।

चार्ल्स ने जो सिद्धान्त उस इंजन को बनाने के लिए अपनाया था, आज कम्प्यूटर में भी उसी सिद्धान्त का इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए चार्ल्स बैबेज को कम्प्यूटर का जनक कहा जाता है।

हां, चार्ल्स बैबेज ने एनालिटिकल इंजन बनाने का जो सिद्धान्त दिया था, उसे पूरा करने से पूर्व ही उसकी मृत्यु हो गई थी। उसके इस अधूरे कार्य को उसकी एक प्रिय मित्र लेडी एडा ने पूरा किया था। इस तरह दुनिया का सबसे पहला प्रोग्रामर लेडी एडा को माना जाता है।

चार्ल्स बैबेज और ब्लेज पास्कल द्वारा बनाई गई मशीनें पूरी तरह से यांत्रिकीय थीं वही हर्मन हॉलरिथ ने सबसे पहले विद्युत शक्ति का प्रयोग करके एक मशीन का आविष्कार किया और उस मशीन का नाम टेबुलेटर रखा। टेबुलेटर के आविष्कार से अंकगणित के प्रश्नों के हल आसान हो गए। हर्मन ने अपने आविष्कार को बेचने के लिए एक कम्पनी बनाई। उस कंपनी का नाम टेबुलेटिंग कंपनी रखा गया था। आगे चलकर टेबुलेटिंग कंपनी में अनेक कंपनियां मिल गईं। ऐसे में उसका नाम बदला गया। उसका नाम आई.बी.एम. रखा गया। आज की दुनिया में सबसे ज्यादा कम्प्यूटर बनाने वाली कंपनी आई.बी.एम. है।

सन् 1943 में हावर्ड युनिवर्सिटी के हावर्ड आईकेन ने एक अन्य मशीन का आविष्कार किया। उसका नाम मार्क-1 रखा गया। दो वर्षों के बाद सन् 1945 में संयुक्त राज्य अमेरिका में एक इलैक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर का आविष्कार किया गया। उसका नाम एनिएक था। इस तरह आधुनिक कम्प्यूटर का आगमन हुआ।

कम्प्यूटर के प्रयोग से हमें तरह-तरह के लाभ हैं।

कम्प्यूटर बहुत ही कम समय में कोई भी कार्य पूरा कर देता है। इसकी गति मोप्स तक की होती है। कम्प्यूटर द्वारा जो गणना की जाती है, वह बिल्कुल सटीक होती है। कम्प्यूटर बार-बार किए जाने वाले कार्य को भी बड़ी आसानी से करता है। वह व्यक्ति की तरह न तो थकता है और न ही अपनी जिम्मेदारी को नजर अंदाज करता है।

कम्प्यूटर अनेक लोगों का कार्य अकेला कर सकता है। इसकी मेमोरी बहुत ज्यादा होती है। आज का युग कम्प्यूटर युग है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र बचा नहीं है जिसमें कम्प्यूटर का उपयोग न होता हो। शिक्षा चिकित्सा विज्ञान, वाणिज्य, बैंकिंग क्षेत्र तो इस पर पूरी तरह निर्भर हैं।

Monika Thakur
B.Com VI Sem.
Roll No. - 151015

मेक इन इंडिया (Make in India)

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 25 सितम्बर, 2014 को दिल्ली के विज्ञान भवन में "मेक इन इंडिया" मिशन की शुरुआत करते हुये कहा कि हम नहीं चाहते कि भारत की किसी भी उद्योग कंपनियों को भारत छोड़ कर जाना पड़े। नरेन्द्र मोदी ने कहा हम चाहते हैं कि भारत की कम्पनियों की छवि भी अन्तर्राष्ट्रीय कंपनियों की तरह लगे। इस अवसर पर उन्होंने निवेशकों को यह भरोसा दिलाया कि सरकार आपका, लोगों का पैसा डूबने नहीं देगी और इस मेक इन इंडिया को शेर के कदम जैसा बताया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस मेक इन इंडिया का मुख्य उद्देश्य था, कि विदेशी निवेश को भारत में ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देना और हमारे यहाँ के नागरिकों को रोजगार भी प्राप्त हो सके, ताकि विनिर्माण के क्षेत्र में हमारा देश अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक पहचान बना सके।

अगर हम 'मेक इन इंडिया' को दूसरे शब्दों में कहे तो 'मेड इन इंडिया' का तात्पर्य यह है कि जिन वस्तुओं का निर्माण हमारे ही देश में किया गया हो। हमारे देश में बनी वस्तुओं का मूल्य भी हमारे लिए कम होगा तथा हम उनको दूसरे देशों में निर्यात करके अपने देश की आय में बढ़ोतरी करेंगे और साथ-साथ बहुत से हमारे देश के नौजवानों को रोजगार भी मिलेगा। एफ डी आई (FDI) को नए ढंग से परिभाषित करते हुए नरेन्द्र मोदी ने कहा भी था कि एफ.डी.आई. से तात्पर्य है -फर्स्ट डेवलप इंडिया। 30 देशों की भागीदारी सहित देश-विदेश में एक साथ शुरू किये गए इस मिशन के लिए लगभग 930 करोड़ का प्रावधान किया गया है।

नरेन्द्र मोदी के मेक इन इंडिया अभियान के लिए लगभग 3000 कम्पनियों को जोड़ने का लक्ष्य है। इस अभियान के अन्तर्गत सॉफ्टवेयर, बिजली, मोटर, वाहन, कागज ऐसे ही बहुत सारे क्षेत्रों में विनिर्माण को विश्वस्तरीय बनाने पर जोर दिया गया है। केन्द्र सरकार के इस कार्यक्रम की शुरुआत के साथ ही देश में रोजगार के अवसरों में तेजी की सम्भावना नजर आने लगी है।

Nirma Kumari
B.Com VI Sem.
Roll No.151014



रुपये को मिला नया प्रतीक चिन्ह

₹

सम्राट शेरशाह द्वारा पहली बार रुपया जारी करने के तकरीबन 500 साल बाद और आधुनिक भारत द्वारा मौजूदा कई संकेतों और प्रतीकों को स्वीकार करने के करीब 50 साल बाद 15 जुलाई, 2010 को भारतीय मुद्रा को अपना प्रतीक चिह्न मिला है। सभी वैश्विक मुद्राओं के प्रतीक चिह्नों को देखकर वर्ष 2009 में भारत सरकार ने भी यह घोषणा की थी कि वह रुपए को एक प्रतीक चिह्न देना चाहती है। वैश्विक मुद्राओं में अमेरिका डॉलर ब्रिटिश स्टर्लिंग पाँड, यूरो और येन सबके अपने प्रतीक हैं। सरकार ने फैसला किया कि वैश्विक मुद्राओं के बीच भारतीय रुपए की भी अपनी एक अलग पहचान होनी चाहिए।

भारतीय मुद्रा का राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह डिजाइन करने का श्रेय तमिलनाडु के 32 वर्षीय रिसर्चर डी. उदय कुमार को जाता है। जब हम डॉलर, पाउण्ड या येन को प्रदर्शित करने वाले चिह्न देखते थे तो यह सवाल मन में आते थे कि भारतीय रुपए का कोई प्रतीक चिह्न क्यों नहीं है। अक्सर रुपए का लघु रूप 'रु' लिखा जाता था या अंग्रेजी में अक्सर Rs. रुपए के लिए इस्तेमाल किया जाता था। चूँकि रुपया सिर्फ भारत का नहीं, पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका आदि देशों की भी मुद्रा है, इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसका कोड आई एन आर यानी 'इंडियन नेशनल रूपी इस्तेमाल किया जाता है। रुपए की यह नई डिजाइन देवनागरी के 'र' के बीच में शिरोरेखा के समान्तर एक रेखा है जो तिरंगे झंडे जैसे आकार व्यक्त करती है औ इसे लिखना आसान होगा। वैसे यह दिलचस्प बात है कि अमेरिकी डॉलर का चिह्न भी अंग्रेजी के 'एस' अक्षर से मिलता-जुलता है, वह सबसे प्रचलित है। चूँकि अमेरिका महाद्वीप पर मध्ययुग से सबसे पहले पहुँचने वाले लोग स्पेनी थे इसीलिए यह माना जाता है कि शुरूआती सिक्कों को स्पेनिश 'पेसो' का संक्षिप्त रूप 'पीएस' लिखा जाता था जो और भी संक्षिप्त होकर मौजूदा प्रतीक चिह्न बन गया।

हमने जो रुपए का प्रतीक चिह्न लिया है वह कई अर्थों में भारत की संस्कृति और विश्व का प्रतीक है। यह पहली नज़र में देवनागरी के लिए 'र' अक्षर जैसा दिखता है और विदेशी इसे 'आर' से मिलता जुलता होने से पहचान सके। इसकी ऊपरी दोनों रेखाएं जहाँ एक और राष्ट्रीय ध्वज का प्रतीक है, वहीं बराबर के चिन्ह "=" को भी व्यक्त करती है। यह बराबरी के मूल्य और संतुलन को व्यक्त करता है।

Neha Kumari
B.Com VI Sem.
Roll No.151008

HIMARI GANGA



हिमरी गंगा

महाविद्यालय पत्रिका

2016-17 & 2017-18



पहाडी अनुभागा



प्राध्यापक सम्पादक
डॉ. दायक राम ठाकुर

छात्र सम्पादिका
बनिता देवी
बी.ए. षष्ठ सत्र
रोल नं. 15006

राजकीय महाविद्यालय द्रंग स्थित नारला
जिला मण्डी (हि०प्र०)



HIMARI GANGA

विषय सूची

क्र.स.	विषय	छात्र का नाम	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	बनिता देवी	95
2.	म्हारे कौल्जा रा संगीत समारोह	डॉ. दायक राम ठाकुर	96
3.	प्रौढ़ शिक्षा	रेखा	97
4.	मण्डयाली कहावतें	रिंकी	97
5.	फैशन	चिन्ता देवी	97
6.	झगड़ालू जनान	अनिता यादव	98
7.	आसारी बोली	सुनिता	98
8.	पाणी री समस्या	मीरा	99
9.	सबसे बड़ा कुण	ममता देवी	99
10.	मंडयाली चुटकुले	बनिता	99
11.	देखया करदे	बनिता	100
12.	ओ मेरे देशा रे लोको	भावना देवी	100
13.	सैर (सायरा रा साजा)	सोनिका देवी	100
14.	मेहनता रे बोल	शम्मी पटियाल	101
15.	मण्डयाली कविता	लता देवी	101
16.	कमीना परोणा	सुनिता देवी	101-102
17.	संत देवी दास	कुशाल चन्द	102
18.	नशा नी करणा	कपिल	103
19.	जिन्दड़ी	आशा कुमारी	103
20.	सोचा रा महत्व	बनिता देवी	103
21.	तनावा ते मुक्ति	शकुन्तला देवी	104



सम्पादकीय

धारे पाठको!

तुस्सा सभी जो मेरी नमस्ते होर राम-राम ।

ये मेरे कठे बड़ी खुशी री गल्ल ही कि मिंजो आसारे कौल्जा री पत्रिका 'हिमरी गंगा' रे पहाड़ी विभागा री छात्रा सम्पादिका बणने रा सुअवसर मिला । एतारे कठे हाऊं पहाड़ी विभागा रे प्राध्यापक सम्पादक डॉ.डी.आर. ठाकुर जी रा धन्यवाद कराहीं कि जिन्हें मिंजो ये मौका दिता । पहाड़ी बोली बिच आसा रे पहाड़ा री पुराणी सभ्यता होर संस्कृति री झलक मिलाई, पर आज कालकी नौवीं पीढ़ी पश्चिमी सभ्यता जो ज्यादा पसंद कराई कने आपणे पराणे रीति रिवाजा जो तुस्से भूलदी लगीरी, ए बड़े दुःखा री गल्ल ही । मेरा मतलब ये नी हया कि तुस्से पश्चिमी सभ्यता जो नी जाणो होर पहचाणो, पर आपणी स्थानीय संस्कृति रा अस्तित्व भी बणाई कने रखणा जरूरी हया । पहाड़ी संस्कृति जो बचाणे रे खातर तुसे क्या-2 करी सकाहें-

1. ये ठीक है कि कौल्जा अन्दर हिन्दी होर अंग्रेजी बोलणी चाहिए पर घरा-ग्रावां, आपणे रिश्तेदारा कने पहाड़ी बोली मंझ गल्ल करणी चाहिए ।
2. पहाड़ी बोली मंझ कविता, कहाणी, लेख लिखणे चाहिए ।
3. पहाड़ी नाटी गाणी होर नाचणी जरूर सीखणी ।
4. ग्रावां री देव संस्कृति होर उत्सव देखणे कने समझणे ।
5. घरा-ग्रावां रे सही रिति-रिवाजा जो प्रोत्साहन देणा होर खराब, बुरे रिवाज छाडी देणे ।
6. लोकगीत, लोकगाथाएं, लोकनृत्य रा सही ज्ञान लेणा होर नई पीढ़ी जो दसणा ।
7. बूढ़े बजुर्गा होर गुरुजना रा सम्मान होर आदर करणा ।

आसा रे सर होरी बार-बार मठे होर मठीयां जो बोल्दे रहांहे कि पहाड़ी विभागा जो लेख दो । बहुत कम लेख आए एसा गल्ला ते ये पता चलां कि मठे आज कौल्जा री एहड़ी चीजा मंझ रूची नी लेन्दे । बस कबल्ले लगीरे फौना बिच । इने फौने ता जीण्डा पट्टी दीती रा । खरे कामा रे खातर ता फोन जरूर इस्तेमाल करो पर इतने जादा नी । दोस्तो ए फेसबुक, ए टवीटर, ए व्हाट्सएप, ए सारी काल्पनिक दुनिया हयी, इधी बिच की पईरे, असली जिन्दगी बिच देखो, सोचो होर कुछ करो अगे बड़ा भारी संघर्ष हया । आपणे अन्दर छुपी प्रतिभा जो पहचाणो, जागो होर मेहनत करो नहीं त बादा बिच पछताऊणा पऊणा । दोस्तो एहड़ा देखेया सोचदे कि हाऊं तुस्सा जो लगीरी उपदेश देन्दी, हाऊं भी लगीरी कोशिश करदी ।

कौल्जा रे यों ध्याड़े नी आऊणे बार-2 एस कौल्जा मंझ एक बड़ा गंदा रिवाज पई गइरा कि मठे बड़े भारी अवसैन्ट रहाएं, एकी दूई ध्याड़े ते बाद नागा पाएँ, एहड़ा करी कने तुस्सा जो अगला-पिछला सबजैकट कुछ नी समझ आऊंदा । आसारे सर भी बार-2 बोल्लाहें कि कौल्जा बिच नागा नी पाणा । जे भई तुस्से जिन्दगी रे तीन साल पढ़ाई जो दीति रे त आवा कौल्जा जो डेली, हर कलास, हर सबजैकट, हरेक दिन कौल्जा रे ध्याड़े इन्जवाए करो, बादा बिच तुस्सो यो कौल्जा रे ध्याड़े बड़े याद आऊणे ।

आखिरा बिच हाऊं तिन्हा मठे कने मठिया रा धन्यवाद कराई जिने आपणे लेख एसा पत्रिका जो लिखे आशा कराई कि आसारी ये पत्रिका आपणी उत्कृष्ट रचनाओं रे खातर गौरवमयी स्थान प्राप्त करी सको ।

बनिता देवी

छात्र सम्पादिका

बी.ए. हिन्दी बिच छठा समैस्टर



HIMARI GANGA

म्हारे कौल्जा रा संगीत समारोह

भारतवर्ष आपणी पुराणी संस्कृति होर सभ्यता रे कठे सारे संसारा मंझ मशहूर हया। इधी बिच हिमाचल प्रदेशा री पहाड़ी संस्कृति रा आपणा खास महत्व हा। लोक संस्कृति केसी भी समाज कने क्षेत्रा री पहचान हुआई। जिले मण्डी जो छोटी काशी होर हिमाचली संस्कृति री राजधानी बोलाहें। पहाड़ी संस्कृति बिच लोकगीत, लोकनृत्य, लोकसाहित्य, लोकगाथाएं, देव परमपरा, लोकाचार इत्यादि-2 मशहूर हये। 'नाटी' हिमाचल प्रदेशा रा राज्यस्तरीय लोकगीत कने लोक नृत्य हा। नाटी त मण्डी मंझ है ही सभी ते मशहूर पर इधी कने मण्डी जनपदा अन्दर बाँठड़ा, लुड़ी, भ्यागड़ा, बारामासा, आँचली या जती, गिदा, गंगी, विवाह गीत, इत्यादि भी लोकसंस्कृति रा हिस्सा हये। 27 दिसम्बर 2017 रे ध्याड़े म्हारे कौल्जा मंझ रंगारंग लोक उत्सवा रा आयोजन किता। इयां त आसे जिन्दगी बिच भतेहरे प्रोग्राम देखीरे पर कुछ खास जेहड़े फंक्कशना री याद जिन्दगी बिच रही जाहां। ए संगीत समारोह सिर्फ लोकगीत पर ही केन्द्रित था। इधी खातर हाकं कौल्जा रे प्रिंसीपल डॉ अरविंद सहगला जो खूब सारी मुबारकबाद होर धन्यवाद देणा चाहां जिन्हा रे कुशल नेतृत्व होर बांकी सोचा रा ए नतीजा था। ए प्रोग्राम बड़ा ही बांका कने शानदार रहेया। आज की डेटा मंझ बड़े ही कम एहड़े शक्स हये जिन्हारा झुकाव होर रुचि लोक संस्कृति रे प्रति रहीरी। आज तुस्से केसी भी ब्याह-शादी या स्कूला-कौल्जा रे फंक्शना मंझ डी.जे साऊगी गीत कने नाच हुआं। आसारे समाज खासकर युवावर्ग रा झुकाव रिमिक्स, पंजाबी होर अंग्रेजी संस्कृति री तरफ जादा जे हया। स्कूला कौल्जा रे ज्यादातर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्ले बैक होर डीजे री धुना साऊगी हुआएं। आसा रे एस प्रोग्रामा रा दारोमदार संगीत विभागा रे प्राध्यापक डॉ. कल्याणचन्द मंडोत्रा पर ही था, तुस्से ये समझा कि प्रिंसीपल साहब निर्माता होर संगीत प्राध्यापक निदेशक थे। जिले मण्डी रे डी.सी. साहब श्री मदन चौहान कार्यक्रम रे बड़े मेहमान थे, एस कौल्जा बिच ज्यादातर मठे कने मठियां चुहार घाटी (अमर गढ) रे पढ़ाएं। चौहारघाटी मंझ कुल्लु होर मण्डी दोनों लोकसंस्कृति रा प्रभाव देखणे जो मिलां। एस क्षेत्रा मंझ मशहूर नाटी गायक नरेन्द्र ठाकुरा री नाटीयां बड़ी भारी चलाहीं।

'बुधुवा मामा गाल्टुवा-गोडे लाई दे मेरे तेला'- रामदेई री एसा नाटी मंझ सारा पंडाल झुमी गया। डी.सी. साहबा जो ए नाटी इतनी पसंद आई कि इन्हें एक बार भी कने रिपीट करने री फरमाईश किती। रामदेई री आवाजा रा एहड़ा जादू चला कि सब दर्शक मंत्रमुग्ध हुई गए। एस कार्यक्रम मंझ इयां त भतेहरे बांके-2 गाणे थे पर जेहड़े खास थे सेयों ये थे:-

- ओ दिल्लीये, म्हारे पहाड़ा रा दिल शिमला-रामदेई।
- सूरज लागा डूबदा लागी पड़दी छांव, मेरी प्यारी अंजू वे- हिमानी।
- सूपनै नाठा उड़ीये पूजा झूरी रे देशा हो- शिवकुमार।
- ढगै नी हांडणा नैणा लाडीये, ढगै रा पात्थरू काला हो- कल्पना।
- बूरा लागा तेरा गै पाणी पीऊंगा, ओ रीनू- ओ रीनू तेरी चिठी-पत्री आई न- सुलोचना।

प्रोगामा रे लास्टा बिच डॉ. हेम राज चन्देला (प्राध्यापक संगीत, राजकीय महाविद्यालय जोगेन्द्रनगर) री गैस्ट आइटम इतनी शानदार रही कि सारा पंडाल गुंजाएमान हुई गया। तिन्हे दो प्रस्तुतियां दीति, पैहली थी झूरी। 'पोषा-माघा री रातड़ी हिंवे भरीरी धारा, त पिछो झूरीयै हुआ जीऊणा भारा'।

दूजी प्रस्तुति थी- बरसोवा एक लोकगाथा। बरसोवा सरकाघाटा रे थौना-पिंगला इलाकै री मशहूर पारम्परिक लोक गाथा ही। आज ते कोई 80 साल पैहले एस इलाके मंझ बड़ी भारी गरीबी हुवा थी। लोक मठीयां रा ब्याह छोटी उम्रा बिच करी देहां थे। बरीणा ब्याह पद्धति प्रचलित थी। गरीबी बिच आम्मा-बापू आपणी नाबालिग मठीया रा ब्याह बड़ी उम्रा रे साहूकारा कने करां थे, बदले बिच दूल्हा पक्ष मठीया रे आम्मा-बापू जो ढब्बे देहां था। एकी किस्मा बिच ए मठीया जो बेचणे री कुप्रथा थी। एक 'लौहला' नावां री मठी थी। से एक अघेड़ उम्रा रे आदमी साऊगी ब्याह नी करणा चाहदी थी। तेसा रे बापू वे ब्याह पक्का करी दीता। मठीये पिंगला खाडा मंझ छाल देई के आत्महत्या करी दीति। से बरसोवे (बैशाख की संक्रान्ति) रा ध्याड़ा था, जेस दिन बारात आवणी थी होर मठीये आत्महत्या करी दीति। एस घटना पर आधारित-ए-लोगाथा बणी गई। बरसोवे रा ध्याड़ा आया बापूआ-2 डॉ. हेमराजा री आवाज कने शब्दे लोक मंत्रमुग्ध करी दीते। दर्शक गणारी आखीया ते आंसू टपकी गए सारा महौल गमगीन हुई गया। दोस्तो एहड़ी प्रस्तुतियां ता जिन्दगी याद रही जाणी, आज भी डॉ. हेमराजा रे शब्द याद आवहे ता दिला बिच रोणा आई जाहां। एहड़ा बोलां कि एस घटना ते बाद बरीणा ब्याह पद्धति खत्म होई गई। कार्यक्रम मंझ डॉ. शिवराम (प्राध्यापक संगीत, राजकीय महाविद्यालय बासा) तबले पर, मशहूर कलाकार सूरजमणी होरी ये शहनाई पर संगत दीति। इन्हें समारोहा बिच चार चांद लाई दिते। पाठक मित्रो आसा सभी रा फर्ज हया कि आगे वाली पीढ़ी रा झुकाव टेलीजिन, फोन कने इंटरनेट बिच इतना ज्यादा हया कि इन्हो आपणी पुराणी संस्कृति रा पता ही नी। इधी बिच आसा रा बी कसूर। शायद आसारा ए कार्यक्रम लोक संस्कृति रे कठे एक छोटा जा प्रयास था।

डॉ. दायक राम ठाकुर,
प्राध्यापक राजनीति शास्त्र विभाग



प्रौढ़ शिक्षा

हिमाचला अन्दर बूढ़े-बूढ़ियां जो पढ़ाणे री स्कीम चलीरी थी, जिधी जो प्रौढ़ शिक्षा बोल्हाएं। एकी ग्रावां जो बूढ़ेया जो पढ़णे रे खातर एक मैडम भेजी दीति। तेसे सारे गांवा री जनाना कठी कीती होर लाई पढ़ाणी। एक महीना हुई गया तिन्हा जो कुछ भी पढ़ना-लिखणा समझ नी आया। मैडमें तिन्हा जो अंग्रेजी पढ़ाणे री बार-2 कोशिश कीति। ए-फार ऐप्ल, बी-फार बाल, सी-फार कैट, डी-फार डॉग पर तिन्हा जो बिल्कुल भी समझ नी आया। फेरी तेसे मैडमे एक तरकीब सोची। तेसे अंग्रेजी इयां पढ़ाई:-

A for अमरू री लाड़ी B for बांकू री लाड़ी C for चेतु री लाड़ी D for डिंगु री लाड़ी
L for लालू री लाड़ी M for मणी री लाड़ी N for नानकू री लाड़ी S for शानु री लाड़ी

अझे मैडमे तिन्हो एस तक पढ़ाइरा था कि एक दिन चैकर चैकिंग करदा आया कि अनपढ़ जनानीयां पढ़या करां की नहीं, से प्रोग्रेस देखणा आइरा था। चैकर सभी जनाना ले लगा पूछदा। जनानीयां भी मैडमा रे स्टाइला मंझ दसदी लगी। चैकरे एकी जनाना ते पूछया W जो क्या बोल्हाएं। जनाना थोड़ी देर confuse हुई गई, थोड़ी देर सोची के गोलया फुकी परे, लगया ता करांही मणीरामा री लाड़ी, मुई उल्टी पता नीं की पइरी। M जो उल्टा करो ता से W बणी जां, जनाने आपणा दमाग खरा लगाया।

रेखा

बी.ए. दूजा समैस्टर

मण्डयाली कहावतें

जुआं पीछे खींद फुकणीं।
दूजे रे बालू पीछे आपणा नाक लोचना।
छेकी रे जूते री छेड़ बड़ी,
ओछे आदमी री करेड़ बड़ी।
अलणे जो लूण देणा।
कामा रा नावं नी, जाहणा जो बसावं नी।
मारना जबर, रजी जाओ टबर।
एक बारी मारया काकड़
सौ बारी फरोलेया झाकड़।
ना ता कान बीन्हणे ना गुड़ खाणा।
छेली हुई कने नी उटकी
ता बकरी हुई कने उटकणा।
माहल टूटी कातणे ते छुट्टी,
जेथी जातर तेथी बातर।
घीऊ हुंदा ता बाबरू पकदे,
आटा लेंदी ध्वार पर गुड़ नी हया।
माहखी जो ठूठठ दरयाव।
पहले ध्याड़े परौहणा,
दूजे ध्याड़े घरौणा
त्रीजे ध्याड़े डरौणा,
चौथे ध्याड़े पौणा भगौणा।

रिंकी

बी.ए. छठा समैस्टर

रोल नं० 15201

फैशन

मत पूछा आजकला दे कुड़ियां मुंडुआ दा हाल,
जरा भी नहीं रहेया इन्हां जो बुढ़िया दा ख्याल।
उट-पटांग कपड़े पहनी कने कौल्जा जो जांदें,
फिरी जोकर बनी करी होरी जो हंसादे।
कुन्हीं छड़डे खुले बाल, ता कुन्हीं अंग्रेजी कट,
उच्चियां अड्डियां दे शैंडला ते कर दियां खट-खट।
कुन्हीं पुछणा इन्हां दा हाल ये तां हुए गिरगिट,
मुंडु ता मुंडु कुड़ियां भी नी हुण घट।
मुंडुआ दियां नकला कर दियां झटपट,
कुन्हीं पैहनणी पैंटा तां कुन्हीं कुन्हीं पैहनणी सलैक्स।
पर घरे दी इन्हां जो क्या परवाह,
इन्हां जो ता हर बेले-नौंवे फैशना री चाह।
पर मत ही पूछा तुस्से फेशना री गल्ल,
घरा भले खाणे जो नी हो, ए फेशने दी गल्ल।
पर इस फैशने सारेयां री जड़ मटाई दिती,
भले मानसां जो भी चमचागिरी सिखाई दिती।

चिन्ता देवी

बी.ए. चौथा समैस्टर

रोल नं० 1160270103



HIMARI GANGA

झगड़ालू जनान

एक झगड़ालू जनान थी से सभी कने लड़दी रहीं थी। आपणी सासू जो त से समझदी कुछ भी नी थी। गल्ला-2 मंझ बचारी सयाणीयां जो नीचा दिखाणे रा मौका तोपदी रहीं थी। लाड़ा बचारा घराटा रे पट्टा मंझ पिसदा रहां था न आम्मा जो कुछ बोलदा था न लाड़ी जो, लाड़ीया जो से भतेरा समझान्दा रहेया पर तेसा जो कोई फर्क नी पौंदा था। एक ध्याड़े लाड़ी रे पेटा पीड़ लगी गई कने बड़ी भारी बमार हुई गई। बडा भारी इलाज किता पर कोई फर्क नी पया। फर्क किंहा पौंणा से जाणी-बूझी कने बमारी रा बहाना करेया करां थी। तेसे आपणी सासू जो नीचा दिखाणे रे कठे एक तगड़ी प्लान बनाई। ग्रावां रे पडंता जो ढब्बे देई कने आपणी चाला रा मोहरा बनाया। तिन्हे ग्रावां रा पंडत सदेया कने तेजो लाड़ी ठीक करणे रा उपाय पूछया। ब्राह्मणे बोल्या जे तू आपणी आम्मा रा मूंह काला कने पैर नीले करी के घरा ते काढी देंगा तां ही जनानी ठीक होणी नहीं ता ये आज या काल तक मरी सकां ही। लाड़े बड़ा सेचेया पर बचारे लाड़ी रे कठे हां करी दीति। सासू रा मूंह काला होर पैर नीले करी कने झगड़ालू जनानी रे सामने आई। लाड़ी मन ही मना मंझ बड़ी खुश होई। फेरी लगी बोलदी देखेया मेरे कने पंगा लेणे रा मजा होर जोरा-जोरा कने लगी बड़बड़ांदी "देखेया जनानियां रा दमाग, कराई दीते न पैर नीले कने मूंह काला।"

एहड़ा सुणी कने बाहरा ते लाड़ा लगा बोलणा,

"तू भी देख मर्दा री हेरा-फेरी,

मईये देखी ता ले एकी बारी ठीक ढंगा कने

माँ मेरी की तेरी।

तीने लयांदी री थी आपणी लाड़ी री मां यानी आपणी सासू।

शिक्षा:- दूजे रा बूरा करणे रे खातर जो गड़डा खोदाएं,

सेयों आपू ही तेस बिच पई जां हे।

अनिता यादव
बी.ए. चौथा समैस्टर

आशारी बोली

एड़ी क्या गुस्ताखी, क्या किती मैं बुराई,
पढ़दे-लिखदे ता थे नी, बोलने गलाणे ते भी गवाई।
एड़ी केड़ी खता हुई मेरे ते ओ, जे मेरे आपणेया हे
किती हाऊँ पराई।

क्या सोचदे के कुण ही क्या गलान्दी, ने कुथी ते आई।

हांउ तुसारी पहाड़ी, जो सारेया दिति भुलाई।

कधे हिन्दी बोली, कधे पंजाबी, फेरी

अंग्रेजी री किती बड़ाई।

ज्यादा पढ़ा लिखा लगने खातर,

मेरे ते मुंह दित्या फिराई।

बोली भाषा तबदीली ता हुंदी आई

पर आसे आपणी बोली रा अस्तित्व दिता मुकाई।

बचेया जो माँ-बापुए, हिंदी ता अंग्रेजी हे सिखाई

ए ता पिछड़ी, पुराणी ही, ए सोच केथी ते आई।

भई एड़ा भी क्या हुआ, ए ध्यान दित्या दिखाई
पहाड़ा री संस्कृति री पहचान हे दिती मुकाई।

भोटी, किन्नौरी, काँगड़ी, चंब्याली, मुहासवी,

सिरमौरी कने मंडयाली

इना सारिया रा नाउं हे दित्या मुकाई।

केसी भाषा ने मिंजों बैर नी, हर भाषा छैल हुई।

पर आपणी जो होरी ते छोटा समझना, केथी री रीत हई।

अंग्रेजी गाने माडरनीटी, ते भ्यागड़े पुराने हुए।

पहाड़ी ग्लादां ग्वार, ते अंग्रेजी री गाली मुँहा री शो

बढ़ाई।

हर भाषा बोली सीखा पढ़ा ते बोला, पर

आपणी मत देंदे गवाई।

हर बोली री आपणी अहमियत हुई

मेरे बगैर तुसा रा भी क्या बजूद रहणा ओ भाई।

सुन
बी.ए. दूजा समै



पाणी री समस्या

सारे बोलदे पाणी -पाणी
 पर सभी जो अक्ल पतानि कदी आणी ।
 बरसाती ता सारे भूली जाँदे
 पर गर्मियां जो ता सारे पछतांदे ।
 जे बरखा हुई जाओ थोड़ी से ज़े ज्यादा
 गालियाँ देवीं भगवाना जो दर्जना ते ज्यादा ।
 आपू रहणा सारा साल काटदे जंगल
 बोलाएं फेरी किहां हुणां आसारा मंगल ।
 जदी पाणी जाणा सुकी
 जानवरा समेत माहणुआं जाणा मुकी ।
 आसा आज कसम खाणी
 पाणी री एक-एक बूँ बचाणी ।

मीरा
 बी.ए. दूजा समैस्टर

सबते बड़ा कुण?

एक बारी एक शराबी मंदर जाई करी ब्राह्मणे जो
 पूछदा कि दुनिया च सबते बड़ा कुण है? ता ब्राह्मण बोलदा
 'बच्चा धरती बड़ी है।' ता शराबी बोलदा जे धरती बड़ी ता
 शेषनागे दे सिरे कजो घूमदी? ता ब्राह्मण बोलदा ' बच्चा
 शेषनाग बड़ा।' ता से फिरी पूछदा जे शेषनाग बड़ा ता
 शिवजिए गले क्यों पाया? ता ब्राह्मण बोलदा कि बच्चा
 शिवजी बडे । शराबी बोलदा 'जे शिवजी बडे ता पहाड़े च
 क्यों चड़े? ता सै ब्राह्मण बोलदा, बच्चा पहाड़ बड़ा। ता
 शराबी बोलदा जे पहाड़ बडा तां हनुमाने क्यों अपणें हथे च
 चुकया? ता ब्राह्मण बोलदा हनुमान बडा। तो शराबी बोलदा
 जे हनुमान बडा ता राम दे पैरा च क्यों पैया? ता सै ब्राह्मण
 बोलदा बच्चा राम बडे । शराबी पूछदा जे राम बडे ता सीता
 रे चक्कर च क्यों पैया? ता ब्राह्मण बोलदा, बच्चा सीता
 बड़ी। ता शराबी बोलदा जे सीता बडी ता रावणे क्यों हरी?
 ब्राह्मण बोलदा, रावण बडा। शराबी फिरी पूछदा जे रावण
 बडा ता लंका च कुत्ते दी मौत कजो मरेया?ता ब्राह्मण तंग
 आई करी बोलदा बच्चा, दुनिया च होर कोई बडा नी है
 शराबी सब ते बडा है ।

ममता देवी
 बी.ए. दूजा समैस्टर
 रोल नं0 160052

मण्डयाली चुटकुले

एक मयूजिका रा मास्टर एक छात्र जो बोलहां- तू केस ताला रे विषय बिच सभी ते ज्यादा जाणा?
 छात्र बोला- सर हाऊं ता हड़ताला रे विषय बिच सभी ते ज्यादा जाणा ।
 एक मठा आपणी गर्ल फ्रैंड जो बोलहां - अमीरा ते अमीर आदमी भी मेरे पिताजी रे आगे कटोरी लई कन्ने खड़ी
 रा हुआं ।
 गर्लफ्रैंड- फेरी ता तेरे पिताजी बडे भारी अमीर हुंगे । मठा- नई ता सेयों ता गोलगप्पे बेचाएं ।
 सोनू- दीदी येसो रसियों तू आपणी जीभा के कटी दे ।
 दीदी-बेवकूफा भला रसियों कोई जीभा के कटी सकाएं ।
 सोनू- की? काल ये ता मम्मीए बोलेया था कि तेरी जीभ कैँचीयां साही चलाई ।
 अध्यापक - मठेया जो बोलहां, स्वतंत्रता रा ध्याड़ा कधी मनाया जांदा?
 एक मठा बोला- सर, जी जेस ध्याड़े तुसे क्लासा जो नी आऊंदे ।

बनिता
 बी.ए. मुकदा समैस्टर
 रोल नं0 160052



HIMARI GANGA

देखया करदे

इक कली इक बार खिलदी,
बागा जो उजाड़ देखया करदे ।
मानव जिन्दगी इक बारी मिलदी,
एसा कने खिलाफत देखया करदे ।
पतझड़ा रेया डाला जो देखी कने,
बदनाम कुदरता जो देखया करदे ।
अम्मा बापू जो सियाणे देखी कने,
आपू ते जुदा देखया करदे ।
औरता जो शाक्ति रूप बोलदे,
कुड़िया जो तंग देखया करदे ।
जन्म भूमि री रक्षा री बेला,
आपणी चाल मंद देखया करदे ।

इस लहू जो संभाली के रखया,
आपू मंझ जंग देखया करदे ।
गुरु भगवाना रा रूप हुआं,
गुरु रा अपमान देखया करदे ।
भगवान करे तुसे खुश रहो,
केसी जो परेशान देखया करदे ।
आपणी जिन्दगी साफ रखया,
इस कौल्जा जो बदनाम देखया करदे ।

बनिता
बी.ए. मुकदा समैस्टर,
रोल नं० 160052

ओ मेरे देशा रे लोको

प्यार भाव एथी नी मिलदा,
जियां केसी रूखी जगा फूल नी खिलदा ।
आदमी एक दूजे जो प्यार नी करदे,
बस छोटी-2 गल्ला पिच्छे लगीरे मुए लड़दे ।
एक दूजे जो झली के नी राजी,
चाहे हो सलीमा री अम्मा, चाहे हो टेकू री दादी ।
जे आदमिया रा नी डर, ता भगवाना ते ता डर,
एस दुनिया मंझ कोई काम ता खरा कर ।
जे एड़ा ही रहया हाल, ता दस साला बाद,
क्या हुंगा, कर भला ख्याल ।
तू मुंजो नी लोड़ी हांउ तीजो न लोड़ी ।
पर एकी दुजे बाझी रही नी सकदे ।
फेरी किधियों लगी रे बाझी कठे रे मरदे ।
जेबे तक नी हुणा प्यारा रा प्रसार,
एकता भी नी हुई सकदी, कने लड़ाईयां री
ता पई जाणी भरमार ।
ओ मेरे देशा रे लोको, थोड़ा बहुत ता सोचो,
प्यार ता मयो बेमूला ही हा,
दरवाजा एथी जो सदा ही खुला हा ।

भावना देवी
बी.ए. छठा समैस्टर
रोल न० 15018

सैर (सायरा रा साजा)

सौज महीने साज्जे ध्याड़े
आसे लोक मनाएं सैर ।
कीड़े गूजू रा मुकेया कोप
रहे नरोगे मनाओ सैर ।
मुक्की बरखा बधली रीत
नवे नाज लेयाई सैर ।
धाना रा सिल्ला, छल्ली रा टुट
पेटु, ककड़ी, मंगाई सैर ।
कोठा, कुरी, भांगा री बूटी
डैनी रे फुले सजाई सैर ।
पाणी रा लौटा, दुबा री डाली
छीटे दित्ते नुहायी सैर ।
टिका लगाया, कुंगु रा
डोरी कने ढकायी सैर ।

जोत भखाई धूप धुन्खाया
ढकेया मूंड पुजाई सैर ।
मिल्ली आसीस सौगी खोड़
आमा बापू रे बांदे पैर ।
भल्ले खादे, बाबरू खादे
घरा-घरा मनाई सैर ।
आग भखाई विदा कित्ती
दयोवा नेड़े पुजाई सैर ।
नवें-नवें पकवान खवागें
खुशी-खुशी मनागें सैर ।

सोनिका देवी
बी.ए. दूजा समैस्टर





मेहनता रे बोल

मेहनता ते जी चुराने वाले,
तू एक ध्याड़े पछताणा ।
मजिल रही जाणी दूर,
तू रस्ते बिच ही रही जाणा ।
दूनियां तेरे उपरा गुजरनी,
तू कोसी भी नी उठाणा,
कोई नी हूणा तेरा साथी,
तू तेस दिन पछताणा ।
मेहनती हुणे तेरे ते अगे,
तू पिछे रही जाणा ।
याद आऊणी मेहनता री तूजो,
तेस वक्ता तेरे हाथ किच्छ नी आणा ।
समय बड़ा बलवान हुआं,
एस रा मोल समझा ।
जिन्हें समय रा मोल समझी कने
मेहनत कीती,
तेसरा बेड़ा पार होई जाणा ।

शम्मी पटियाल
बी.एस.सी. दूजा समैस्टर
रोल न0 17113

मंडयाली कविता

उठ वो माणुआ कमाई ले कुछ
बैठी के नी मिलणा कुछ भी,
इस शरीरे सरकाई ले कुछ ।
दुनियादारी दिखणा पौणी,
इस दिल्ला जो समझाई ले कुछ ।
बड़ा ओई गया रोणा धोणा
चल उठ कने कमाई ले कुछ ।
बुरा करी के बुरा ही मिलणा,
खरा कम भी कमाई ले कुछ ।
पैसा ही नी सब कुछ होंदा,
चार दोस्त भी बणाई ले कुछ ।
फोकेयां इरादेयां ने कुछ नी होणा,
पक्का मन बणाई ले कुछ
उठ वो माणुआ कमाई ले कुछ ।

लता देवी
बी.ए. मुकदा समैस्टर
रोल न0 330029

कमीना परौणा

एक बारी कुसकी रे घरा इक परौणा आया, परौणा भी एड़ा जे भई एक बारी, डटी गया ता जाणे रा नावं नी लेंदा था । ता से एथी भी डटी गया, एक दिन होया, हफता होया, 2 हफते होई गये, पर परौणा नी हिल्लया, गल्ला एड़ी-जिहां घरा रा मालक हो, आज एड़ा बणाया, हुण चाय देई देया, भ्यागा हलुआ बणाई देया । तेस री फरमाइशा पूरी करदे- 2 घरा वाले दुखी होई गये ।

हुण ता महीना होणे यो आई गया पर परौणा नी गया जी । घरा वाल्या सोच्या हुण ता कुछ करना ही पौणा, दोयाँ मियाँ-बीबिये प्लान बणाई, भई अस्से अप्पू मंझ खुब झगड़ा करगे ता परौण्यो सरमा रे मारे जाणा ही पौंगा । भ्याग होंदे ही दूई जणया खुब हल्ला पाया, लाड़ा-लाड़ीया जो कुटी कने, लाड़ी जोरा कने डाडा मारी । मारी दिति, मारी दिति, पता

नी कुन्ने सिखाया मेरा लाड़ा.....
कधी नी मारदा था मिंजो.....
पता नी क्या कुछ बोलो.....
मतलब तिसारा इशारा परोणे बखा जो था ।
परोणे सोच्या हुण मेरा जाणा ए ठीक रहणा ।
तिन्ने आपणा समान चुकया कने घरो जो निकली गया ।
लाड़ा-लाड़ी बड़े भारी खुश होए,
चलो जी छुटकारा मिल्या ।





HIMARI GANGA

देख्या क्या ड्रामा करना पया, लाड़ा बोलो
"तू भी बड़ी भारी ड्रामे बाज हई"
हाँऊ ता तिज्जो झूठा-मूठा ही मारणा लगी रा था पर तू ता एड़ी चिल्लायी जियां सच्चे मारी हूंगी।
"हाँऊ भी ता झूठा-मूठा री लगी री थी चिल्लाणा,
मिंजो नी लगी, लाड़ी बोली"
इतने मंझ से परौणा भी कुथकी बखा ते निकली आया कने बोल्या,
"हाँऊ भी ता झूठा-मूठा रा था गईरा,
एह था हाँऊ पछोड़े पिछे लुखिरा।"

सुनीता देवी
बी.ए. दूजा समैस्टर
रोल न0 17095



संत देवी दास जी

1972-73 मंझ आसारे पाधरा एक संत आए होर एकान्त स्थान समझी कने रहदे लगे, इन्हा रा नांव है संत देवी दास जी। जेस टेमें यों एथी आए तेस टैम पाधर एक विरान क्षेत्र होर जंगल था यों संत होरी एथी रहन्दे लगे कने एथी एक शिव मन्दिर बणवाया। धीरे-धीरे लोग एस संता होर मन्दरा आन्दे लगे। आज पाधर एक शहर बणी गया। ए संत केसी ते कुछ नी मांगदे, यो शिव पूजा कने भजन करणे मंझ मगन रहाहें। पहले पहले ते संत देवी दास जी ढब्बे कने हाथ नी लान्दे थे पर भक्त लोग इन्हा जो बोल्दे रहां थे कि ढब्बे कने हुणे सब काम फेरी तिन्हे ढब्बे कने भेंटा जो हाथ लगाणा शुरु कीता। एस मन्दरा मंझ एबे भण्डारे लगदे रहा हैं। शिवरात्री रे दूजे ध्याड़े हर साल मन्दरा मंझ बहुत बडा भण्डारा हुवां। शिव मन्दर होर सारा परिसर बहुत ही सुन्दर कने शान्ति प्रदान करां। मन्दरा साऊगी बड़े पेड़-पौधे फूल इत्यादि हये। एथी आम्बा रे पेड़ा बिच भारी मीठे आम लगाहें। गर्मियां अन्दर वट वृक्षा री छाया त बहुत ही मजेदार हुवां ही। संत देवी दासा रे दर्शन करने दूरा-दूरा ते लोग आवां हैं मन्दरा अन्दर जेहड़ा की चढ़ावा चढ़ा, इन्हा ढब्बे रा इस्तेमाल समाज सुधारा मंझ लगाई देहां। गरीब बच्चे जो पढ़ाई रा खर्चा, मठीयां रे ब्याह जो सहायता, कोटरोपी हादसे बिच भी कई लोकां री सहायता कीती। हिमरी गंगा रा उथान भी संत देवी दास होरीए कीता। हिमरी गंगा रे मूल स्थाना मंझ इन्हें मन्दर कने कुटिया बणाई, लोकां जो न्हाणे री जगह ठीक बणाई। फेरी हर साल एथी एबे मेला लगां। संत देवी दास जी री सही उम्रा रा पता नी चलदा, 1972-73 मंझ जेबे यों पाधरा आए आज भी तितनी ही उम्रा रे लगाहें। बुजुर्ग लोक बोल्हायें कि आसे ये संत इतना ही देखीरा। एहड़ा अन्दाजा लगाहे कि यों सौ साला ते ज्यादा बडे उम्रा रे है, हाँऊ एस संता जो आपणा आदर्श मना कि मुंजो भी समाज सुधारने रे कठे लोकां री सेवा करणी। दोस्तो एहड़े त्यागी कने सेवक साधु संता रा सम्मान करना चाहिए। यो समाजा जो हमेशा देयां ही देयां हे कुछ भी आपुजो लेंदे नी। हरेक आदमी आपणे खातर त जीहांहे पर जेहड़ा दूजे रे खातर आपणा त्याग कने सेवा करां से ही इतिहासा बिच याद रहां, नहीं त लोक जमेयां कराहें कने मरेया कराहें। सिलसीला चलदा रहणा पर कुछ खरा करी कने जाओ त जीन्दगी सफल हुई जाणी। संत देवी दास जी ये ही प्रेरणा आसो देहां।

कुशाल चन्द
बी.ए. छठा समैस्टर
रोल न0 152371



नशा नी करणा

गलगली कितीरी आखीयां,
 गठियां सांयी बघाई रे बाल,
 हरकेथी-परेथी घुमदे रहांए मठे,
 नशे री बजह ते हुइरा इन्हा रा बुरा हाल ।
 न खाणे री होश, न गलाणे रा पता,
 किर्यां होणा इन्हा फौजा अन्दर भर्ती,
 तुस्से जरा एहड़ा ता दस्सा ।
 बीडी, सिगरेट, गुटखा कने शराब,
 इन्हा पीछे मठे करी दीतिरी जिन्दगी बरबाद,
 मठे आपणी पढ़ाई कने लक्ष्य भूली जाएं,
 सारा परिवार होर समाज हुई जहां खराब ।
 नशा हा बड़ी बेकार चीज,
 इधी कने नी हुंदा केसी रा भी खरा,
 कितने घर उजड़ी गए एता री बजह ते,
 एहड़ा भी ता सोचा जरा ।
 नशा एक एहड़ी दल दल ही,
 जिधी बिच आदमी धीरे-धीरे पूरा फसी जां,
 पर कोई बड़ी मुश्किल गल्ल नी एतो छाडणा,
 जे छाडी दो ता बची जां,
 बिगड़ी री हालत सुधरी जां ।

कपिल
 बी.एस.सी. दूजा समैस्टर
 रोल नं 17208

जिन्दगी

जिन्दगी एक पहेली कदी हंसादी कदी रूलांदी कदी
 सुख-देन्दी कदी दुख देन्दी ।
 जिन्दगिया मंझे हर इन्सान कोसी न कोसी चीजा पिछे
 भगदा । कोई पैसे पिछे कोई प्यारा पिछे । गरीब आदमी बोलदा
 पैसा नी तो कुछ भी नी । आसा जो जीणे रे ताई दो वक्ता री
 रोटी चाहिए कने तन छुपाणे रे ताई कपड़े सौगी सर छुपाणे रे
 ताई छत कने प्यारा री जरूरत हुन्दी । जिन्दगी मंझ
 कदी-कदी एढ़े -2 मोड़ आएँ की आसे समझी नी पान्दे की
 अब क्या करना । कदी-कदी आपणे ही पीड़ देई जान्दे ।
 दोस्तो अगर तुसे फूल नी बणी सकदे ता तीना री मुस्कुराहट
 भी मत छिन्नदे । कोसी रे सपणे पुरा नी करी सकदे ता तीना
 जो सपणे भी मत दसदे । कोसी री सुख नी देई सकदे ता
 दुःख भी मत देंगे । क्या पता तुसारा एक बुरा मजाक तीना री
 जिन्दगीया रा मजाक बनाई देओ ।

□ आशा कुमारी
 बी.ए. चौथा समैस्टर
 रोल नं 160009



सोचा रा महत्व

आसारे मस्तिष्का च आसारे जीवना रे लगभग हर पहलु रा निर्माण करने री शक्ति हुआई । आसे आपणे चारों
 ओर आदमी री बणाई री जो भी चीज देखाएं, स्यों केसी आदमी रे दिमागा च एक विचार रूपा मंझ आइरी थी । तेताते
 बाद ही स्यों संसारा मंझ सच्च हुई । आदमी री बनाईरी हर चीज केसी विचार, इच्छा, आशा या सपने रे रूपा ते शुरु
 हुआई । आसारे विचार रचनात्मक हुआएं ।

सभी धर्म, दर्शन, मनो विज्ञान कने सफलता रा महान सार ये हया कि आसे जेस बारे च ज्यादातर वक्त सोचाएं,
 वही बणी जाएं । आसारा बाहरी जगत आसारे आंतरिक जगता रा प्रतिबिम्ब बणी जांहा । आसे जेस बारे च भी सोचाएं, से
 जगातार असारी जिंदगी च प्रकट हुंदा रहा । अगर सफल लोका जो पूछो कि तुसे ज्यादातर समय केस चीजारे बारे च
 सोचाएं? ता तिन्हारा सभी ते आम जबाब ये हुआंकि स्यों ज्यादातर वक्त आपणी मनचाही चीज कने तेसो पाणे रे बारे च
 सोचदे रहांए । सफल लोक आपणे विचारों कने गल्ला जो आपणे प्रबल इच्छित लक्ष्य च केन्द्रित रखाएं ।
 असफल कने दुःखी लोक ज्यादातर वक्त अनचाही चीजां रे बारे च सोचदे कने गलादें रहांए । स्यों आपणी समस्या कने
 चिंता रे बारे च बातचीत कराएं कने ज्यादातर समय दूजे रे दोष देखदे रहांए । सफलता रे कठे सकारात्मक सोचा रा
 हुणा बड़ा जरूरी हया । नकारात्मक सोचा वाला आदमी कधी सफल नी हुई सकदा । नकारात्मक सोच सफलता कने
 धुशी री सभी ते बड़ी शत्रु ही ।

बनिता देवी
 बी.ए. छठा समैस्टर, रोल नं 15006



HIMARI GANGA

तनाव ते मुक्ति

- ◆ आजकाला जो भी देखणा तनाव मंझ दिखाई देयां। एस तनाव ते मुक्ति किंहा मिलणी। 20वीं सदियो जो ता मानसिक तनाव री सदी भी मनायें, पर 21वीं सदी मंझ भी तनाव कम हुणे रे कोई भी आसार नजरी नी आया करदे। 21वीं सदियो तनाव होर बढ़दा लगीरा। एस कठे हर व्यक्ति तनाव रा सामना करने होर कम करने री विधि जो जीवना मंझ अपनाणा पऊणा। तनाव ते मुक्ति पाणे कठे एस गल्ला जो स्वीकार करना पऊणा कि तनाव परिस्थितियों ते पैदा नी हुंदे बल्कि एतारा कारण आदमीरी गलत विचारधारा कने गलत दृष्टिकोण हुँए। एस सनातन सत्य जो कुछ उदाहरणा के स्पष्ट करना उचित हुणा।

- ◆ तुसारे घरा मेहमान आई गये। तुसारी लाड़ी तिन्हा कठे चाह-पाणी बनाई के लई आई, केसी कारणा ते चाह पई जाई। एड़ी परिस्थितियें तुस्सारी क्या प्रतिक्रिया हुणी? प्रमाणिकता ते सोचा कि चार आदमिया री अलग-2 प्रतिक्रिया हुई सकाई।

एक -तू रोज एड़ी गलतियां करदी रहाई। मैं ता तेरे के ब्याह करी के बड़ी भारी समस्या लई दीति री।

दूसरा- जो हुआ से हुआ आगे कठे ध्यान रखेया।

तीसरा-जो चाह बचारी तेसो पिणेरा आसे आनंद लई लहाएं, बादो फर्श साफ करी लेंगे।

चौथा- तू फर्शा जो साफ कर मैं चाह बनाई के लई आऊँ।

इन्हां चार भिन्न प्रतिक्रिया रा आधार आदमी रा आपणी लाड़ी रे प्रति दृष्टिकोण हुँआ।

- ◆ दो महिला हार्ट अटैक आणे रे कारण हॉस्पिटला मंझ भर्ती थी। दुहीं महिला जो एक जेड़ा तनाव पैदा करने वाली परिस्थिति रा सामना करना पईरा था। दुहीं महिलाओं जो खबर मिली की तिन्हारे लाड़े तलाका कठे कोर्टा मंझ केस करी दीतीरा। एक महिला जेड़ी ये खबर मिलाई, तेसो दोबारा हार्ट अटैक आई जां और से मरी जांही। दूजी महिला जो खुशी हुई कि एबे तनावपूर्ण विवाहित जीवना ते मुक्ति मिली जाणी। ये उदाहरण भी स्पष्ट करां कि परिस्थिति तनावपूर्ण नी हुंदी बल्कि परिस्थितियां कठे आसारा दृष्टिकोण ही तनाव या खुशी रा निर्माण कराएं।

एक महिला आपणे लाड़े रे जन्म दिना रे मौके पर दो टाईयां उपहारा रे रूपा मंझ दीती, थोड़े दिना बाद एक पार्टी मंझ जादें टाईमा महिला रा लाड़ा एक टाई पहना ता तेसा महिला जो टेंशन हुई जाहीं कि क्या तेसारे लाड़े जो दूजी टाई पसंद नी आई? ये गलत विचारधारा रा परिणाम हया। तेसारे लाड़ेयो दूहें पसंद आईरी हुणी ता फिर भी दुहें टाईयां एक साउगी तानी पहनी सकदा। एता रे कठे तनाव ते मुक्ति पाणे कठे आसा विचारधारा मंझ परिवर्तन लयाऊँणा पऊणा।

एसा गल्ला जो एक होर गल्लां ते भी सिद्ध करी सकायें। गणिता रे सिद्धात सही इन्हां दो गलों जोड़ी कने देआ। पहला-व्यक्ति रे सारे अनुभवा रा मूल आधार तेस व्यक्ति रा विचार है। सुख-दुःख, उत्साह-निराशा, शान्ति-अशान्ति सही अनुभवा रा आधार आसा रे विचार हुआएँ।

दूसरा- व्यक्ति आपणे विचारा जो जेस भी दिशा मंझ मोड़ना चाहे मोड़ी सकाएं। चाहे से दिशा उत्साही हो या निराशा री शान्ति री हो अशान्ति री।

ऊपर दितिरी दोनों गल्लाओं जोड़ी के क्या निष्कर्ष निकलना? थोड़ी देरा कठे आगे नी पढ़णा, एस प्रश्ना रा उत्तर दूढा।

निष्कर्ष ये निकलना- व्यक्ति आपणे अनुभवा जो जेस दिशा मंझ मोड़ना चांहा से मोड़ी सकां या आपणे अनुभव आसा रे आपणे वशा मंझ हुआए या आपणे अनुभवा कठे आसे खुद जिम्मेवार है। तनावारे बारे यो गहरा अनुसंधान करने वाले डॉ. हेन्स सेल जी रा मनना भी हया कि तनाव जो काम करने कठे दवाईया होर अन्ये विधियां जो अपनाणे रे बदले दृष्टिकोण मंझ बदलाव करना ये सर्वोत्तम विधि हई।

केलिफोर्निया रे मनोचिकित्सक डॉ0 डेविड फिन्का रा भी मानना था कि जेस तरह एक मोटर चलाणे वाला मोटरा रा नियंत्रण करां तेड़े ही व्यक्ति रा दृष्टिकोण तिन्हारे मना जो नियंत्रण करां।

स्वामी विवेकानन्द भी दृष्टिकोणा रे परिवर्तना जो महत्त्व दर्शाई रा। डॉ0 दीपक चोपरा एस पहलू जो बड़ा भारी महत्त्व देहाए। तिन्हें एस संदर्भ मंझ जो लोका दुनिया जो बदलना चाहें तिन्हों आपणा दृष्टिकोण बदलने री सलाह दीति री।

शकुन्तला देवी
बी.ए. छठा समैस्टर

**CHIEF GUEST WITH FACULTY MEMBERS
ANNUAL FUNCTION-2017**



**CHIEF GUEST WITH FACULTY MEMBERS
MUSICAL CONCERT 2017**



